

रेल रश्मि

अंक : 68, जून 2015



पूर्वोत्तर रेलवे राजभाषा विभाग की त्रैमासिक पत्रिका



30.06.15 को सादात रेलवे स्टेशन से मऊ जं.-सादात-इलाहाबाद सिटी डेमू ट्रेन को हरी झंडी दिखाकर रवाना करते माननीय रेल राज्य मंत्री श्री मनोज सिन्हा



29.06.15 को रेल सुरक्षा विशेष बल, रजहरी कैंप में आयोजित दीक्षांत परेड की सलामी ग्रहण करते माननीय रेल राज्य मंत्री श्री मनोज सिन्हा



26.06.15 को पूर्वोत्तर रेलवे के लखनऊ व वाराणसी मंडलों के सेवित क्षेत्रों के सांसदों के साथ बैठक में चर्चा करते महाप्रबंधक श्री राजीव मिश्र व अन्य अधिकारीगण



26.06.15 को पूर्वोत्तर रेलवे के लखनऊ व वाराणसी मंडलों के सेवित क्षेत्रों के सांसदों की बैठक में चर्चा करते माननीय सांसद योगी आदित्यनाथ जी



09.06.15 को राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर श्री ओ. पी. अग्रवाल, मुख्य राजभाषा अधिकारी से इन्जतनगर मंडल के लिए राजभाषा टाफी प्राप्त करते श्री राजेंद्र कुमार, राधि



09.06.15 को राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर श्री ओ.पी. अग्रवाल, मुख्य राजभाषा अधिकारी से राजभाषा का पुरस्कार प्राप्त करती श्रीमती संगीता रंजन, वरिष्ठ लिपिक/सिगनल



मुख्य संपादक की कलम से....

हिंदी का रचनात्मक कैनवस लगातार विस्तृत होता जा रहा है जिसमें निरंतर हजारों कृतियाँ सृजित हो रही हैं। कृतियाँ वहीं सार्थक हैं जो शब्दों की गरिमा को फूल की तरह खिलाती हों। आत्मानुभूति की वह सृजन जिनके शब्दचित्र महए के फूल की तरह महकते प्रतीत होते हों। हर रचनाकार की सर्वोपरि उत्कट अभिलाषा होती है कि उनकी लिखी रचनाएँ अधिक से अधिक पाठकों तक पहुँचे। इससे भी अधिक कि पाठक उन रचनाओं को अपने मन में जगह दे। अपनी स्मृति का एक कोना उसके लिए सुरक्षित-सुनिश्चित कर दें। आज रचनाकार को भी चाहिए कि वह आम आदमी की रोजमर्रा की समस्याओं से न केवल जुड़े, अपितु गहराई से जुड़े। सिंथेटिक रूप से नहीं, बल्कि क्रिएटिव रूप से जुड़ाव हो।

साहित्य मन के संवेदनों को जोड़ देता है। साहित्य पढ़ने से अनुभव का संसार बढ़ता है, बदलता है। रचनाकार को हमेशा आत्ममंथन करना चाहिए। भाषा की संरचना पर भी ध्यान देना चाहिए। संवेदनाओं को अपने भीतर समेटना चाहिए। विचारधारा का शोर मचाने से कुछ भी नहीं होता है। जब तक बौद्धिक एवं भावात्मक शक्ति रचना में इन्वॉल्व नहीं होगी तब तक पाठकों का जुड़ाव उससे नहीं हो सकता है। रचना कभी भी सिर्फ शब्दों या रंगों के संपर्क में आकर नहीं निखरती है। वह रचनाधर्मी के जीवन मूल्यों और उसकी चिंताओं में बसती है। जीवन के भावुक, संवेदनशील और मर्मस्पर्शी क्षणों का सहज अनुभव करके वह विनम्र होती जाती है।

‘रेल रश्मि’ की रचनाएँ भी मानवीय रिश्तों, भाषा-संस्कृति, बोध, संवेदनाओं और सरोकारों के रूप में पाठकों के दिल में निश्चित रूप से धड़केंगी, उन्हें एक मंतव्य से जोड़ते हुए अपनी उत्कृष्टता अवश्य प्रदान करेंगी। ऐसी ही आशा और अभिलाषाओं के साथ आपके बहुमूल्य सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी।

(ओ. पी. अग्रवाल)

मुख्य राजभाषा अधिकारी

रेल रश्मि

त्रैमासिक पत्रिका

अंक : 68

जून 2015

संरक्षक:

राजीव मिश्र

महाप्रबंधक



मुख्य संपादक:

ओ. पी. अग्रवाल

मुख्य राजभाषा अधिकारी



उप मुख्य संपादक:

अखिलेश कुमार सिंह

उप मुख्य राजभाषा अधिकारी



संपादक:

बी. दुर्गाद्वय

वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी



सह संपादक:

ध्रुव कुमार श्रीवास्तव

राजभाषा अधिकारी



उप संपादक व संपन्न संपादन:

सुनील कुमार

वरिष्ठ अनुवादक



पता :

राजभाषा विभाग

मुख्य कार्यालय पश्चिम

पूर्वोत्तर रेलवे, पोरबंदर-273012

दूरभाष- 62852 एवं 62854 (रेलवे)

0551-2203396

फ़ोन- senicro9@gmail.com

मुखपृष्ठ : पोरबंदर का प्रसिद्ध
देराकोटा कला

इस अंक में

विषय	रचनाकार	पृष्ठ सं.
आपने लिखा है		3
पर्यावरण अमृतलून एक गंधीर समस्या (पर्यावरण)	के. के. पाटव	5
डा. भीमराव अंबेडकर का मानववाद (लेख)	डा. राजेश हुजेला	7
भूकंप से क्षति, भय तथा प्रभाव (लेख)	संतोष कुमार पासवान	9
देखतः भावनात्मक उत्कृष्टता (लेख)	सुनील कुमार	11
माँ के दिल की आह (लेख)	ए. पी. कर्मका	14
भारतीय उपलब्धियाँ (विज्ञान प्रतिभा)	संजय वर्मा	15
मन की स्वच्छता (लेख)	हरमोहिंद लाल	18
जरा सोचिये (लेख)	नीलम प्रभा श्रीवास्तव	20
कबाड़ खीने वाली (कहानी)	चंद्रशेखर गुप्त	22
छोटी सी भूल (कहानी)	सुनील कुमार सिंह	24
जानवर भी करते हैं सेवा और	महेंद्र सिंह शेखावत 'उन्माही'	26
सहायता के कार्य (ज्ञान)		
वन गया काम (एकांकी)	सूर्या सुधांशु शेखर	27
नेपाल में आये भीषण भूकंप से पीड़ितों के सहायताार्थ	आलोक कुमार सिंह	30
पूर्वोत्तर रेलवे के अविस्मरणीय कदम (रिपोर्टेज)		
सौंदर्य बनिए मलाई खाइए (व्यंग्य)	शिवेंद्र कुमार मिश्र	32
उनका खौद और मेरा खौद (व्यंग्य)	रण विजय सिंह	34
कविता, गीत एवं गूज़ल		
आम से बचाव (कविता)	ई. मोहिंद प्रसाद शुक्ल 'धुनी'	36
कविताएँ	अनिल कुमार दत्ता	37
कविताएँ	पराधीर सिंह	38
कविताएँ	सुजाना कुमार शर्मा	39
कविताएँ	बाबू लाल शर्मा 'प्रेम'	40
कविताएँ	शशि किरण अर्ध	41
गूज़लें	ए. के. श्रीवास्तव	42
कविताएँ	चंद्रशेखर प्रसाद शर्मा	43
कविताएँ	दीनानाथ तिवारी	44
गातिकावियाँ		45

पूर्वोत्तर रेलवे राजभाषा विभाग से प्रकाशित त्रैमासिक हिंदी पत्रिका 'रेल रश्मि' को मुंबई की संस्था 'शैलजा नाथर फाउंडेशन' द्वारा आई.सी.ई. एवाई 2015 के अंतर्गत 'सर्टिफिकेट ऑफ मेरिट' से सम्मानित किया गया है।

विशुद्ध वितरण हेतु (पत्रिका के अंतर्गत प्रकाशित लेखों में व्यक्त किए गए विचार लेखकों के अपने हैं)

◆ आपने लिखा है ◆

पूर्वोत्तर रेलवे मुख्यालय की अनूठी निधि

व्यक्तित्व के निर्माण में पत्रिकाओं एवं पुस्तकों की भूमिका विशिष्ट होती है। इसी से पुस्तकें हमारी सबसे बेहतर मित्र मानी जाती हैं। पूर्वोत्तर रेलवे राजभाषा विभाग की त्रैमासिक पत्रिका 'रेल रश्मि' व्यक्तित्व निर्माण में सहायक होने के साथ ही भारतीय रेलों के उत्थान और विकास में सहायक पूर्वोत्तर रेलवे मुख्यालय की एक अनूठी निधि है, जिस पर गर्व किया जा सकता है।

मार्च अंक में प्रस्तुत परिसंवाद 'साहित्यकार और प्रतिबद्धता' (कृष्ण गोपाल श्रीवास्तव) में प्रकाशित साहित्यकारों की टिप्पणियाँ अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। कवि भवानी भाई की सोच- 'दिल को न तोड़िये कि खुदा का मुकाम है' दिल को छू गई।

रण विजय सिंह की व्यंग्य रचना 'मेरे अवतार बनने की संभावना' में उनकी पैनी नजर प्रशंसनीय है। दिनकर, स्वामी विवेकानंद और खुशवंत सिंह पर लेख ज्ञानवर्द्धक हैं। सुनील कुमार का लेख तथा श्याम बाबू शर्मा का यात्रा-वृत्त रोचक है। इसी अंक में डा. कृष्ण चंद्र लाल, ओमप्रकाश पांडेय, ए.के.दत्ता, अनामिका सिंह, दीनानाथ तिवारी, वफा गोरखपुरी एवं सुधीर चंदन ने लेखनी के साथ पूरी निष्ठा जताई है।

अखिलेश चंद

स्थानीय व्यवस्थापक 'आज' दैनिक

बैंक रोड, गोरखपुर-273001

संपर्क: 0551-2201876

परिवार का सार्थक मनोरंजन

पूर्वोत्तर रेलवे राजभाषा विभाग की त्रैमासिक पत्रिका 'रेल रश्मि' का 67वाँ अंक देखकर कहना होगा कि हाउस मैगजींस में 'रेल रश्मि' का स्थान अप्रतिम और बेहद महत्वपूर्ण एवं उच्चकोटि का है। इस अंक में प्रकाशित सभी लेख ज्ञानवर्द्धक और पूरे परिवार का सार्थक मनोरंजन करने में सफल हैं। स्वामी विवेकानंद, डा. जाकिर हुसैन, दिनकर एवं खुशवंत सिंह पर लेख नई जानकारी देने में सफल हैं। कृष्ण गोपाल श्रीवास्तव द्वारा प्रस्तुत 'साहित्यकार और प्रतिबद्धता' विचारोत्तेजक एवं शोधपरक है। 'भारत में रेलवे का विकास' (हीरा

लाल), 'मेरी वृद्धमनगंज यात्रा' (श्याम बाबू शर्मा), 'मेरे अवतार बनने की संभावना' (रण विजय सिंह), 'श्रद्धा का प्रकटीकरण आविष्टक' (सुनील कुमार) सम-सामयिक एवं रोचक हैं। मार्च अंक में वफा गोरखपुरी, डा. कृष्ण चंद्र लाल, ओमप्रकाश पांडेय, अनामिका सिंह, अनिल कुमार दत्ता, सुधीर चंदन की काव्य रचनाएँ पसंद आयीं।

जगदीश चंद्र श्रीवास्तव

प्रदेश सचिव

प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक जर्नलिस्ट एसोसिएशन

उत्तर प्रदेश, लखनऊ

संपर्क: 9696706842

एकांकी भी दें

'रेल रश्मि' पत्रिका उपयोगी जानकारीयों से भरपूर मनोरंजन पाठकों को देती है, किंतु यदा-कदा इसमें एकांकी नाटकों को देने से सामग्री में विविधता का समावेश होगा।

एक एकांकी 'बन गया काम' प्रेषित कर रही हूँ। आशा है इसे किसी अंक में स्थान अवश्य देंगे। मार्च अंक अभी पढ़ रही हूँ। अच्छा है। रण विजय सिंह का व्यंग्य और साहित्यकार और प्रतिबद्धता पढ़ा है। दोनों पसंद आए।

सूर्या शेखर

फोरमैन

328, सूर्यविहार कालोनी

गोरखपुर

संपर्क: 9451202409

उपयोगी एवं संग्रहणीय

'रेल रश्मि' का मार्च 2015 अंक 67 विलंब से प्राप्त हुआ, किंतु सामग्री पठनीय, रोचक एवं विशेष उपयोगी होने की वजह से अंक संग्रहणीय है। मार्च अंक में डा. राजेश हजेलाल का खुशवंत सिंह पर, के. के. यादव का स्वामी विवेकानंद पर, चंद्रभूषण ओझा का डा. जाकिर हुसैन पर लेख प्रेरक है। प्रतिबद्धता को लेकर पाँच स्वनामधन्य साहित्यकारों- भवानी प्रसाद मिश्र, जैनंद्र कुमार, लक्ष्मीनारायण लाल, परमानंद श्रीवास्तव और हरिष्ठांकर

परसाई के विचार महत्वपूर्ण और सारगर्भित हैं।

ष्ठायम बाबू शर्मा का यात्रा-वृत्तान्त, सुनील कुमार का 'श्रद्धा का प्रकटीकरण' विषयक लेख, हुस्न तबस्सुम निहाँ की कहानी 'रेल में रेगिस्तान' पठनीय और रोचक हैं। इसी अंक में आचार्य जी, कृष्ण चंद्र लाल, वफा गोरखपुरी, ए.के. दत्ता, अनामिका सिंह, दीनानाथ तिवारी की काव्य रचनाएँ ध्यान आकृष्ट करती हैं, किंतु रण विजय सिंह की व्यंग्य रचना 'मेरे अवतार बनने की संभावना' इस अंक की सर्वोत्तम रचना है। सधन्यवाद।

रामाश्रय यादव

अंतर्राष्ट्रीय पहलवान

सी.टी.टी.आई., गोरखपुर

संपर्क: 9532520569

अंक पसंद आया

'रेल रश्मि' का मार्च अंक मिला। पत्रिका उत्तरोत्तर प्रगति पथ पर अग्रसर देखकर हार्दिक प्रसन्नता एवं संतोष हुआ।

अंक 67 मार्च 2015 में मुख्य रूप से सभी लेख रोचक और पठनीय हैं किंतु 'अंतर्मन की सुंदरता' (वी.के.राय); 'साहित्यकार और प्रतिबद्धता' (कृष्ण गोपाल श्रीवास्तव); 'रेल में रेगिस्तान' (हुस्न तबस्सुम निहाँ); 'श्रद्धा का प्रकटीकरण आवश्यक' (सुनील कुमार); 'भारत में रेलवे का विकास' (हीरा लाल); 'साहित्य और मनोविज्ञान का संबंध' (हरिष्ठांकर सिन्हा) समेत रण विजय सिंह की व्यंग्य रचना 'मेरे अवतार बनने की संभावना' विशेष मनोरंजक और पठनीय हैं।

कविता खंड में डा. कृष्ण चंद्र लाल, ओमप्रकाश पांडेय, अनामिका सिंह, सुधीर चंदन की रचनाएँ सभी को बेहद पसंद आयीं।

सुरेंद्र जायसवाल

धर्मशाला रोड, गोरखपुर

संपर्क: 9839962734

मनोहारी, भावपूर्ण

'रेल रश्मि' पत्रिका का 67वाँ अंक प्राप्त हुआ। पत्रिका का कागज बेहतर, छपाई सुस्पष्ट एवं आकर्षक, आवरण मनोहारी एवं भावपूर्ण लगा। पाठकों के लिए

विशेष कॉलम 'आपने लिखा है' संपादक की विशेष सोच एवं महत्वपूर्ण स्तंभ हैं। वी.के.राय का लेख 'अंतर्मन की सुंदरता' बहुत अच्छा लगा। कृष्ण गोपाल श्रीवास्तव का परिसंवाद 'साहित्यकार और प्रतिबद्धता' बिल्कुल सटीक एवं यथार्थ के धरातल पर है। जहाँ कहानियों का टोटा कहा जा रहा है वहीं हुस्न तबस्सुम निहाँ की कहानी 'रेल में रेगिस्तान' कहानियों की सूची में संवर्द्धन कर रही हैं और वाकई कहानी के सारे सोपान निहित हैं इसमें।

कविताओं के पष्ठ खोलते ही ओमप्रकाश पांडेय आचार्य जी की दो कविताएँ 'छोड़ो शिकायत करना' एवं 'भारत माटी की परिपाटी' भावपूर्ण एवं मार्गदर्शक हैं। गज़लों की दुनिया में टी.एन.श्रीवास्तव 'वफा गोरखपुरी' की विशेष पहचान है। कुल मिलाकर 'रेल रश्मि' का साहित्य क्षेत्र में विशेष योगदान है।

चंदेष्टवर शर्मा 'परवाना'

विज्ञान अध्यापक

श्री दुर्गा जी मा. वि. महुआडीह

लौंगरापुर, कुशीनगर (उ.प्र.)

संपर्क: 9451686918

पारिवारिक मनोरंजन

सूचना क्रांति के वर्तमान दौर में पत्रिकाओं का क्या महत्व है, यह आपके पारिवारिक मनोरंजन से भरपूर पत्रिका 'रेल रश्मि' को देखकर ज्ञात हुआ। मार्च अंक में बी. आर. विप्लवी का लेख '....बेचत फिर कपूर', वी. के. राय का 'अंतर्मन की सुंदरता' एवं कृष्ण गोपाल श्रीवास्तव द्वारा प्रस्तुत 'साहित्यकार और प्रतिबद्धता' समेत खुशवांत सिंह, स्वामी विवेकानंद, डा. जाकिर हुसैन एवं दिनकर पर लेख सारगर्भित लगे। सुनील कुमार एवं श्रियाम बाबू शर्मा के लेख पठनीय हैं। रण विजय सिंह का व्यंग्य-बेधत एकल शरीर वाली अभिव्यंजना रखता है।

कविताओं में अनामिका सिंह, दीनानाथ तिवारी, सुधीर चंदन, वफा गोरखपुरी एवं ए.के.दत्ता की रचनाएँ मन को बरबस आकृष्ट कर लेती हैं।

ओमप्रकाश पांडेय आचार्य जी

प्रबंधक, आनंदलोक हास्पिटल

गोरखनाथ, गोरखपुर

संपर्क: 9335757473

रेल रश्मि

◆ पर्यावरण ◆
पर्यावरण असंतुलन एक गंभीर समस्या
के.के.यादव

मानव जाति विकासोन्मुख

प्राणी है। आदिम काल से ही अपने सुखी जीवन हेतु मनुष्य प्रयत्नशील रहा है। इसी क्रम में अनेकों प्रकार की विकासोन्मुख योजनाएँ शुरु हुईं। हमने विकास की अंधी दौड़ में अनेकों प्रकार की परियोजनाएँ लगाये इस क्रम में हमने प्रकृति का भी बहुत नुकसान किया। बड़े-बड़े कल-कारखाने लगाए गए। आवासीय जरूरतों को पूरा करने हेतु बड़े-बड़े टाउनशिप का निर्माण किया गया तथा ऊर्जा एवं सिंचाई की पूर्ति हेतु बड़े-बड़े जलाशय भी बनाए गए। लेकिन इनको बनाते समय हमने गंभीरतापूर्वक पर्यावरण को होने वाली क्षति के बारे में नहीं सोचा। इस क्रम में हमारी पृथ्वी का बहुत बड़ा क्षेत्र कटान एवं डूब के क्षेत्र में आ गया। लेकिन जितने भूभाग के वृक्षों का कटान हुआ इसके बदले हमने उस क्षेत्र के बराबर वृक्षों का रोपण नहीं किया। कल-कारखानों से निकलने वाले अपशिष्ट जल को नदी एवं नालों में बहाया जाने लगा। बहुत से शहरों में सीवर लाइन के द्वारा मानवजनित मल-मूत्र सीधे नदियों एवं झीलों में समापित किया जाने लगा। सड़क वाहनों द्वारा निकलने वाली हानिकारक गैसों वायुमंडल में घुलने लगी जिसके कारण हमारे वायुमंडल एवं जलमार्ग दूषित हो गए। मनुष्य के स्वस्थ जीवन हेतु शुद्ध जल, हवा की आवश्यकता होती है। वृक्षों के द्वारा ही वायुमंडल से अशुद्ध गैसों का अवशोषण कर शुद्ध गैस (आक्सीजन) का उत्सर्जन किया जाता है। जल मार्गों पर बड़े-बड़े जलाशयों के निर्माण के कारण नदियों में पानी की मात्रा कम हो गई जिससे जलमार्गों का स्वतः शोधन प्रक्रिया (सेल्फ क्लीनिंग प्रापर्टी) पर बहुत गंभीर असर पड़ा तथा कल-कारखानों द्वारा प्रवाहित औद्योगिक अपशिष्ट के कारण अनेक प्रकार के जहरीले रसायन जल मार्गों में जाने लगे। हमारे देश के बहुत बड़े भूभाग की सिंचाई इन्हीं जलमार्गों के जल से होता है जिससे हमारे किसानों द्वारा उत्पादित अनाज एवं सब्जियों में भी खतरनाक रसायन पहुँचने लगा। भूमिगत जल भी अशुद्ध होने के कारण वहाँ से हमारे थालियों में भी वह रसायन पहुँचने लगा। यह हमारे स्वास्थ्य के लिए खतरनाक हो गया तथा हम अनेक प्रकार की बीमारियों के चपेट में आ

गए। अतः हमारे जीवन को सुखी एवं संपन्न रखने के लिए विकासोन्मुख परियोजनाओं को लगाने से पहले प्रभावित होने वाले वन क्षेत्रों के बराबर वृक्षारोपण किया जाए तथा औद्योगिक सीवेज एवं घरेलू सीवेज का शोधन कर ही जलमार्गों में प्रवाहित किया जाए। जलमार्गों में प्लास्टिक से बने पदार्थों को प्रवाहित न किया जाए। महत्वपूर्ण नदियों जैसे गंगा आदि के किनारे स्थित औद्योगिक इकाइयों, शहरों से निकलने वाले जल की जाँच प्रदूषण नियंत्रण विभाग समय-समय पर गंभीरता से करे ताकि जल का शोधन नदी में प्रवाह से पूर्व मानक स्तर तक हो गया है। इससे नदियों को प्रदूषित होने से बचाया जा सकता है। हमें अपने आस-पास के वातावरण को हरा-भरा रखने हेतु रिक्त भूमि पर अपने परिवार के सदस्यों के जन्मदिन पर एक-एक वृक्ष लगाना चाहिए तथा उनकी रक्षा करनी चाहिए तभी शुद्ध वायु हमें प्राप्त हो सकती है। हमें यह जानकर खुशी होगी कि भारत सरकार द्वारा गंगा नदी को राष्ट्रीय नदी घोषित कर इसे प्रदूषण मुक्त करने का बीड़ा उठाया गया।

आज की मांग ग्रीन ऊर्जा

मनुष्य एक सुविधाभोगी प्राणी है। दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु विद्युत ऊर्जा का महत्वपूर्ण योगदान है। विद्युत ऊर्जा उत्पादन की अनेक विधियाँ हैं। हमारे देश में अधिकतम विद्युत ऊर्जा का उत्पादन थर्मल पावर प्लांटों, परमाणु भट्टियों एवं जेनरेटर सेट से होता है। ताप विद्युत गट्ट द्वारा विद्युत ऊर्जा में ईंधन के रूप में कोयला परमाणु ऊर्जा द्वारा उत्पादित ऊर्जा में यूरेनियम एवं जेनरेटर सेट द्वारा उत्पादित ऊर्जा में क्रमशः डीजल, पेट्रोल एवं केरोसिन ऑयल का उपयोग होता है। जिसके फलस्वरूप अत्यधिक मात्रा में जहरीली गैसों, सिंडर उत्पन्न होती हैं। परमाणु भट्टी से ऊर्जा उत्पादन के दौरान कैंसर होने का भय बना रहता है। परमाणु भट्टी में उत्पादन प्रक्रिया के दौरान काफी मात्रा में अवशेष बचता है जिनमें रेडियोधर्मिता के गुण के कारण इनका डिस्पोजल (समापन) बहुत ही गहरे समुद्र में लोहे के मोटे चादरों के बक्सों में रखकर करना पड़ता है। साथ ही साथ भूकंप आदि आने पर रेडियोधर्मी पदार्थों से जनजीवन को

नुकसान पहुँचने की प्रबल संभावना रहती है। जैसाकि विगत वर्षों में जापान में यह घटना घटित हो चुकी है। इन सभी समस्याओं का समाधान हमें अक्षय ऊर्जा के द्वारा मिल सकता है। अगर ऊर्जा का उत्पादन सोलर फोटोवोल्टिक सेल, पवन ऊर्जा, छोटे-छोटे जलाशयों के निर्माण द्वारा किया जाए तो बिना प्रदूषण को नुकसान पहुँचाये हमें अनंत काल तक अक्षय ऊर्जा प्राप्त हो सकती है।

अक्षय ऊर्जा स्थानीय मांग के अनुसार न्यूनतम पारेषण हानि पर उपलब्ध कराई जा सकती है। भारत एक कृषि प्रधान देश है। हमारे देश की केंद्रीय एवं राज्य सरकारें गाँवों में विद्युतीकरण कर रही है। उसमें से अधिकांश गाँवों का विद्युतीकरण भी हो चुका है। लेकिन विद्युत उत्पादन के अभाव में विद्युत की आपूर्ति कुछ घंटों तक ही हो पा रही है जिसके कारण कृषि कार्य हेतु डीजल-चालित मशीनों का उपयोग करना पड़ रहा है जिससे विदेशी मुद्रा के साथ ही साथ पर्यावरण को नुकसान हो रहा है। अगर हमारी केंद्रीय एवं राज्य सरकारें

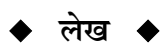
गाँवों में विद्युत की आपूर्ति सोलर ऊर्जा द्वारा उत्पादित विद्युत ऊर्जा से कर सके तो गाँवों में रहने वाले 70 प्रतिशत ग्रामीण आवादी को सुलभ ऊर्जा आसानी से प्राप्त हो सकती है जिससे हमारे देश में एक नये हरित युग की शुरुआत हो सकती है। भारतीय रेलवे ने भी हरित ऊर्जा के उत्पादन हेतु कमर कस लिया है, इसके क्रम में जगह-जगह सोलर ऊर्जा के उत्पादन हेतु प्लांट लगाये जा रहे हैं। अभी हाल ही में हमारे माननीय रेलमंत्री जी ने रेलवे बोर्ड में विद्युत आपूर्ति हेतु एक दस किलो वाट के सोलर ऊर्जा प्लांट का उद्घाटन किया है। वह दिन दूर नहीं जब हम अपनी विद्युत ऊर्जा का बड़ा भाग हरित ऊर्जा द्वारा प्राप्त करेंगे जिससे राष्ट्र को आर्थिक मजबूती प्रदान करने के साथ ही साथ एक प्रदूषण-मुक्त ऊर्जा प्राप्त करेंगे एवं वातावरण को ग्लोबल वार्मिंग के प्रभाव से भी मुक्त कर सकेंगे। ●

कार्यकारी इंजीनियर/बाढ़
पूर्वात्तर रेलवे, गोरखपुर
संपर्क: 9794840222

राजभाषा अधिनियम 1963 यथा संशोधित 1967 की धारा 4

राजभाषा के संबंध में समिति

1. जिस तारीख को धारा 3 प्रवृत्त होती है उससे दस वर्ष की समाप्ति के पष्ठचात् राजभाषा के संबंध में एक समिति, इस विषय का संकल्प संसद के किसी भी सदन में राष्ट्रपति की पूर्व मंजूरी से प्रस्तावित और दोनों सदनों द्वारा पारित किए जाने पर, गठित की जाएगी।
2. इस समिति में 30 सदस्य होंगे जिनमें से 20 सदस्य लोकसभा के होंगे तथा 10 राज्यसभा के होंगे, जो क्रमशः लोकसभा के सदस्यों तथा राज्यसभा के सदस्यों द्वारा आनुपातिक प्रतिनिधित्व पद्धति के अनुसार एकल संक्रमणीय मत द्वारा निर्वाचित होंगे।
3. इस समिति का कर्तव्य होगा कि वह संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिए हिंदी के प्रयोग में की गयी प्रगति का पुनर्विलोकन करे और उस पर सिफारिशें करते हुए राष्ट्रपति को प्रतिवेदन करे और राष्ट्रपति उस प्रतिवेदन को संसद के हर सदन के समक्ष रखवाएँगे और सभी राज्य सरकारों को भिजवाएँगे।
4. राष्ट्रपति उप धारा (1) में निर्दिष्ट प्रतिवेदन पर और उस पर राज्य सरकारों ने यदि कोई मत अभिव्यक्त किए हों तो उन पर विचार करने के पष्ठचात् उस समस्त प्रतिवेदन के या उसके किसी भाग के अनुसार निदेश निकाल सकेंगे।



डा. भीमराव अंबेडकर का मानववाद

डा. राजेष्ठा हजेला

मानववादी विचारधारा

अत्यंत प्राचीन है; परंतु इसमें देष्ट विभाजन, काल वर्गीकरण और विचारधाराओं को लेकर आधुनिक काल में ही इसकी विभिन्न परिभाषाएँ गढ़ी गयीं। आज के विद्वान इस विचारधारा को पाँचवीं शताब्दी ईसा पूर्व का भले ही मानें किंतु वेदों एवं एतद् संबंधी अन्य शास्त्रों में यह कहीं न कहीं बीज रूप में विद्यमान है। डा. भीमराव अंबेडकर जिस मानववाद की बात कहते हैं उस चिंतन का बहुलांश अनादिकाल से ही भारत के चरित्र में पाया जाता है। पं. दीनदयाल उपाध्याय ने इसे एकात्म मानववाद की संज्ञा दी है। यदि हम स्वस्थ मन से विचार करें तो मानववाद उनका स्वयं का महत्वपूर्ण चिंतन है और यह वास्तव में महात्मा गौतम बुद्ध के चिंतन से प्रभावित प्रतीत होता है।

यही नहीं उनके चिंतन का आधार भारतीय सभ्यता और संस्कृति है तभी तो कोई भी चिंतन तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था तथा सामाजिक सदस्यों की व्यथा-कथा पर आधारित होकर सार्वभौमिक रूप ग्रहण करता है क्योंकि विष्टव के सभी मनुष्यों की मूल इच्छाएँ समान होती हैं। इसी आधार पर विष्टव के अनेक चिंतकों ने मानववाद पर अपने-अपने ढंग से विचार किया और उन वैचारिक अवधारणाओं को जनमानस के समक्ष प्रस्तुत किया; परंतु इनमें से बहुत कम चिंतक ऐसे थे जिनकी विचारधाराओं को व्यावहारिक रूप देने का प्रयास किया गया। डा. भीमराव अंबेडकर ऐसे मौलिक चिंतकों में से एक हैं जिन्होंने अपने मानववादी चिंतन को व्यावहारिक रूप देने का सफल प्रयास किया, जिसका स्वरूप भारतीय संविधान में निहित है। बोलने का अधिकार, आचरण की स्वतंत्रता तथा अभिव्यक्ति को स्वतंत्रता आदि संवैधानिक अधिकार डा. भीमराव अंबेडकर की मानववादी सोच के फल के रूप में हमारे सामने प्रस्तुत है।

यदि हम गहन दृष्टि से चिंतन करें तो पाएँगे कि उनका यह मानववाद उनकी अपनी ही अनुभूतियों की देन है। समाज के अकिंचन वर्ग के एक सदस्य के रूप में उन्होंने जो कुछ भोगा; कब, कहाँ, कैसे शोषण और उत्पीड़न के शिकार हुए; इन सबसे जो प्रत्यक्ष उभर कर

आया वह था उनका मानववादी चिंतन। पहले स्वयं को लेकर सब कुछ अनुभव किया फिर उस अनुभव को विष्टव-स्तर पर लागू करके देखा तब उन्होंने पाया कि रूप भले ही अलग-अलग हों; परंतु विष्टव के सभी मनुष्यों की मूलभूत समस्याएँ एक जैसी ही हैं।

डा. भीमराव अंबेडकर का मानववाद गौतम बुद्ध से प्रभावित होते हुए भी एक मौलिक चिंतन कहा जा सकता है क्योंकि मानववादी चिंतक मनुष्य को एक केंद्र-विंदु मानकर उसकी संपूर्ण समस्याओं पर गहनता से विचार करता है जैसे मानव के विकास के लिए सभी आवश्यक उपादानों की संपूर्ति, उसको स्वतंत्रतापूर्वक अध्ययन तथा कार्यों में संलग्न होने का समय तथा किस प्रकार के आचरण करके वह समाज के एक उपयोगी सदस्य के रूप में अपने विकास के साथ-साथ अन्य सदस्यों के विकास की राह को सुनिश्चित करे, यह सारे के सारे पहलू उनके मानववादी चिंतन में निहित हैं। डा. भीमराव अंबेडकर के संपूर्ण मानववाद का सम्यक अध्ययन करने से यह तथ्य भलीप्रकार स्पष्ट हो जाता है कि उनका यह चिंतन कोरी कल्पना नहीं है बल्कि इसमें मानव को स्वतंत्रता, समानता और निर्भीकता के साथ जीवन जीने की कला कूट-कूट कर भरी है जो इसके व्यावहारिक रूप को प्रत्यक्ष उजागर करती है।

इस मानववादी चिंतन में जहाँ एक ओर दया, ममता, करुणा और सौहार्द को स्थान मिला है वहीं अनुशासित जीवन जीना, अपनी स्वतंत्रता के साथ दूसरों की स्वतंत्रता का भी ध्यान रखना तथा सर्वजन हिताय और सर्वजन सुखाय की परिकल्पना का व्यवहार-योग्य स्वरूप उनके इस चिंतन में देखा जा सकता है। मानववादी चिंतन की विविध धाराएँ हैं। डा. भीमराव अंबेडकर ने जो मानववादी चिंतन किया है उसके आधार पर उनके चिंतन को वर्गीकृत करना एक महत्वपूर्ण कार्य है। डा. अंबेडकर के मानववाद के प्रमुख तीन आधार-

1. स्वतंत्रता 2. समता 3. भ्रातृत्व हैं। मानव समाज की दृढ़ता एवं एकता के लिए ये मूल्य आवश्यक हैं। उनके चिंतन का महत्व प्रत्येक व्यक्ति के लिए है मुख्यतः उन लोगों के लिए जो सदियों से कुचले गए हों और जिनका

श्लोषण होता रहा हो। अधिकांशतः यह भी देख गया है कि बहुत से लोग स्वतंत्रता, समता तथा भ्रातृत्व के नाम पर अशिक्षित एवं निर्धन जनता को पथभ्रष्ट करते हैं। डा. भीमराव अंबेडकर ने इन मूल्यों को वास्तविक रूप में समझा और उनके आधार पर मानव सेवा की। उन्होंने कभी अपना व्यक्तिगत लाभ नहीं उठाया, अपने जीवन को इन मूल्यों के अनुसार ढालने का प्रयास किया तथा इन मूल्यों को भारत के संविधान में समाहित कराया।

डा. अंबेडकर के मानववाद का सम्यक अध्ययन करने पर जो बातें उभर कर सामने आती हैं उनसे यह भलीप्रकार स्पष्ट हो जाता है कि यह चिंतन कल्पना के धरातल पर स्थापित नहीं है। इसके पीछे दलितों, दीन-हीनों तथा असहायों की सेवा जैसी पुष्ट भावनाएँ हैं। वास्तविकता तो यह है कि डा. अंबेडकर ने समाज में जो कुछ देखा, सुना और परखा उन सबसे निष्कर्ष निकाल कर इस मानववादी चिंतन को नये आयाम दिए। उन्होंने दलितों दीन-हीनों के साथ रहकर जो कुछ सीखा और पढ़ा उसे अपने चिंतन में गढ़कर एक सुदृढ़ भित्ति प्रदान की।

डा. अंबेडकर के युग में भारत परतंत्रता की जंजीरों में जकड़ा हुआ था। ऐसे में उन्होंने भारत के लोगों की समस्याओं को विष्ट्व मानवता की समस्याओं के साथ जोड़कर उन्हें विस्तृत दृष्टिकोण प्रदान किया और अपने इस मानववादी चिंतन के आधार पर उनके समाधान के लिए सक्रिय प्रयास किए। आज हमारे देश में जो राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग गठित है यह डा. अंबेडकर की ही तपस्या का फल कहा जाना चाहिए।

इस विषय में दो राय नहीं कि यह चिंतन सार्वभौम और बहुआयामी है, जिसमें विष्ट्व की सनातन समस्याओं का समाधान खोजते हुए जनमानस को सही दिशा देना तथा उसे दीनता, दासता और लाचारी की कैद से आजाद कराना ही मंतव्य है। इस चिंतन में जातिवादी जटिलता नहीं है, न किसी एक वर्ण की तानाशाही है अपितु सभी मनुष्यों को एक मानकर उनको अपने लिए और राष्ट्र के हित के लिए तैयार करना है। जहाँ तक मानवीय संवेदनाओं का प्रश्न है इस चिंतन में इस पर

विश्लेष ध्यान दिया गया है। इसके अनुसार सभी मानव भाई-भाई हैं, उनमें कहीं किसी प्रकार का भेद-भाव अथवा दुराग्रह नहीं है। मानव को किसप्रकार चेतन होकर अपने कार्य में संलग्न होना चाहिए यह इस चिंतन की सबसे महत्वपूर्ण नैतिक शिक्षा है। महात्मा गाँधी का चिंतन भले ही स्वप्नलोक की सैर कहा जाए लेकिन मानववाद नामक यह चिंतन आदर्श होते हुए भी पूर्णतः व्यवहार में लाने योग्य है। समाज में इस चिंतन की कोई भी बात अथवा सिद्धांत कभी भी सरलता के साथ लागू किया जा सकता है और उसका अपेक्षित परिणाम हमारे सामने आ सकता है। इतना ही विष्ट्व के अनेक चिंतकों के समक्ष भी यह चिंतन अपने में कहीं से शिथिल नहीं है। इसमें मानव शारीरिक और मानसिक रूप से शक्ति संपन्न होकर अपने अन्य असमर्थ भाइयों की सहायता करने में सक्षम होता है जैसाकि डा. अंबेडकर ने अपने जीवन में दीन-हीनों के साथ कर दिखाया। यह चिंतन वास्तव में एक ऐसा चिंतन है जो विष्ट्व मानवता के लिए अमम-तुल्य है।

आज के इस वैज्ञानिक युग में भी मानव की समस्याएँ ज्यों-की-त्यों हैं। प्रायः सर्वत्र संवैधानिक प्रावधान होते हुए भी समूचे विष्ट्व का मानव आज भी श्लोषण, उत्पीड़न और दोहन का शिकार है। जाति, वर्ण और वर्ग का भेदभाव हर जगह हावी है। ऐसे में मानववाद एक ऐसा चिंतन है जो जनमानस को इन सभी समस्याओं से मुक्ति दिला सकता है। आज 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' का सिद्धांत चल रहा है, मानववाद के लिए यह सबसे बड़ी चुनौती है और यह भी ध्रुव सत्य है कि इस चुनौती को स्वीकार करने की क्षमता केवल डा. भीमराव अंबेडकर के मानववादी चिंतन के द्वारा संभव है। ●

सदस्य, डी.आर.यू.सी.सी./पूर्वोत्तर रेलवे
4/105, नवाब न्यामत खाँ पश्चिम
फर्रुखाबाद-209625 (उ. प्र.)
संपर्क: 9450205346

दो या दो से अधिक पदों के मेल अथवा योग से बने पद को समास कहते हैं।
जैसे- महापुरुष (महान है जो पुरुष), नवयुवक (नवीन है जो युवक), प्रतिदिन (प्रत्येक दिन),
सुख-दुख (सुख और दुख), रात-दिन (रात और दिन), चतुरानन (चार आनन हैं जिसके)।

भूकंप से क्षति, भय तथा प्रभाव

संतोष कुमार पासवान

भूकंप एक प्राकृतिक आपदा

है। आपदा का अर्थ है विपत्ति या संकट जिसमें जनसमुदाय, पशुधन, संपत्ति की हानि होती है तथा लोगों के अंदर भय पैदा हो जाता है। इससे बहुसंख्यक आम-जनमानस प्रभावित होता है। विषय के कई महाद्वीप तथा देश इसप्रकार के किसी न किसी आपदा से ग्रसित हैं। उनमें से एशियाई देश भी शामिल है। हाल ही के दिनों में भूकंप के कई झटके लगातार कई दिनों तक आते रहे। नेपाल तो सबसे अधिक प्रभावित हुआ जहाँ लगातार कई दिनों तक झटके आते रहे जिसके कारण हजारों की संख्या में लोग मारे और घायल हुए। हजारों लोग बेघर तथा लाखों लोग प्रभावित हुए। इस भूकंप की आपदा में व्यापक स्तर पर जनसमुदाय, पशुधन, परिसंपत्तियों की भारी क्षति हुई। भूकंप का प्रभाव हिमालय के आस-पास पड़ोसी देशों में था जिसमें नेपाल, भारत, भूटान, चीन, बांग्लादेश में भूकंप के झटके महसूस किए गए उसमें पाकिस्तान भी अछूता न रहा। भूकंप का केंद्र बिंदु भी नेपाल में ही था।

आपदा दो प्रकार की होती है-

क- प्राकृतिक आपदा- भूकंप, बाढ़, सूखा, बादल का फटना, चक्रवाती तूफान, सुनामी आदि।

ख- कृत्रिम आपदा- आग, सांप्रदायिक दंगे, आतंकवाद, दुर्घटना आदि।

भूकंप का शाब्दिक अर्थ भूमि के काँपने या हिलने से है। भूकंप एक विनाशकारी घटनाओं में से एक है। पृथ्वी के चट्टानों के कुछ मीटर की गहराई में स्थित दरार, भ्रंश, कमजोर सतह की आपसी गति में हलचल, घर्षण आदि उत्पन्न होते रहते हैं जिससे असंतुलन उत्पन्न हो जाता है। उसे ही भूकंप की संज्ञा देते हैं। भूकंप आने के कई कारण हैं। प्लेटों की गतिशीलता के कारण ज्वालामुखी घर्षण वलन भूपटल का संकुचित होना आदि भूकंप की कुछ ऐसी तरंगें होती हैं जिन्हें मानव महसूस नहीं कर पाता किंतु संवेदनशील प्राणी पूर्वानुमान कर लेते हैं। सर्प, बिल्ली, चमगादड़, कुत्ते, पक्षियों को प्रकृति ने ऐसे गुण प्रदान किए हुए हैं कि इन्हें इन आपदाओं का पहले ही ज्ञान हो जाता है।

पहले जब कोयला के खदानों में लोग काम करते थे। उस समय आज की तरह नयी तकनीकी का विकास नहीं था। गैस के रिसाव के कारण बड़ी संख्या में लोग मारे जाते थे। इसका पता चूहे की हलचलों से ज्ञात किया जाता था क्योंकि जहाँ गैस का रिसाव होता था वहाँ से चूहे भागने लगते थे। इसप्रकार खदानों से लोगों को हटा लिया जाता था ताकि कोई हताहत न होने पाए। समुद्र में फँसे लोगों को जब स्थल का पता नहीं चलता तब कबूतर उड़ाकर स्थल का पता करते थे। पक्षी वहीं जाता था जिधर स्थल भाग नजदीक हो। कोलंबस को नई दुनिया की खोज में समुद्र में महीनों बीत गए। कोलंबस के साथी मिशन से वापस लौटने का फैसला कर चुके थे, लेकिन उसने हिम्मत नहीं हारी और इसी उम्मीद में उसने अपने साथियों का हौसला बढ़ाया। अगले ही दिन पक्षियों का झुंड दिखायी दिया। वह समझ गया कि मंजिल अब ज्यादा दूर नहीं है। यात्रा जारी रही और जिस नई जगह पर वह पहुँचा वह नई दुनिया अमेरिका था। यह अद्भुत खोज थी। कहने का आशय है कि विपत्ति के समय में भी ये संवेदनशील प्राणी मानव के लिए मार्गदर्शक, पथ-प्रदर्शक बनते रहे हैं।

हमने अपने जीवनकाल में कई भूकंप देखे हैं लेकिन ऐसा पहली बार देखा जो मानों भूकंप की बाढ़ सी आ गयी हो यानी भूकंप कई दिनों तक लगातार नियमित अंतराल पर आता रहा। यह भयंकर मंजर हमें ही नहीं वरन हमारे वर्तमान पीढ़ियों के लिए नजीर बनकर जीवन भर याद रहेगा।

वर्तमान युग में जहाँ अनेक वैश्विक चुनौती पहले से ही है- जैसे आतंकवाद, आर्थिक मंदी, कुपोषण, बेरोजगारी, खाद्यान्न संकट, शिक्षा, भुखमरी, जल-संकट, रंग-भेद आदि। वहीं दूसरी तरह की प्राकृतिक चुनौती भी आ खड़ी हुई है। वैसे भूकंप, बाढ़, सूखा, सुनामी, चक्रवाती तूफान, बादल का फटना, भूस्खलन, बेमौसम बरसात, महामारी आदि। प्राकृतिक तथा कृत्रिम आपदा और वर्तमान आपदा के लिए मनुष्य स्वयं ही जिम्मेदार है। तभी तो प्रकृति एक से बढ़कर एक आपदा ला रही है। संयुक्त राष्ट्र संघ के

अनुसार सर्वाधिक आपदाएँ एशिया महाद्वीप में आती हैं। हमें अतीत के बारे में सोचना चाहिए।

भूकंप किसी को मारता नहीं बल्कि वह अपने द्वारा बनाये गए आशियाने के मलबे में दबकर ही मर जाते हैं। मनुष्य अपनी कमियों को दूर करने का प्रयास नहीं करता बल्कि प्रकृति को ही दोषी मानता है। यह आने वाले समय की पुकार है। यदि मानव संभला नहीं तो इससे भी बुरे नतीजे भुगतने के लिए तैयार रहे। भविष्य में और भी बुरा होने का संकेत प्रकृति ने दे ही दिया है।

मानव हिमालय की ऊँचाई को माप लिया, समुद्र की गहराई का भी थाह पा लिया, परंतु अपने तथा आने वाली पीढ़ियों की कब्र की गहराई की हकीकत नहीं जान सका। अर्थात् भूकंप के बारे में निश्चित पूर्वानुमान नहीं लगाया जा सकता है। भूकंप का मापन सिस्मोग्राफी द्वारा रिक्टर पैमाने पर की जाती है।

पिछले वर्ष हमने यूरोप में महाप्रयोग की चर्चा रेडियो से सुना तथा अखबारों में पढ़ा कि ये महाप्रयोग पृथ्वी की हकीकत जानने का प्रयास किया जा रहा है। यह स्विटजरलैंड और फ्रांस की सीमा पर शुरू हुआ। तब लोग इसके खिलाफ थे क्योंकि उन्हें भय था कि पृथ्वी पर कहीं प्रलय न आ जाए। पिछले वर्ष क्षमता और तकनीकी कारणों से रोक दिया गया था लेकिन अब पुनः उसे चालू कर दिया गया है। वैज्ञानिक इस सच्चाई को घोषित कर चुके हैं कि कोई भी खोज अंतिम नहीं हुआ करती, लेकिन प्रकृति के खिलाफ नहीं। मानव प्रकृति के कहर के आगे बेबस, कमजोर और तुच्छ मालूम पड़ता है।

पिछले कुछ वर्षों से चीन हिमालय के आसपास के क्षेत्रों (तिब्बत) में रेल लाइनों, हाइवे-पटरों पर एयर पोर्ट बनाने, ब्रह्मपुत्र पर बाँध बनाकर प्रवाह को मोड़ने का लगातार प्रयास करता आ रहा है। पाक अधिकृत कश्मीर के रास्ते दक्षिण पश्चिम एशिया तक रेलवे, हाइवे, गैस पाइप लाइन कोरीडोर बनाने का कार्य चला रहा है। इससे कहीं न कहीं प्रकृति को गहरा आघात पहुँचा है। उसका खामियाजा हिमालय के सीमावर्ती देशों को आपदा के रूप में चुकाना पड़ रहा है। विकास के नाम पर प्राकृतिक मूल्यों का हनन-दोहन हुआ है जिसका सीधा-सीधा प्रभाव देखने को मिल रहा है।

पिछले कई वर्षों से भारत में बहुतायत आपदाएँ आयीं उनमें से सुनामी, उत्तराखंड त्रासदी, जम्मू-कश्मीर

का बाढ़-चक्रवाती तूफान (हुदहुद निलोफर), बेमौसमी बारिश, भूकंप आदि जिससे काफी क्षति हुई। एक के बाद एक ताबड़तोड़ अनेक आपदाओं को झेलना पड़ा। एक आपदा से अभी संभला नहीं तब तक दूसरी आपदा आ पड़ी। यानी प्रकृति जले पर नमक छिड़क रही है। ये सब प्राकृतिक बदलावों के सूचक हैं।

गुजरात के कच्छ में भूकंप आया जिसमें हजारों लोग मारे गए और घायल हुए। गुजरात के भूकंप ने समूचे भारत को हिलाकर रख दिया था। संपूर्ण देश इस आपदा से शोकाकुल हो गया। जनधन, पशुधन, संपत्ति को काफी नुकसान हुआ। वैसे तो इतने सारे भूकंप आना चिंता का विषय बन चुका है। यह खतरे की घंटी है जिसके लिए मनुष्य स्वयं जिम्मेदार है। जो बोया वही तो कटेगा। यद्यपि मनुष्य ने जो भी विकास किया वह प्रकृति को आघात पहुँचा कर ही किया है। वह इसके संरक्षण के बारे में तनिक भी ध्यान नहीं दिया। आने वाले समय में इसका असली प्रभाव दिखेगा। हमारे पूर्वजों ने जिसतरह विकास करके आधुनिक सभ्यता के मुहाने पर ला खड़ा कर दिया वह आपदाओं की सभ्यता साबित हो रही है। मनुष्य इतना अधिक प्रदूषण फैला रहा है कि शुद्ध हवा, पानी भी अब मिलना मुश्किल सा जान पड़ रहा है। क्या हम आने वाली पीढ़ियों को विरासत में प्रदूषित पर्यावरण और प्राकृतिक आपदा सौंपेंगे।

नेपाल के आम जनमानस की आँखों में आज भी भूकंप का खौफ साफ-साफ झलकता है। संकट में फँसे लोगों की चीख, दर्द, बेचैनी उनके चेहरों पर स्पष्ट झलकती थी। घायलों को तड़पते, इधर-उधर पड़े-मलबे में दबे-कुचले शवों के ढेर उस महाविनाश की लीला का स्पष्ट बयान कर रही थी। संकट में फँसे लोगों की टकटकी भरी निगाहें मदद की आस में छटपटा रही थी। काष्ठा! कोई फरिश्ता बनकर आता। क्योंकि आम लोगों के लिए न तो कोई घर बचा है और न ही सुख सुविधाएँ। खाने-पीने से लेकर रहने-सहने की भी उचित व्यवस्था न हो पा रही थी। लोग बचे हुए अपने परिजनों के साथ खुले आसमान में या टेंट में शरण लेने को बाध्य थे।

भूकंप का असली चेहरा तो तब सामने आएगा जब मलबा हटेगा। ●

मुकाधि कार्यालय
पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर
संपर्क: 9792448251

◆ लेख ◆
देवत्व : भावनात्मक उत्कृष्टता
 सुनील कुमार

**येऽप्यन्य देवता भक्ता यजन्ते श्रद्धयान्विताः
 तेऽपि मामेव कौन्तेय यजन्त्य विधिपूर्वकम्॥**

श्रीमद्भगवद्गीता के अध्याय 9 छलोक 23 में यह बिल्कुल स्पष्ट बता दिया गया है कि हे अर्जुन जो भक्त अन्य देवताओं को श्रद्धापूर्वक पूजते हैं, वे भी अविधिपूर्वक अर्थात् अज्ञानपूर्वक मुझे ही पूजते हैं।

अखिल विष्टव ब्रह्मांड का एक ही देव परमात्मा है। विभिन्न देवता उसी की शक्तियों के अलग-अलग नाम हैं। इन देवताओं का कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है। देवताओं की मूर्तियाँ भी परमात्मा की उन शक्तियों का स्मरण दिलाने के लिए हैं। कागज पर लिखा हुआ अक्षर स्वतः कोई वस्तु नहीं है, परंतु उन अक्षरों को पढ़ने से वस्तु का स्वरूप सामने आ जाता है। जैसे 'हाथी' यह दो अक्षर जहाँ लिखा गया उस स्थान पर कोई पशु अवस्थित भले ही न हो पर इन दो अक्षरों को पढ़ते ही उस विष्णालकाय हाथी का चित्र मन-मस्तिष्क में दौड़ जाता है। भक्तिरस का भजन पढ़ने से मनुष्य का हृदय भक्ति-भाव से सराबोर हो जाता है। अक्षर एक प्रकार के चित्र हैं, उन चित्रों से मन में कोई आकृतियाँ आती हैं और फिर उन आकृतियों से संबंधित भाव-कुभाव मन में उत्पन्न होते हैं। महापुरुषों के चित्रों एवं मूर्तियों को यदि हम आदरपूर्वक श्रद्धांजलि चढ़ाएँ तो स्वभावतः उनके गुणों के प्रभाव की छाया मानस-पटल पर अंकित होती है। मूर्तियाँ एकप्रकार की पुस्तकें हैं। ये मूर्तियाँ अपने संबंधित विषय की भावनाएँ दर्शक के मन में उत्पन्न करती हैं।

मंदिरों का प्रारंभ एक धर्मसंस्था के रूप में हुआ था। मंदिर के साथ-साथ पाठशाला, पुस्तकालय, औषधालय, व्यायामशाला, संगीतशाला, प्रार्थना-भवन, उपदेश-मंच आदि अनेकों सार्वजनिक प्रवृत्तियाँ जुड़ी रहती थी। उन प्रवृत्तियों का संचालन करने के लिए एक निस्पृह, त्यागी, विद्वान, परोपकारी, परिव्राजक, ब्राह्मण रहता था जिसे गुरु, पुरोहित, आचार्य या पुजारी कहा जाता था। उस पुरोहित के जीवन निर्वाह के लिए और मंदिर से संबंधित प्रवृत्तियों के आयोजन के लिए जनता स्वेच्छा से धर्मभाव से दान, भेंट, दक्षिणा आदि अर्पित करते थे। उस धन से मंदिररूपी सार्वजनिक संस्था चलती थी।

आज समय के प्रभाव, अज्ञान एवं अंधश्रद्धा के कारण देववाद में अनेक दोष नजर आने लगे हैं। देवता के सामने निरीह पशुओं की बलि, मंदिर के चढ़ावे का लोक उपकार सेवा में व्यय न होना, मंदिर से संबंधित सार्वजनिक प्रवृत्तियों का अभाव पाया जाना, देवताओं से तरह-तरह की धन-संपदाओं की याचना और उन्हें बिना प्रयत्न प्राप्त करने की आशा करना, उनमें अलौकिक चमत्कार का मानना, मंदिरों का व्यक्तिगत स्वार्थों के लिए उपयोग किया जाना आदि दोष दिखलाई पड़ते हैं जिनका संशोधन तथा निराकरण किया जाना अत्यावश्यक है। इन दोष-दुर्गुणों के कारण लोक की हानि तो होती ही है साथ ही इस पवित्र एवं महत्वपूर्ण संस्थान को कलंकित होना पड़ता है।

देवताओं की पूजा करना सर्वथा स्वीकार्य तथ्य है। 'देव' अर्थात् देनेवाला, जिसमें देयता निहीत हो। देव वे हैं जो परोपकारी, लोकसेवी, सदाचारी, सत्यनिष्ठ, विद्वान एवं सद्गुणों से परिपूर्ण हों। ऐसे देवताओं की पूजा, प्रतिष्ठा, प्रशंसा करना सर्वसाधारण का पुनीत कर्तव्य है। देवताओं के स्मारक, मंदिर, मूर्ति आदि स्थापित करने से उनके आदर्श, सद्गुण से हम सभी को सद्ज्ञान व प्रकाशा मिलता है। साथ ही भावी पीढ़ी को भी लाभ पहुँचेगा। ईश्वर एक ही है, उसकी शक्तिधाराएँ अनेकों हैं। ब्रह्मा, विष्णु, महेश, इंद्र, अग्नि, यम, निरृति, वरुण, वायु, कुबेर, ईशान, पृथ्वी, द्यौ का एक समुदाय देवगणों का है जो पूर्व से लेकर पूर्वोत्तर कोण तक आठ दिशाओं व ऊपर-नीचे के स्थानों में उस परम सत्ता के प्रतिनिधि के रूप में अपना कार्य करते हैं।

सकारोपासना से लेकर निराकारोपासना तथा प्रतीक पूजा आदि के मूल में एक ही तथ्य उद्घाटित होता है कि परब्रह्म ही श्रेष्ठता का समुच्चय हैं। उनके विविध सद्गुणों-सत्प्रवृत्तियों को हम अपनी रुचि, विष्टवास, मान्यता, सामर्थ्य के अनुसार चुनते हुए एक ही लक्ष्य पर चलें। स्वयं में श्रेष्ठता का समावेश करें। स्वयं की पात्रता को सुदृढ़ करें। हम चाहे वैदिक देवताओं को मानें या सूर्योपासक हों। हम चाहे श्रीराम को मानें या श्रीकृष्ण को, देवी के रूप में दुर्गाजी को या भक्त शिरोमणि महावीर

हनुमान जी की पूजा करें। हम इनकी उपासना मात्र इस निमित्त करते हैं कि श्रेष्ठता को अपने अंदर बढ़ाते हुए अपूर्णता से पूर्णता की ओर अग्रसरित हों। हिंदू धर्म में ही नहीं अपितु बौद्ध, मुस्लिम, पारसी, सिक्ख, ताओ, ईसाई, श्रिंटो, जैन आदि सभी धर्मों का ईश्वर एक ही है। मत-संप्रदाय बदलने से ईश्वर तो नहीं बदल जाते। ईश्वर के स्वरूप व कल्पना के लिए पूरी छूट दे दी गई है। व्यक्ति परम सत्ता के अनुशासन को अवश्य मानेगा और जीवन में ईश्वरीय तत्व-दर्शन को उतारेगा ही। चाहे किसी का नाम ले, बनेगा तो वह ईश्वर परायण ही।

सष्टि का नियामक सत्ता एक है। इसे शास्त्रकारों ने भी स्पष्ट किया है कि- 'एकं सद्ब्रह्म बहुधा वर्तते' अर्थात् एक ही ब्रह्म को बहुत तरह से बहुत नाम रूपों से कहा गया है। वे सभी एक ही सत्ता के विभिन्न नाम अथवा गुण हैं। एक ही सूर्य की किरणों में सात रंग होता है। इन्हें सूर्य रथ के सात घोड़े कह दिया गया। यह कलाकार की अलंकारिक कल्पना है। कला का अपना क्षेत्र है उसमें सत्ताओं, शक्तियों और संवेदनाओं को मूर्तिमान करने की, आकृति गढ़ने की पूरी छूट है। मन की दौड़ को सीमाबद्ध और भाव संवेदनाओं पर कोई प्रतिबंध नहीं लगाया जा सकता है। कला को उन्मुक्त आकाश में उड़ने के लिए भावनाओं को आकृति देने की आवश्यकता पड़ती है। उपमाओं की व कल्पनाओं का अपना अलग संसार होता है। सुंदर स्त्री को चंद्रमुखी, कमलनयनी कहा गया है। रात्रि को रत्नों से सुशोभित काली चादर ओढ़े सुंदरी के रूप में वर्णित किया गया है। चाँदनी से अमल बरसता है- पपीहा पिया-पिया की रट लगाता है। चकोर चंद्रमा को एकटक निहारता रहता है। हंस मोती चुगते हैं तो पतंगा प्रीत में अधीर होकर दीपक की लौ पर प्राण दे देता है। किसी विरहिनी की आँखें वर्षा की बूँदें बनकर बरसती हैं। स्वाति नक्षत्र की बूँदों से सीप में मोती, केले में कपूर और गज में गजमुक्ता का सञ्चन होता है। चंदन के निकटवर्ती पौधे सुगंधित हो जाते हैं और पुष्प की प्रशंसा में गीत गाते हैं। मधुल कवि कल्पनाओं को तथ्य और तर्क की कसौटी पर सहज ही झुठलाया नहीं जा सकता है। जब भाव संपदा ही खत्म हो जाएगी तब किसी की अंतर्पीड़ा की मरोड़ से निकलने वाले आँसुओं की व्याख्या पानी में रहने वाले रासायनिक पदार्थों के रूप में की जाने लगेगी। अतएव भाव संवेदनाओं

के सहारे खड़े हुए कोमल कल्पनाओं के संसार का विद्यमान रहना नितांत आवश्यक है।

देवपूजन में षोडशोपचार, पंचोपचार आदि की पूजा विधि का प्रयोग किया जाता है। इनका प्रयोजन मात्र भाव संवेदनाओं को उभारना है। पाद्य, अर्घ्य, आचमन, स्नान के लिए जल का अर्पण किया जाता है। इसका तात्पर्य है सत्प्रयोजन के लिए श्रम बिंदु का समर्पण। पुरुषार्थ किया जाना और समय दान दिया जाना। चार चम्मच जल देवता को समर्पित करने का एकमात्र उद्देश्य शरीर शुद्धि, मन शुद्धि, व्यवहार शुद्धि और अर्थ शुद्धि है। अक्षत, चावल, अन्न अर्पित करने का अभिप्राय है कि हमारे कमाये अन्न-धन से परमार्थ प्रयोजन का अंशदान नियमित होते रहना।

पुष्प अर्पित करना। पुष्प का स्वरूप ही है- कोमलता, सुरुचि, मधुल हास्य। पुष्प वातावरण को उल्लासमय बना देता है। पुष्प तितली, मधुमक्खी, भौरे आदि को अजस्र अनुदान देते हैं। उसके जीवन की सार्थकता तो देव चरणों में समर्पित होना ही है। इसके लिए वह छिदता है और संघबद्ध होकर माला बनता है। यही दिष्टा देवलक्ष्य रखने वाले मनुष्य की भी होनी चाहिए।

दीपक- पात्रता, वर्तिका, स्नेह और ज्योति का समन्वय है। दीपक किसी पात्र में बनता है। पात्र अर्थात् पात्रता-प्रामाणिकता। तेल, घी आदि चिकनाई को स्नेह या प्यार कहते हैं। दीपक में जिस तरह प्रत्यक्ष स्नेह भरा होता है उसी तरह हमारे अंतःकरण में दिव्य प्रेम भरा होना चाहिए। बत्ती को संस्कृत में वर्तिका कहा जाता है जिसका अर्थ लगन भी होता है। सन्मार्ग की तत्परता और निष्ठा की तुलना दीपक की वर्तिका से की जा सकती है। ज्योति धारण से दीपक ज्वलंत होता है। मानवीय चेतना में सद्ज्ञान, विवेक का प्रकाश दीप्तिमान हो जाए तो व्यक्ति स्वयं भी आलोकित हो जाएगा और अपने प्रभाव क्षेत्र को भी प्रकाशित कर देगा। देवताओं के सम्मुख दीपक जलाकर इसी भाव निष्ठा को अभिव्यक्त किया जाता है।

धूप-सुगंधि का अभिप्राय यष्टास्वी, श्रद्धासिक्त, अभिनंदनीय और अनुकरणीय जीवन प्रक्रिया की सुगंधि बिखेरना है। चंदन की विशेषताएँ हैं कि वातावरण में शान्ति-शीतलता उत्पन्न करना तथा समीप उगे हुए झाड़-झंखड़ों को अपने समान ही सुगंधित बना लेना।

डालियों पर लदे साँप-बिच्छुओं को भी छाँति देना किंतु उसके विष को प्रभावहीन बना देना, काटने वाली कुल्हाड़ी तक को सुगंधित कर देना।

नैवेद्य में मीठे पदार्थ ही प्रयुक्त किए जाते हैं। देवता को मिठास ही प्रिय है- मधुरता। मधुर वचन, मधुर व्यवहार से देवता प्रसन्न होते हैं। सौम्य, सरल, सेवाभावी सज्जनोचित स्वभाव ही देवत्व की झाँकी मानी गई है।

पुंगीफल, श्रीफल, ऋतुफल आदि अर्पण करने का तात्पर्य है कि कर्मनिष्ठा में प्रगाढ़ तत्परता किंतु फल की अभिलाषा देवता को समर्पित करना। वस्त्र- लज्जा ढके रहना, निर्लज्ज न बने रहना, श्यालीनता को धारण करना। रोली का तात्पर्य है- चेहरे पर रक्त की लालिमा बनाए रहना, आरोग्य और साहस की ओर अग्रसरित होना। यज्ञोपवीत अर्पण अर्थात् इस पुण्य प्रतीक धागों के माध्यम से मानवीय गुणों के प्रति आस्था का प्रकटीकरण। सत्य, प्रेम, न्याय, संयम, अस्तेय, अपरिग्रह, श्रौच, स्वाध्याय एवं आस्तिकता यह नौ गुण मानवता को अलंकृत करते हैं। इन्हें विकसित करने का उत्तरदायित्व कंधे पर लादा जाता है। आस्तिकता, आध्यात्मिकता और धार्मिकता की तीन दिव्य भावनाएँ यज्ञोपवीत की तीन ग्रंथियों के आधार पर व्यवहार में गाँठ बाँधकर समन्वित रखी जानी चाहिए।

देवता का स्तोत्र पाठ करने का तात्पर्य है कि दिव्य गुणों की महत्ता का स्मरण। एक ही देवता के अनेक नाम, सौ अथवा हजार नाम दिए जाते हैं। इन नामों के अर्थों पर विचार किया जाए तो वे किन्हीं दिव्य गुण, कर्म, स्वभाव के बोधक होते हैं। महिमागान एवं प्रार्थना में भी प्रायः देवता की दिव्य विशेषताओं का उल्लेख होता है।

अग्नि को प्रत्यक्ष देवता माना गया है। ऋग्वेद में अग्नि की स्तुति में 'अग्निमीले पुरोहित' कहा गया है। पुरोहित कहकर यह भाव प्रकट किया गया है कि

अग्निदेव प्रकाशवान हैं और उनके सानिध्य से प्रकाश पाया जा सकता है। अग्नि की लौ हमेशा ऊपर की ओर उठती है। इससे हमें उर्ध्वगामी जीवन जीने की शिक्षा मिलती है। अग्नि अपने पास कुछ भी नहीं रखता बल्कि सब कुछ वातावरण में बिखेर देता है। यही सच्चा अपरिग्रही का शिक्षण है। अंत में भस्म शेष रह जाती है जो 'भस्मात् शरीरं' का तत्त्वबोध कराती हुई सार्थक जीवन जीने की प्रेरणा देती है।

अंततोगत्वा यह सर्वमान्य तथ्य है कि देवत्व भावनात्मक उत्कृष्टता का ही दूसरा नाम है। मानवीय गरिमा को समुन्नत करने वाली सत्प्रवृत्तियों की महत्ता को समझा जाए और उसके प्रति असीम श्रद्धा रखी जाए तभी देव-मान्यता और देव-पूजन का समुचित लाभ उठाया जा सकता है।

यं ब्रह्मा वरुणेंद्ररुद्रमरुतः स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवै-
वेदै साङ्पदक्रमोपनिषदैर्गार्थयति यं सामगाः।
ध्यानावस्थित तद्गतं मनसा पश्यति यं योगिनो
यस्यांतं न विदुः सुरासुरगणा देवाय तस्मै नमः॥

ब्रह्मा, वरुण, रुद्र और मरुद्गण दिव्य स्तोत्रों द्वारा जिसकी स्तुति करते हैं, सामवेद के गानेवाले अङ्ग, पद, क्रम और उपनिषदों के सहित वेदों द्वारा जिसका गायन करते हैं, योगीजन ध्यान में स्थित तद्गत हुए मन से जिनका दर्शन करते हैं, देवता और असुरगण या कोई भी जिसके अंत को नहीं जानते, उस परम पुरुष नारायण देव को मेरा नमस्कार है। ●

वरिष्ठ अनुवादक
केंद्रीय हिंदी अनुभाग
मुकाधि कार्यालय
पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर
संपर्क 9794840672

दो वर्णों के मेल अथवा योग से उनके रूप और ध्वनि में जो अंतर अथवा विकार होता है, उसे संधि कहते हैं। यह अंतर अथवा विकार कभी एक वर्ण में तथा कभी दो वर्णों में होता है। कभी-कभी तो दोनों के स्थान पर सर्वथा एक तीसरा वर्ण आ जाता है। जैसे- अन्न+अभाव = अन्नाभाव, जल+आश्रय = जलाश्रय, विद्या+अर्थी = विद्यार्थी, विद्या+आलय = विद्यालय, देव+इंद्र = देवेन्द्र, चंद्र+उदय = चंद्रोदय।

◆ लेख ◆
माँ के दिल की आह
एम.वाई. फारूकी

आह का अर्थ अंतरात्मा से निकला शब्द है, जो किसी के द्वारा पहुँचायी गई पीड़ा को सहन न कर पाना है। जिसके कारण वह व्यक्ति उस व्यक्ति के प्रति उसे सामने से कुछ नहीं कह पाता। परंतु अंतरात्मा की पीड़ा सहन न कर मन ही मन ऐसा श्राप देता है, जो सच हो जाता है। ऐसे ही जब किसी व्यक्ति का मन किसी कारण खुश होता है, तो उसे ऐसी दुआ देता है कि वह भी सच होता है।

ऐसी ही एक सच कहानी जो मैंने अपनी आँखों से देखी है और देख रहा हूँ कि माँ के दिल से निकली आह आज भी सामने है जिसके संबंध में मैं सोचता हूँ कि क्या एक सगी माँ अपने पुत्र द्वारा दिया गया पीड़ा सहन न करने के कारण ऐसा श्राप दे जिससे वह लोग सीख ले, जो अपनी माँ के साथ ऐसा व्यवहार करते हैं और वह भी जब स्वर्ग सिधार जाती है तो पूरी जिंदगी पछतावा करते हैं।

यह कहानी मेरे बचपन की है। अब तो मैं लगभग 60 वर्ष का हो गया हूँ और सोच-सोच कर सिहर उठता हूँ कि दुनिया में ऐसे लोग भी हैं जो अपनी माँ का अनादर केवल अपनी पत्नी के कारण और उसकी खुशी के लिए करते हैं। जिस माँ ने अपनी कोख में नौ माह रखकर बड़े प्यार से पाला, सभी तकलीफ सही, कितनी सर्द रातों में अपने ठंड में रह कर बच्चे को गोदी में लेकर लालटेन की गर्मी से बच्चे को गर्म रखा। बारिश के दिनों में बच्चे को बचाया झोपड़ी में रहकर भूखे पेट या आधा पेट खाकर बच्चे को दूध पिलाया। यह सोचकर कि जब वह बच्चा बड़ा होगा तो वह ऐसा कार्य करेगा कि अपना ही नहीं पूरे कुल का नाम रौशन करेगा जिसके कारण मैं सुखी रहूँगी।

मेरे घर के सामने एक परिवार था जो काफी गरीब था। पिता मजदूरी कर घर का खर्चा चलाते थे, परिवार के नाम पर दो लड़के थे। कुल चार व्यक्ति का परिवार था। जब लड़के सयाने हुए और कुछ पढ़-लिखकर नौकरी करने लगे, तब उनका विवाह करना आवश्यक हो गया। किसी तरह एक परिवार श्रादी की बात लेकर आया उसके केवल दो लड़कियाँ थी।

अतः दोनों भाइयों की श्रादी उन दो बहनों से हो गई। श्रादी के बाद घर का माहौल बदलने लगा। सब कुछ ठीक-ठाक चल रहा था। बड़े भाई से केवल लड़का था जबकि दूसरे छोटे भाई के दो लड़का एक लड़की थी। ससुराल

का पूरा धन भी लड़कियों के नाम उनके छवसुर ने मरने से पूर्व कर दिया था।

पिता की मृत्यु के बाद माँ अपने घर पर रहती थी जबकि दोनों बहुएँ अपने मायके में रहकर खुशहाल जीवन बिता रही थी। बड़ा लड़का और बहू अपनी माँ पर कोई ध्यान नहीं देता था जबकि छोटा लड़का अपने परिवार को छोड़कर सभी त्योहार अपनी माँ के साथ करता और कम वेतनभोगी होने के बाद भी पूरा ध्यान देता था। बड़ी बहू यदि अपने पति को रात भर खड़ा रहने का आदेश देती तो उसका पूर्ण पालन करते थे। माँ की तकलीफ देखकर कुछ करने की चाह बड़े लड़के को थी, परंतु पत्नी के आगे बेवश, बड़े लड़के द्वारा कोई भी ध्यान न देने के कारण माँ को काफी पीड़ा होती थी। छोटा लड़का माँ का पूर्ण ध्यान रखता था। माँ भी उसे हमेशा दुआएँ देती रहती थीं। एक दिन अपने छोटे लड़के से माँ ने कहा, - 'बाबू! रमेष्ट्र कभी पोते का मुँह नहीं देखेंगे।'

सुरेष्ट ने माँ से कहा- 'माँ, आप ऐसा क्यों कह रही हैं।' माँ ने कहा- 'बेटा तुम लोगों को मैंने बहुत ही दुःख-दर्द से पाला है। मैं तुम लोगों के पैसे की भूखी नहीं हूँ। केवल तुम लोगों के प्यार की भूखी हूँ। इतने दिन बीत गए, रमेष्ट्र को देखे हुए मेरी आँखें देखने के लिए तरस रही हैं। क्या उसका फर्ज नहीं है कि जिस माँ ने इतने प्यार और तकलीफ से पाला, कभी तो आता। परंतु बहू ने ऐसा क्या कर दिया कि मेरे बारे में वह कुछ सोचता ही नहीं। अच्छा ही है उसके तो केवल एक ही लड़का है उसी से पाएगा और फफक-फफक कर रो पड़ी।'

समय बीतता गया और माँ स्वर्ग सिधार गई। रमेष्ट्र ने अपने लड़के की धूमधाम से श्रादी की। वह और उनकी पत्नी तथा छोटा पुत्र भी स्वर्ग सिधार गया, परंतु दादी द्वारा दिया गया श्राप कि 'पौत्र का मुँह नहीं देखेंगे।' आज चालीस वर्ष का पौत्र हो गया परंतु कोई संतान नहीं हुई।

हर व्यक्ति का फर्ज है कि वह अपने माँ-बाप को खुश रखे ताकि माँ-बाप के अंतरात्मा से कोई ऐसी बात न निकले जिससे वह जिंदगी भर पछताता रहे। ●

मुख्य लोको निरीक्षक/ईधन
मुख्य यांत्रिक इंजी. कार्यालय
पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर

संपर्क 9794840433

◆ विज्ञान प्रतिभा ◆

भारत की उपलब्धियाँ

संजय वर्मा

भारत के दो नये युद्ध के कारक:

आकाश एवं आई.एन.एस. विष्ठाखापट्टनम्

जमीन से हवा में मार करने वाली स्वदेशी तकनीकी पर आधारित सुपर सोनिक मिसाइल 'आकाश' 05 मई 2015 (मंगलवार) को भारतीय सेना के बेड़े में शामिल हो गई। इस मिसाइल के रक्षा तंत्र के और मजबूती मिलने की उम्मीद है। इससे आसमान से आने वाले किसी भी खतरे को रोक पाने में भारतीय सेना के सैन्य वायुरक्षा कोर की ताकत इससे काफी बढ़ जाएगी। यह मिसाइल दुश्मन के हेलीकॉप्टरों, विमानों एवं मानव रहित विमानों को 25 किमी. दूरी तक निष्ठााना बना सकती है।

डी.आर.डी.ओ. द्वारा विकसित की गई मिसाइलें सैन्य वायुरक्षा कोर के लिए खास प्रोत्साहन का काम करेगी। यह कोर वर्षों से पुराने हथियारों के साथ कार्य कर रही है। आर्मी चीफ जनरल दलवीर सिंह सुहाग ने लोकार्पण समारोह की अध्यक्षता करते हुए कहा कि 'इस प्रणाली के साथ हमें जो क्षमता हासिल हुई है, वह हमारे बल की कमियों को दूर करेगी, इसके 96 प्रतिशत कल-पुर्जे स्वदेशी हैं और यह स्वदेशीकरण की ओर एक बड़ा कदम है। यह हर मौसम में काम कर सकता है।' श्री सुहाग ने कहा कि आज के समय में हवाई सुरक्षा के लिए सिर्फ विमान और हेलीकॉप्टर की तैनाती को काफी नहीं माना जा सकता है। आधुनिकतम हवाई रक्षा व्यवस्था ज्यादा अहम हो गई है। तीन दशक तक लगातार काम कर रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) ने इसे सेना के लिए तैयार किया है। ये मिसाइल वायुसेना को पहले से ही दी जा चुकी है। आकाश के परियोजना निदेशक जी. चंद्रमौली के मुताबिक इन्हें स्थिर प्लेटफार्म के साथ ही विशेष किस्म की गाड़ियों से भी छोड़ा जा सकता है।

आकाश

वेट	-	720 किग्रा.
डायमीटर	-	35 सेमी.
लंबाई	-	5.78 मी.
वार हेड वेट	-	60 किग्रा.

फ्लाइट सेलिंग - 20 किमी.

स्ट्राइक रेट - 25 किमी.

यह स्वदेशीकरण की ओर किया गया प्रमुख कदम है। यह मिसाइल केवल तीन सेकेंड में फायर करने वाली मिसाइल है जो सेना के लिए हवाई सुरक्षा ढाल साबित होगी। यह हर मौसम में कारगर आसमानी सरहदों की सुरक्षा के लिए अचूक अस्त्र है। यह तीन सेकेंड में तो फायर कर ही सकती है अपितु 20 सेकेंड में दुश्मन के जहाज को बर्बाद कर सकती है। इसकी स्पीड 660 मीटर प्रति सेकेंड है।

आकाश मिसाइल सिस्टम का रडार 100 किमी. की दूरी से भी अपने दोस्त या दुश्मन जहाज को देख सकता है। वर्ष 2012 में वायुसेना को इसका हवा से जमीन में मार करने वाला वर्जन सौंपा गया था। इस मिसाइल को मौजूदा स्थिति तक विकसित होने एवं अब सेना को मिलने में कुल 30 साल लग गए। देश में इसके निर्माण होने से इसकी लागत तीन गुना कम हुई। यही नहीं अब इसमें फेर-बदल या अपग्रेड या सुधार करने के लिए किसी अन्य पर निर्भर रहने की आवश्यकता भी नहीं है जो पहले एक दुर्लभ कार्य था।

आई.एन.एस.- विष्ठाखापट्टनम्

देश में ही बनाया गया जंगी जहाज आई.एन.एस. विष्ठाखापट्टनम् 20 अप्रैल 2015 को राष्ट्र को सौंप दिया गया। यह जंगी जहाज अत्याधुनिक हथियारों से लैश है। मुंबई के मझगाँव डकयार्ड में तैयार यह जहाज ऐटमी, जैविक एवं रासायनिक हालात में भी चुनौतियों का सामना कर सकता है।

भारतीय नौसेना के इस सबसे बड़े युद्धपोत को नौसेना का परंपरा को निभाते हुए एडमिरल आर.के.धवन की पत्नी, मीनू धवन के हाथों समंदर में उतारा गया।

इस जहाज में बराक मिसाइल है जो दुश्मन की टोह लेने के लिए मल्टी फंक्शन सर्विलांस श्रेट अलर्ट सिस्टम भी इसी जंगी जहाज को एंटी शिप ब्रह्मोस मिसाइल से भी लैस किया जाएगा। आई.एन.एस. विष्ठाखापट्टनम् अत्याधुनिक हथियारों के अलावा, न्यूक्लियर, केमिकल या बायोलाजिकल हमलों के दौरान अपने क्रू

को ज्यादा बेहतर सुरक्षा दे पाएगा। बेहद खराब मौसम में भी इस जहाज पर हेलीकॉप्टर उतर सकेंगे, साथ ही ये जहाज अत्याधुनिक शिप डाटा नेटवर्क के नाम से मैनेजमेंट सिस्टम से लैस होगा। 163 मीटर लंबे इस जहाज के डिजाइन को नेवी की ही संस्था डायरेक्टरेट ऑफ नवल डिजाइन ने तैयार किया है।

आई.एन.एस. विष्णाखापट्टनम समंदर में तो उतर गया है, लेकिन पूरी तरह तैयारी के बाद जुलाई 2018 में इसे भी सेना को सौंपा जाएगा। इसी क्लास के बाकी तीन युद्धपोत भी लगभग हर दो साल बाद नौसेना के बेड़े में शामिल किए जाएंगे। यह ऐसा जहाज है जो परमाणु हमले के बाद लड़ाई जारी रख सकता है। इस युद्धपोत में टोटल एटमॉस्फेयर कंट्रोल सिस्टम कार्य करता है जिसके कारण जहाज के अंदर हवा, एटमी, केमिकल एवं बायोलॉजिकल फिल्टर आदि गुजरती है।

इसमें ऐसे आधुनिक उपकरण लगे हैं जो दुश्मन को मैदान छोड़कर भागने पर मजबूर कर देंगे। इस युद्धपोत के आते ही दुश्मन हवा, जमीन एवं जल के साथ सभी जगहों पर मात खाएगा और उसे जान बचाकर भागने के लिए बमुश्किल से मिल सकेंगी। यही नहीं विष्णाखापट्टनम में इजरायली मल्टीफंक्शन सर्विलांस थ्रेट अलर्ट रडार सिस्टम लगाया गया है। यह दुश्मन के हमले को लेकर जानकारी प्रदान करेगा। यह युद्धपोत 127 किमी. तक गन लैस है।

भारत द्वारा इस युद्धपोत के विकसित किए जाने से देश रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भर हो रहा है। माना जा रहा है कि यह भविष्य के लिए बेहद अच्छा है। इससे भारत को अपनी रक्षा बजट मैनेज करने में सहायता होगी।

अब 'आकाश' एवं 'आई.एन.एस. विष्णाखापट्टनम' दोनों की प्रायोगिक सफलता क्या होगी? यह तो किसी युद्ध के आने पर ही सही ढंग से पता चलेगा मगर इसमें कोई संदेह नहीं कि इनके सही परीक्षण से भारतीय सेना बहुत सशक्त हो गई है। इन कारकों से जुड़े सभी लोगों को हार्दिक बधाई।

तीन भारतवांछियों को मिला

इंटरनेट विज्ञान प्रतिभा पुरस्कार

इस वर्ष की प्रतिष्ठित इंटरनेट विज्ञान प्रतिभा पुरस्कार तीन भारतीय-अमेरिकियों को मिला। इन विजेताओं को सम्मान के साथ अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा के

व्हाइट हाउस में मिलने को भी मिलेगा।

सरनेष्ठा थनिका प्रेमबाबू, सारस्वत किशोर एवं अनविता गुप्ता को इस पुरस्कार का विजेता घोषित किया गया। हालाँकि तीनों प्रतियोगिता के शीर्ष स्थान पर नहीं आ सके, जबकि पिछले साल शीर्ष स्थान पर भी भारतीय-अमेरिकियों ने अपनी पैठ बनायी थी। इस शीर्ष स्थान पर नोआह गोलोविच, एंड्रयू जिन और माइकल हॉफमैन रहे। इन्हें प्रथम पुरस्कार के रूप में 1.5-1.5 लाख डॉलर की पुरस्कार राशि प्रदान की गई। यह जानकारी प्रतियोगिता के आयोजक 'प्रोग्राम ऑफ सोसाइटी फॉर साइंस एंड द पब्लिक' ने दी। आयोजकों ने बताया कि कैलिफोर्निया के रहने वाले 17 वर्षीय सरनेष्ठा को नवोन्मेष के लिए बेहतरीन काम करने के लिए दूसरा स्थान मिला। उन्होंने अपने अध्ययन के जरिये बताया कि कैसे नैनो क्रिस्टल सुपरलैक्टिक लिड टाइटेनेट एवं स्ट्रोनटियम रूथनेट की विभिन्न परतें विद्युत एवं चुंबकीय स्वभाव को प्रभावित करता है। इससे विद्युतीय और कंप्यूटिंग प्रणाली में सुधार करने में मदद मिलेगी।

उन्होंने बताया कि पेनसिल्वेनिया के वेस्ट चेस्टर के रहने वाले 18 वर्षीय सारस्वत किशोर को मौलिक शोध में उल्लेखनीय काम करने के लिए तीसरा पुरस्कार मिला। किशोर की गणित परियोजना मैट्रिक्स के जरिये अलजेब्रा के सारांश को प्रदर्शित करता है।

एरिजोना की रहने वाली 17 वर्षीय अनविता गुप्ता को भी विषय के लिए उपयोगी तकनीक की खोज करने के लिए तीसरा पुरस्कार मिला। उन्होंने मशीन का उपयोग कंप्यूटर को संभावित कैंसर, टी.बी. एवं इबोला की दवाइयों की पहचान करने के लिए प्रशिक्षित करने में किया। उनके द्वारा तैयार मशीन का पूर्व चिकित्सीय प्रयोग चीन में टी.बी. की दवा पहचानने में हो रहा है।

कड़ी प्रतियोगिता

- ❖ 1800 छात्रों ने पूरे अमेरिका से प्रतियोगिता में लिया था हिस्सा।
- ❖ 40 प्रतिभागियों ने अंतिम दौर में पहुँचने में सफलता अर्जित किया था, इनमें से 11 भारतीय थे।
- ❖ 16 लाख डॉलर पुरस्कार (करीब 10 करोड़ रुपये) के रूप में बाँटे गए।

पुरस्कार राशि

- ❖ 03 श्रेणियों में कुल नौ छात्रों को दिया जाता है। पुरस्कार प्रत्येक श्रेणी में क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय।
- ❖ 1.5 लाख डॉलर प्रत्येक श्रेणी में प्रथम आने पर मिलते हैं।
- ❖ 75 हजार डॉलर का सांत्वना पुरस्कार अंतिम चरण में आने वाले प्रत्येक प्रतिभागी को मिलता है।

विज्ञान के प्रतिभाओं में भारत ने प्रायः दुनिया में अपना परचम लहराया है चाहे वह अंतरिक्ष जगत की बात हो चाहे विज्ञान के किसी नये शोध की चाहे वह

विभिन्न विषयों के अन्य नये प्रयोग या आविष्कार की बात हो। इस क्रम में तीन भारतवर्षियों-सरनेश थनिका प्रेमबाबू, सारस्वत किशोर एवं अनविता गुप्ता ने पुनः एक शानदार सफलता अर्जित किया है। उक्त तीनों भारतवर्षियों को हार्दिक बधाई। ●

स्वतंत्र विज्ञान एवं
खेल पत्रकार

कंप्यूटर सेंटर, दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय

गोरखपुर-273009

संपर्क: 9452112461

राजभाषा नियम 1976 यथा संशोधित 1987

नियम 9 हिंदी में प्रवीणता

- क) मैट्रिक परीक्षा या उसकी समतुल्य या उससे उच्चतर कोई भी परीक्षा हिंदी माध्यम से उत्तीर्ण कर ली है, या
- ख) स्नातक परीक्षा में अथवा स्नातक परीक्षा के समतुल्य या उससे उच्चतर किसी अन्य परीक्षा में हिंदी को एक वैकल्पिक विषय के रूप में लिया था, या
- ग) यदि वह इन नियमों से उपाबद्ध प्ररूप में यह घोषणा करता है कि उसने हिंदी में प्रवीणता प्राप्त कर ली है।

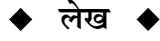
नियम 10 हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान

1-(क) यदि किसी कर्मचारी ने-

- (I) मैट्रिक या उसकी समतुल्य या उससे उच्चतर परीक्षा हिंदी के साथ उत्तीर्ण कर ली है, या
- (II) केंद्रीय सरकार की हिंदी प्रशिक्षण योजना के अंतर्गत आयोजित प्राज्ञ परीक्षा या, जब उस सरकार द्वारा किसी विशिष्ट प्रवर्ग के पदों के संबंध में उस योजना के अंतर्गत कोई निम्नतर परीक्षा विनिर्दिष्ट है, तब वह परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है, या
- (III) केंद्रीय सरकार द्वारा उस निमित्त विनिर्दिष्ट कोई अन्य परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है, या

- (ख) यदि वह इन नियमों से उपाबद्ध प्ररूप में यह घोषणा करता है कि उसने ऐसा ज्ञान प्राप्त कर लिया है, तो उसके बारे में यह समझा जाएगा कि उसने हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

- 2) यदि केंद्रीय सरकार के किसी कार्यालय में कार्य करने वाले कर्मचारियों में से 80 प्रतिशत ने हिंदी का ऐसा ज्ञान प्राप्त कर लिया है तो उस कार्यालय के कर्मचारियों के बारे में सामान्यतया यह समझा जाएगा कि उन्होंने हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है।



मन की स्वच्छता पूर्ण स्वच्छता

हरगोविंद लाल

प्रत्येक व्यक्ति सफाई

को ही पसंद करता है। संसार में कोई भी मनुष्य ऐसा न होगा जिसको गंदगी से प्रेम तथा सफाई से घृणा हो। छोटे बच्चे से लेकर वयोवृद्ध तक सभी को स्वच्छता एवं सुंदरता ही प्रिय लगती है। आप एक छोटे से अनजान बालक को ही देख लीजिए कि वह अस्वच्छ और असुंदर वस्तु कदापि पसंद नहीं करेगा। यदि किसी मेहमान को घर में बुलाना हो तो लोग घर की एवं तन की सफाई दिलोजान से पूरा समय देकर करते हैं। इसका कारण तो केवल यही होता है कि आया हुआ मेहमान यह न सोचे कि इनके घर में सफाई नहीं है या ये लोग साफ नहीं रहते और भविष्य में उनके घर जाने के लिए वह इच्छा भी न करे। परंतु यह सब तो दुनिया में बाहरी सफाई करने तथा श्रान या इज्जत बनाने के साधन हैं। किंतु विचार यह करना है कि क्या मनुष्य संसार में केवल बाहरी श्रान-इज्जत बनाने के लिए अथवा ऊपरी सफाई रखने के लिए आया है या मालिक की दरगाह में भी इज्जत पाने के लिए आया है? संत- महापुरुष तो फरमाते हैं कि मनुष्य प्रभु-भक्ति करके मालिक को प्राप्त करने के लिए ही संसार में आया है। इसके लिए वाह्य सफाई की इतनी अहमियत नहीं है। अपितु मन की सफाई करने पर ही वह जोर देते हैं। उनकी वाणियों में यही उपदेश दिया गया है कि मन की सफाई करो, मन से ही युद्ध करो और मन को ही अपना गुलाम बनाने की चेष्टा करो। नित्यप्रति नाम का चिंतन करने से मन शुद्ध व निर्मल होता है। साथ ही साथ वे यह भी हिदायत देते हैं कि मन से काम, क्रोध, लोभ, मोह व अहंकार आदि गंदगी को बाहर निकालते रहो, लेकिन यह सब तभी हो सकता है जबकि संतों-महापुरुषों के सदुपदेशों को पूरा-पूरा क्रियात्मक रूप में मनन किया जाए। वह हर समय जीव को मन के सँवारने व सुधारने के लिए चेतावनी देते रहते हैं। अपनी आध्यात्मिक शिक्षा से संसारी लोगों को उनका वास्तविक उद्देश्य का स्मरण कराते हैं। तभी तो संतों ने कहा है-

गुरु धोबी सिष कापड़ा, साबुन सिरजन हार।

सुरति सिला पर धोइयो, निकसै जोति अपार॥

अर्थात् संत-सद्गुरु का उपदेश साबुन है। वे जीव

को ऐसी ज्ञान बुद्धि प्रदान करते हैं कि जीव सुरति को शब्द के साथ जोड़कर अभ्यास करता है और धीरे-धीरे मन में से गंदे विकारों को निकालने का भरसक प्रयत्न करता है। जिसके परिणामस्वरूप मन शुद्ध व स्वच्छ होकर नाम के रंग में रंगा जाता है। इसीप्रकार जीवों को समझाने हेतु निम्नलिखित दृष्टान्त से यह दर्शाया गया है कि मन की सफाई ही वास्तविक सफाई है।

एक समय की बात है। एक काफिला कहीं जा रहा था। मार्ग में उसका ऊँट कहीं दूर निकल कर मार्ग भूल गया। भटकने के कारण वह भूख-प्यास से व्याकुल हो रहा था। इसलिए उसे अपनी सुधि न रही। बेसुध होने के कारण वह बिना देखे भागता ही चला जा रहा था। आगे एक कुआँ आ गया जिसकी मुँडेर अधिक ऊँची न थी। वह उसमें गिर कर मर गया। समीप ही एक गाँव था। उस गाँव के निवासी उसी कुएँ का पानी प्रयोग में लाते थे।

दूसरे दिन उस गाँव के लोग कुएँ में से पानी भरने गए तो उसमें दुर्गंध फैली हुई थी। सब ग्रामीण परस्पर सोचने लगे- न जाने पानी में से दुर्गंध क्यों आ रही है? हर किसी ने अपनी-अपनी बुद्धि के अनुसार विभिन्न उपाय बतलाए। कई बुजुर्ग एवं पंडितों से पूछा आखिरकार एक पंडित ने कहा- 'पाँच सौ घड़े पानी इसमें से बाहर निकाल फेंको।' सभी ग्रामीण पानी निकालने में जुट गए। परंतु तब भी कोई अंतर न हुआ। पंडित जी से फिर दुबारा पूछा गया तो उन्होंने कहा- 'इसमें कोई सुगंधित वस्तु आदि डाल दो।' लेकिन सुगंधित वस्तुएँ डालने पर भी दुर्गंध नहीं गई बल्कि समय की गति के साथ-साथ दुर्गंध भी बढ़ती गई। अब फिर पंडित जी का द्वार खटखटाया। जहाँ तक उनकी बुद्धि सीमित थी उन्होंने उसी के अनुसार उपाय भी बतलाया था। पुनः पूछने पर उन्होंने कहा कि अब की बार इसमें गंगाजल डाल दो। लोगों को यह विश्वास था कि अब तो अवश्य ही दुर्गंध काफूर हो जाएगी, लेकिन कहाँ? वह तो घटने का नाम ही नहीं लेती थी।

सभी ग्राम निवासी चिंतित हो गए कि यहाँ अन्य कोई पानी का साधन भी नहीं है करे तो क्या करे? इतने

में वहाँ से एक संत महात्मा जी गुजर रहे थे। सभी लोगों को हैरान-परेष्ठान और दुखी देखकर उनसे न रहा गया। उन्होंने समीप आकर कहा- ‘अरे भाई! कौन सी ऐसी जटिल समस्या है जिसका समाधान नहीं हो पा रहा है और आप लोग असमंजस में पड़े हुए हैं।’

ग्राम निवासियों ने विनय की- ‘महाराज! आप ही हम पर दया कीजिए। दो दिन से इस कुएँ के पानी में से दुर्गंध आ रही है। इन पंडित जी के कहने पर कई उपाय किए लेकिन यह दिनों-दिन बढ़ती ही जा रही है। अब कष्टा करके आप ही बतलाइए कि दुर्गंध कैसे दूर होगी?’

संत महाशय दूरदर्शी होते हैं। थोड़ी देर विचार करने के पश्चात् उन्होंने कहा- ‘यह दुर्गंध कहीं बाहर से तो आ नहीं रही। जब कुएँ के अंदर ही पैदा हुई है तो पहले इसके भीतर जाकर देखो कि कोई ऐसी वस्तु तो नहीं गिरी जिसकी सड़ांध से दुर्गंध फैल गई हो।’

महात्मा जी के कथनानुसार एक व्यक्ति ने कुएँ में जाकर देखा तो सचमुच एक ऊँट का मल्लक शरीर पड़ा था। महात्मा जी ने कहा कि पहले इस मल्लक ऊँट को बाहर निकालो। फिर कुएँ का पानी निकाल कर सफाई करो। इसके बाद कुएँ का पानी स्वच्छ व निर्मल हो जाएगा। अतः महात्मा जी कथनानुसार पहले मल्लक ऊँट को निकाला गया फिर कुएँ की सफाई की गई तो पानी की दुर्गंध भी जाती है।

संत महापुरुष जीव को समझाने के लिए इतनी रचना रचाते हैं। इस दृष्टांत का तात्पर्य यह है कि जीव

की सुरति भी इसीप्रकार मोह-माया-अहंकार आदि विकारों से मलिन हो चुकी है। अपनी बुद्धि एवं विचारों के अनुसार दान-पुण्य आदि अनेक कर्म करता है। लेकिन अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में उसे सफलता नहीं मिलती। यह सब तो उसी भाँति हुआ जैसे ग्राम निवासी ऊँट के मल्लक शरीर पर इत्र-फुलेल और गंगाजल आदि डालते रहे। उनका सारा समय और परिश्रम व्यर्थ गया। इसीप्रकार मन की मलिनता को भी सत्पुरुषों द्वारा बतलाई गई युक्ति द्वारा ही दूर कर सकते हैं। उनके पास हर एक जीव के लिए हर प्रकार के साधन विद्यमान रहते हैं। वे कार्य को सरल व सुगम बना देते हैं। महापुरुष यही फरमाते हैं कि काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि विकारों को हृदय से निकाल कर नाम का सुमिरन करो अथवा सुरति को सद्गुरु के शब्द के साथ जोड़कर मन को स्वच्छ और निर्मल बनाकर ही लक्ष्य की प्राप्ति हो सकती है। अतः मालिक को प्राप्त करने के लिए मन की सफाई करके प्रभु नाम का सुमिरन कराना नितांत आवश्यक है। श्रीरामचरितमानस में गोस्वामी तुलसीदास जी ने भी मन की निर्मलता के विषय में कहा है-

निर्मल मन जन सोई मोहि पावा।

मोहे कपट छल छिद्र न भावा।। ●

वरिष्ठ अनुवादक

मंडल रेल प्रबंधक/राजभाषा

पूर्वोत्तर रेलवे, वाराणसी

संपर्क: 8004235179

उपसर्ग (Prefixes): जो ‘शब्दांश’ शब्द के आदि (प्रारंभ) में जुड़कर उसके अर्थ में विशेषता उत्पन्न कर देते हैं या उसके अर्थ को सर्वथा बदल देते हैं, वे उपसर्ग कहलाते हैं। जैसे ‘जय’ शब्द का अर्थ है ‘जीत’ परंतु यदि उसके आदि (प्रारंभ) में ‘परा’ उपसर्ग जोड़ दें तो ‘पराजय’ का अर्थ हो जाता है ‘हार’ जो मूल शब्द ‘जय’ के अर्थ से सर्वथा विपरीत है। इसीप्रकार ‘बल’ शब्द के पहले ‘प्र’ उपसर्ग लगा दें तो ‘प्रबल’ शब्द का अर्थ हो जाता है- अधिक बलवान, पर यदि ‘प्र’ की जगह ‘निर्’ उपसर्ग लगा दिया जाए तो ‘निर्बल’ शब्द का अर्थ हो जाता है ‘बल रहित’ (कमजोर)। कई बार एक शब्द में एक से अधिक उपसर्ग भी लगते हैं। जैसे- ‘संविधान’ में ‘सम् ’ और ‘वि’, प्रत्युपकार में ‘प्रति’ और ‘उप’ दो-दो उपसर्ग लगे हुए हैं।

प्रत्यय (Suffixes): जो शब्दांश शब्दों के अंत में जुड़कर उनके अर्थ को बदल देते हैं, वे प्रत्यय कहलाते हैं। जैसे- बुढ़ापा, लड़कपन, कठोरता, बलहीन। इनमें ‘पा’, ‘पन’, ‘ता’, ‘हीन’ ये सभी प्रत्यय हैं।

◆ लेख ◆
जरा सोचिए?

नीलम प्रभा श्रीवास्तव

8 मार्च को एक और 'अंतर्राष्ट्रीय

महिला सशक्तिकरण' दिवस का अवसान हो गया। कुछ गोष्ठियाँ हुई उसमें महिलाओं के उत्थान की बड़ी-बड़ी बातें हुई, महिलाओं ने अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता के लिए जुलूस भी निकाले और शहर के कुछ सफल महिलाओं के साक्षात्कार समाचार पत्रों में प्रकाशित हुए। इन गतिविधियों के बीच महिलाओं का वह कमजोर तबका उपेक्षित रह गया जिसे हर दिन हर पल शोषण का शिकार होना पड़ रहा है। जिस तिथि के समाचार पत्रों में महिलाओं की महिमा छापी गई उसी तिथि के समाचार पत्र में घर में घुस कर किशोरी के अपहरण और किशोरी से गैंग रेप करने के बाद जहर पिला कर हत्या की खबरें भी छपी। समाचार पत्र को पढ़ते हुए समझ में नहीं आ रहा था कि महिला के उत्थान की खबर पढ़कर सिर गर्व से ऊँचा करूँ या फिर महिलाओं पर हो रहे उत्पीड़न के लिए सिर शर्म से झुका दूँ। यह किसी एक तिथि की बात नहीं है, ऐसी किसी भी तिथि का अखबार निगाहों से नहीं गुजरता जिसमें दो-चार महिला उत्पीड़न की खबरें नहीं छपती।

अभी दिल्ली के निर्भया कांड को ज्यादा समय नहीं गुजरा, जब पूरे देश में बलात्कार के विरुद्ध एक आंदोलन उठ खड़ा हुआ था। जगह-जगह इसके विरुद्ध धरना प्रदर्शन हो रहे थे। प्रशासन भी सक्रिय हो गया था। अपराधियों को सख्त सजा देने के लिए ताबड़तोड़ कार्रवाई की जा रही थी। ऐसा महसूस होने लगा था कि बलात्कार जैसे घृणित घटनाओं में कुछ कमी आएगी पर ऐसा नहीं हो पाया। आंदोलन शान्त हो गया लेकिन घटनाओं में कोई कमी नहीं आयी। घटनाएँ लगातार हो रही हैं और रोज हो रही हैं। अब तो ऐसी खबरों के लिए जैसे हम सभी ने अपने आप को अभ्यस्त बना लिया है। ये खबरें ऐसी हो गयी हैं जैसे अखबारों में छोर बाजार और सोने-चाँदी के भाव रोज प्रकाशित होते हैं। हमने पढ़ा और पेपर अलग रख दिया।

हम, आप, हमारा समाज, पूरा देश पता नहीं किस बंधन में खुद को जकड़ा हुआ महसूस कर रहा है कि अपनी जगह से हिल भी नहीं पा रहा है। हम हमेशा

ऐसी घटनाओं के खिलाफ बातें करते हैं और अपने-अपने नजरिये से दोषी भी तय कर देते हैं और फिर कुछ नहीं? जबकि हम सब जानते हैं कि ऐसे मामलों में हम और आप मिलकर सब कुछ कर सकते हैं।

उस पीड़िता के बारे में जरा सोचिए जिसे कैसी-कैसी सामाजिक प्रताड़ना झेलनी पड़ती है। अपराधी पीड़िता के माँ-बाप व परिजनों की कैसी असहनीय व दयनीय स्थिति होती है यह कड़वी सच्चाई किसी से छुपी नहीं है। पीड़िता को तो ताउम्र मानसिक प्रताड़ना और दोहरी मानसिकता वाले समाज की टेढ़ी नजरों का सामना करना पड़ता है। इस घटना का सबसे दुःखद पहलू ये ही है कि पीड़िता को शारीरिक और मानसिक कष्ट ही नहीं, समाज के तरह-तरह के आरोपों को भी सहना पड़ता है। वह तो पल-पल घुट-घुट कर मरती रहती है। पुलिस और अस्पताल की जाँच भी कम त्रासदीपूर्ण नहीं है जैसे ये ही उसकी पहचान हो गई हो।

महिलाओं के खिलाफ हो रहे अत्याचार को चुपचाप सहने वाले हम ही हैं, पीड़िता को दोष देने वाला पड़ोसी भी हमारे पास है और घटना के बाद माँ-बाप को नसीहत देने वाले रिश्तेदार भी हमारे ही हैं फिर दोषी कोई कैसे हो सकता है?

यह तय है कि इसे रोकना हमें ही है। कानून, प्रशासन और सरकार को अपना काम करने दें। उन पर आरोप लगा कर समय बर्बाद करने का कोई फायदा नहीं। इससे इनकार नहीं है कि घटना के दोषी के खिलाफ तुरंत कार्रवाई होनी चाहिए और उन्हें जल्द से जल्द सजा भी मिलनी चाहिए, ऐसी सजा जिसके बारे में सोचकर भी लोग डरें। पुलिस को भी अपने रवैये में बदलाव लाना होगा क्योंकि अभी भी ऐसे मामलों के केवल 30 प्रतिशत घटनाएँ ही थानों में दर्ज हो पाती हैं।

पुरुष प्रधान इस देश के दोहरी मानसिकता वाले समाज में बेटे-बेटी के दायित्वों और कर्तव्यों की अलग-अलग समीक्षा की जाती है। बेटियों को जितना नसीहत देने में यह समाज जितना सजग रहता है उतना ही अधिक बेटों के प्रति बेपरवाह रहता है। बेटा कहाँ जा रहा है, किस सोसाइटी में उसका उठना-बैठना है, किन

गलत गतिविधियों से जुड़ रहा है इसकी समीक्षा नहीं की जाती। लड़कों को तो बाहर निकलना ही है, यार-दोस्तों से मिलना-जुलना है- जैसी बातें सुन-सुनकर बड़ा होता बेटा अपने दायित्व और कर्तव्यों के प्रति बेपरवाह होता जाता है। जब तक माँ-बाप को अपने बेटों की गलतियों का एहसास होता है तब तक बेटे का कद बाप के कद के बराबर हो जाता है। बड़े बेटे पर सख्ती करना अच्छी बात नहीं समझी जाती, तो वक्त का इंतजार किया जाता है कि वक्त के साथ इसमें सुधार आ जाएगा। कहीं-कहीं तो इस बात का भी विकल्प होता है कि छादी कर दो जिम्मेदारियाँ बढ़ेंगी तो खुद भी सुधार आ जाएगा। उसमें सुधार आएगा या नहीं इस बात पर विचार किए बिना एक मासूम की जिंदगी दाव पर लगा दी जाती है।

बेटियों को नसीहत देने के बजाए बेटों को संस्कार दीजिए, उसे प्रेम करने वाला एक ऐसा संवेदनशील इंसान बनाएँ, जो सजा के डर से नहीं बल्कि अपने संस्कारों की वजह से ऐसे घृणित कामों से खुद को दूर रखे। इस विषय पर सिर्फ एक बार गंभीर और बहुत

गंभीर होकर जरा सोचिए और महिलाओं पर हो रहे अत्याचार के विरुद्ध आवाज उठाइए। सच मानिए कि अगर आपने इस विषय पर नहीं सोचा तो आने वाले वक्त में स्थिति और भी भयावह हो जाएगी और हम आप सिर्फ दोषी को ही ढूँढ़ते रह जाएँगे।

प्रशासन कितना भी चुस्त हो जाए, सरकार कितने भी सख्त कानून बनाएँ महिला उत्पीड़न की घटना में कमी नहीं आने वाली। इसमें कमी लाने का एक ही रास्ता है कि समाज महिलाओं के प्रति अपने नजरिये को बदले। समाज के नजरिये को बदलने के लिए हमें निरंतर अपनी आवाज उठाने की आवश्यकता है। लड़ाई लंबी है। इसे एकजुट होकर लड़ने की जरूरत भी है तो क्यों न हम बेटियों को सुरक्षित करने की इस लड़ाई में शामिल होने के लिए एक बार विचार करें। ●

वरिष्ठ अनुवादक
मंडल रेल प्रबंधक/राजभाषा
पूर्वोत्तर रेलवे, इज्जतनगर

अनुप्रास अलंकार:

जहाँ स्वरों की विषमता होने पर भी व्यंजनों की बार-बार आवृत्ति हो, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है। जैसे-

‘चारु चंद्र की चंचल किरणों, खेल रही थी जल-थल में’

यहाँ प्रथम पंक्ति में ‘च’ की कई बार आवृत्ति हुई है और दूसरी पंक्ति में ‘ल’ की कई बार आवृत्ति हुई है, अतः यहाँ अनुप्रास अलंकार है।

1. तरनि-तनूजा तट-तमाल तरुवर बहु छाए।
2. कूकै लगी कोइलें कंद बन पै बैठि फेरि।
3. कल कानन कुंडल मोरपखा, उर में बनमाल विराजति हैं।

यमक अलंकार:

जहाँ एक ही शब्द की बार-बार आवृत्ति हो, किंतु अर्थ भिन्न हो, वहाँ ‘यमक’ अलंकार होता है। जैसे-

‘कनक कनक ते सौगुनी मादकता अधिकाय। या खाये बौराये जग या पाये बौराय॥’

अर्थात् धतूरे की अपेक्षा सोने का नष्टा सौगुना अधिक होता है, क्योंकि धतूरे को तो खाने से नष्टा होता है और सोने को पाने से ही बड़ा नष्टा (मदमस्ती) हो जाता है।

यहाँ पहले कनक शब्द का अर्थ धतूरा और दूसरे कनक का अर्थ सोना है। अतः यहाँ एक ही शब्द की भिन्नार्थ में आवृत्ति होने से ‘यमक’ अलंकार है।

‘भजन कह्यौ, तातें भज्यौ, भज्यौ न एकौ बार। दूरि भजन गाते कह्यौ, सो तैं भज्यौ गँवार॥’

यहाँ पहले भजन का अर्थ है भजन करना और पहले भज्यौ का अर्थ है भागना और दूसरे भज्यौ का अर्थ है भजन करना तथा दूसरे भजन का अर्थ है भागना। इसप्रकार भिन्नार्थ शब्दों की आवृत्ति से यहाँ ‘यमक’ अलंकार है।

◆ कहानी ◆
कबाड़ बीनने वाली
चंद्रशेखर गुप्त

सूर्योदय हो रहा था।

आकाश में चारों ओर प्रकाश फैल रहा था। मैं प्रातःकाल टहलने की अपनी नियमित दिनचर्या का पालन कर रहा था। मेरे जैसे और भी स्त्री-पुरुष टहल रहे थे। अपने परिचित के मिलने पर हम प्रायः आपस में अभिवादन में नमस्कार कर लेते थे। हम सब सड़क पर ही टहलते थे क्योंकि हमारे घर के निकट में कोई खाली मैदान नहीं था। केवल पार्क ही था। कभी-कभार आराम के लिए सड़क किनारे लगे किसी वृक्ष के नीचे रुक कर बैठ जाते थे।

प्रातः टहलते समय सड़क पर किण्वार अवस्था के लड़के या अधेड़ अवस्था की स्त्रियाँ कबाड़ बीनते हुए दिख जाती थी। ऐसे ही एक दिन एक वृक्ष के नीचे बैठकर एक कबाड़ बीनने वाली रो रही थी। उसका कबाड़ से आधा भरा बोरा बगल में पड़ा था और वह आँसू पोछे जा रही थी। आँसू पोछते हुए आस-पास वह देखे जा रही थी कि रोते हुए उसे कोई देख तो नहीं रहा है।

मैं टहलते हुए वहाँ आ पहुँचा था तथा उसे रोते हुए देख लिया था। मैं अपने-आप को रोक नहीं पाया था तथा उसे सांत्वना देते हुए रोने का कारण पूछा। वह पहले तो खुलना नहीं चाहती थी तथा जब मैंने दबाव दिया तथा कहा कि दुःख कह लेने से हल्का हो जाता है तो वह फफक पड़ी और बतलाना शुरू किया—

उसका नाम फुलवा है तथा उसके अंदर भी एक सपना पल रहा था कि वह भी पूर्ण सुख-सुविधा वाली जिंदगी जिएगी। लेकिन यह सपना छीन्न ही मर गया। केवल पाँच वर्षों तक वह इस सपने को जी सकी फिर तो उसके जीवन में घोर गरीबी ने अपना बसेरा बना लिया। इस समय उसके पास एक पाँच साल का लड़का और तीन साल की एक लड़की है। यही उसके जीवन की संपूर्ण पूँजी है। इस समय वे दोनों झोपड़पट्टी में सो रहे हैं तथा वह कबाड़ बीनने चली आई है। इस कबाड़ से ही उनका पालन-पोषण होता है।

आगे वह अपने अतीत के पन्नों को पलटती हुई कहने लगी कि वह इतनी अधिक गरीब कभी नहीं रही। समय के हाथों मजबूर होकर उसे कबाड़ बीनने का

धंधा अपनाना पड़ा। जब अपनों ने ही उसे बेसहारा और गरीबी का जीवन जीने को मजबूर कर दिया था। उसका भी अपना घर था। उसके पति एक फेरी वाले थे। वह साइकिल पर लादकर सामान बेचा करते थे। इन सामानों में घर-गृहस्थी के उपयोग में आने वाले सामान होते थे। महिलाओं के किचन के लगभग सभी आवश्यक सामान हुआ करते थे। कभी पालिथीन के छोटे-बड़े पैकेट होते थे। कभी हरी-हरी सब्जियाँ होती थी। इन सबसे घर का खर्च आसानी से चल जाता था। हमलोग बहुत खुश तो नहीं थे, परंतु दुःखी भी नहीं थे। घर में और भी लोग थे पर सभी अलग-अलग रहते थे। सभी का चूल्हा अलग-अलग जलता था। अर्थाभाव ने कभी भी घर में प्रेमभाव नहीं पनपने दिया। सभी संघर्षरत रहे। इस संघर्ष ने कभी किसी को खुलकर हँसने, मुस्कुराने और चहकने नहीं दिया।

जिंदगी के दिन ऐसे ही बीत रहे थे कि एक दुःखद खबर मिली कि उसके पति को एक ट्रक ने कुचल दिया है। वे सड़क पार कर रहे थे कि तेज रफ्तार ट्रक ने कुचल दिया था। ट्रक ड्राइवर दुर्घटना होते ही ट्रक लेकर भाग गया। कुछ पता ही नहीं चल पाया कि किस ट्रक वाले ने उसे कुचल डाला था। कोई कुछ नहीं कर सका था। वह आजीवन ट्रक वाले को कोसती रही।

किसी तरह अपने पति का दाह-संस्कार किया। इस दुर्घटना पर कहीं से कोई सलाह-मशविरा, हर्जाना या मुआवजा भी नहीं मिला। इतना ही नहीं अपने क्षेत्र के विधायक या सांसद से भी कोई सहायता नहीं मिली। अपने ही बलबूते उसने सब कुछ संपन्न किया। जो भी जमा-पूँजी थी उसे बहुत ही मितव्ययितापूर्वक खर्च करती रही। फिर भी हाथ खाली हो गए।

समय अपनी गति से आगे बढ़ता गया। बच्चे बड़े होने लगे और घर का खर्च भी बढ़ने लगा। कहीं से कोई ढंग का सहारा नहीं मिला और न तो किसी ने कोई काम-धंधा ही दिलवाया। वह पढ़ी-लिखी तो थी नहीं। अंततः उसे एक कबाड़ वाले ने कबाड़ बीनने का सुझाव दिया। शुरू-शुरू में कई दिनों तक वह इस काम से हिचकिचाई। इस धंधे के लिए उसका ज़मीर बराबर उसे

कोसता रहा। फिर भी समय जो न करा दे। वह इस धंधे को आसान समझ कर अपना चुकी थी और बच्चों की खातिर उसने समय से एक तरह जैसे समझौता ही कर लिया था। तभी से वह कबाड़ का धंधा कर रही है। वह फफक कर रोने लगी थी। उसकी करुण क्रंदन का सैलाव जो वर्षों से रुका हुआ था अब बह चला था।

फुलवा के जीवन की यह करुण कथा सुनकर मेरा मन भी दुःखित हो गया। एक संवेदना जगाकर उसने मेरे पूरे व्यक्तित्व को झकझोर दिया था।

मैंने फुलवा को धीरज बँधाया। बताया कि जीवन में सुख-दुःख तो आते ही रहते हैं। अभी दुःख है तो आगे सुख भी आएगा। मैंने उससे वादा कराया कि

वह कल यहीं पर मुझसे मिलेगी। मैं उसके बच्चों के लिए कुछ कपड़े वगैरह दूँगा जो कि मेरे घर में अनुपयोगी पड़े हैं। कुछ खाने के लिए भी लेता आऊँगा।

इतना कहकर मैं अपने घर की ओर चल दिया और फुलवा उठकर अपने कबाड़ की तलाश में चल दी। ●

भूतपूर्व मुकार्याधी/कार्मिक

मकान नं. 400

जाफरा बाजार

गोरखपुर (उ.प्र.)

संपर्क: 8326345645

राजभाषा नीति के मुख्य बिंदु

- ➔ राज्य सरकारें संविधान के अनुच्छेद 345 के अंतर्गत अपनी राजभाषा निर्धारित करने को स्वतंत्र।
- ➔ संविधान के अनुच्छेद 343 के अंतर्गत केंद्र सरकार की राजभाषा हिंदी, लिपि देवनागरी तथा भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रूप होगा।
- ➔ संविधान के अनुच्छेद 343 के अंतर्गत अंग्रेजी के प्रयोग का प्रावधान संविधान के आरंभ में केवल 15 वर्षों के लिए किया गया था।
- ➔ राजभाषा अधिनियम 1963 के अंतर्गत अंग्रेजी के प्रयोग के प्रावधान को तब तक बढ़ाया गया जब तक वे सभी राज्य जिन्होंने हिंदी को अपनी राजभाषा नहीं अपनाया। वे अंग्रेजी को प्रयोग से हटाने को सहमत नहीं हो जाते हैं।
- ➔ राजभाषा अधिनियम 1963 के अंतर्गत कुछ विशेष दस्तावेज को अनिवार्य रूप से द्विभाषी (हिंदी-अंग्रेजी) में जारी करने का प्रावधान।
- ➔ राजभाषा नियम 1976 के अंतर्गत तीन भाषाई क्षेत्र बनाए गए।
 - क क्षेत्र- हिंदी भाषी क्षेत्र (मुख्यतया हिंदी का प्रयोग)
 - ख क्षेत्र- हिंदी जानने वाला क्षेत्र (हिंदी-अंग्रेजी का प्रयोग)
 - ग क्षेत्र- हिंदीतर क्षेत्र (मुख्यतया अंग्रेजी का प्रयोग)
- ➔ मंत्रालयों/विभागों तथा अधीनस्थ कार्यालयों द्वारा हिंदी का प्रयोग अपेक्षा से कम। अतः राजभाषा विभाग द्वारा समय-समय पर हिंदी के प्रयोग संबंधी निर्देश जारी किए जाते हैं।
- ➔ राजभाषा नीति केवल केंद्र सरकार के कार्यालयों पर लागू है।
- ➔ राजभाषा नियम 1976 तमिलनाडु पर लागू नहीं है।
- ➔ राजभाषा नीति प्रेरणा और प्रोत्साहन पर आधारित है।

◆ कहानी ◆
छोटी सी भूल
सुष्मिल कुमार सिंह

श्री रामजीत यादव (काल्पनिक)

के जीवन में सब कुछ सामान्य ढंग से चल रहा था। वह पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर में ड्राइवर के पद पर कार्यरत थे। उनके दोनों पुत्र अच्छे इंजीनियरिंग कालेज में पढ़ रहे थे तथा दोनों पुत्रियों का विवाह अच्छे घर में हुआ था। समाज में उनकी प्रतिष्ठा ईमानदार, कर्तव्यनिष्ठ और भले इंसान के रूप में होती थी, परंतु एक छोटी सी घटना ने उनके जीवन में भूचाल सा ला दिया। सब कुछ तहस-नहस हो गया।

घटना दिनांक 07.10.2014 की है। यादव जी सुबह 05.30 बजे ड्यूटी साइन आन करके गोरखपुर से पैसेंजर लेकर नौतनवा आये थे तथा वापसी में 03068 डाउन नौतनवा-हावड़ा सद्भावना एक्सप्रेस नौतनवा से लेकर चले थे। उनके साथ सहायक ड्राइवर में श्री अमित कुमार जैन (काल्पनिक) तथा गाड़ी के पीछे गार्ड के रूप में श्री रमेश कार्यरत थे।

गाड़ी चलाना शुरू करने से पहले कांटीन्यूटी टेस्ट में यादव एवं गार्ड रमेश (काल्पनिक) ने सतर्कता नहीं बरती तथा 190 मीटर दूर आने पर ब्रेक टेस्ट भी ठीक ढंग से नहीं किया। सेक्शन में उन्होंने ब्रेक पावर टेस्ट भी नहीं किया जबकि गाड़ी को लक्ष्मीपुर में रोकना पड़ा तब जाकर पता चला कि गाड़ी में ब्रेक नहीं लग रहा है। खैर किसी तरह गाड़ी लक्ष्मीपुर में खड़ा किए तथा स्टार्ट करके धीरे-धीरे आनंदनगर तक आए क्योंकि वहाँ पर ठीक करने के लिए कैरेज स्टाफ उपलब्ध नहीं था। आनंदनगर तक पहुँच कर यादव जी ने स्टेशन मास्टर, आनंदनगर को सूचित किया। जाँच करने पर पता चला कि लोको सं. 16065 डब्लू.डी.एम.3ए/समस्तीपुर में एफ.पी. एंगिल कॉक को सफेद की जगह हरे रंग से रंगा होने के कारण एफ.पी. को बी.पी. समझने के कारण नौतनवा स्टेशन पर कैरेज स्टाफ की सहायता से फटा पाइप बदलवाया जिसके कारण गलत पाइप का संयोजन रैक के साथ हुआ था, परिणामस्वरूप गाड़ी में ब्रेक नहीं लग रहा था।

भगवान का शुक है कि कोई बड़ा हादसा नहीं हुआ। इन्होंने ईमानदारी से इस भूल की रिपोर्ट ऊपर के

अधिकारियों तक कर दिया। मुख्यालय द्वारा इसकी जाँच कनिष्ठ प्रशासनिक ग्रेड के तीन अधिकारियों की समिति को सौंपा गया।

जाँच समिति ने गहन जाँच पड़ताल करने के पष्ठचात् यह पाया कि गोरखपुर में इंजन का चार्ज लेते समय यदि चालक दल द्वारा सतर्कता बरती जाती तो बी. पी. पाइप का खराब होना प्रकाश में आ जाता तथा डीजल मैकेनिक की मदद से सही पाइप सही प्रकार से लगाया जाना सुनिश्चित होता। नौतनवा में श्रॉटर, लोको पायलट, सहायक लोको पायलट ने भी सतर्कता का परिचय नहीं दिया और जो कसर बाकी था उसे गार्ड ने अपनी लापरवाही से पूरा कर दिया। यदि गाड़ी को कहीं आपात्कालीन परिस्थितियों में रोकना पड़ता तो भयंकर दुर्घटना हो सकती थी तथा बहुत अधिक जान-माल की क्षति होती। रेल प्रशासन की क्षति के साथ उसकी छवि भी खराब होती।

जाँच समिति ने अपने निर्णय में बताया कि उक्त घटना के लिए लोको पायलट श्री रामजीत यादव एवं समाडि तकनीशियन श्री कमल सिंह (काल्पनिक) प्राथमिक रूप से उत्तरदायी हैं क्योंकि इन्होंने एफ.पी. एवं बी.पी. पाइप सही प्रकार से लगा होना सुनिश्चित नहीं किया। हमारे विचार से तकनीशियन श्री कमल सिंह के स्थान पर उनके पर्यवेक्षक को उत्तरदायी ठहराना उचित रहता क्योंकि अधीनस्थ कर्मचारी द्वारा किए गए कार्य की जाँच करना पर्यवेक्षक का काम होता है।

गार्ड श्री रमेश को कांटीन्यूटी टेस्ट को सतर्कतापूर्वक न करने तथा सहायक ड्राइवर को सतर्क न रहने के कारण द्वितीयक रूप से जिम्मेदार ठहराया गया। अतः इन्हें भी प्राथमिक रूप से जिम्मेदार होना चाहिए था। रिपोर्ट मिलने के बाद श्री यादव को डाउन ग्रेड करके सहायक ड्राइवर बना दिया गया। उनका वेतन आधा हो गया। घर में परेष्ठानियों का अंबार लग गया। बच्चों की पढ़ाई बीच में ही लटक गयी तथा घर में क्लेश बढ़ गया। अब यादव की समझ में नहीं आ रहा है कि क्या करे और अपनी गलती के लिए पष्ठचाताप करने के सिवाय कुछ भी नहीं कर सकते थे।

मैं सभी रेल कर्मचारियों (गाड़ी चलाने के लिए सौंपी गई जिम्मेदारी को पूरी ईमानदारी, सतर्कता और प्रत्यक्ष रूप से जिम्मेदार) को संरक्षा सलाहकार/कैरेज व लगेन से करने का प्रयास करना चाहिए। ●

संरक्षा सलाहकार/समाडि
पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर
संपर्क: 9794840918

से पहले अपनी गाड़ी की जाँच बहुत ही सावधानी से करें, क्योंकि हमलोगों पर बहुत से लोगों के जान-माल की सुरक्षा की जिम्मेदारी होती है।

अतः हम सभी रेल कर्मचारियों को प्रशासन द्वारा

लेखकों/रचनाकारों से निवेदन

‘रेल रश्मि’ में प्रकाशनार्थ रेल से संबंधित विषयों पर तकनीकी/ गैर-तकनीकी लेख, कहानी, कविता, गज़ल, संस्मरण, यात्रा-वृत्तान्त, योग, अध्यात्म आदि अनेकानेक विधाओं/विषयों पर स्तरीय रचनाएँ आमंत्रित की जाती हैं। रचनाओं पर उचित मानदेय देने की भी व्यवस्था है। कष्टया नोट करें कि रचनाएँ टाइप की हुई अथवा कंप्यूटर के माध्यम से स्वच्छ टंकित की हुई अवश्य हो। रचना हार्ड कापी के साथ सी.डी./पेन ड्राइव/मेल के द्वारा भी दी जा सकती है। रचना कागज के एक ही ओर दोनों तरफ पर्याप्त हाशिया छोड़ कर लिखें और दो पंक्तियों के बीच पर्याप्त स्थान अवश्य छोड़ें। रचना स्पष्ट और सुपाठ्य हो। रचना को भेजने से पूर्व एक बार पढ़कर पाठ अवश्य शुद्ध कर लें और मूल प्रति ही भेजें। रचनाओं के साथ इस आशय का प्रमाण/घोषणा पत्र भी होना चाहिए कि यह लेख/रचना लेखक/रचनाकार की मौलिक कृति है और यह इससे पहले प्रकाशित नहीं हुई है। रचना के साथ पिन कोड संख्या व संपर्क नंबर अवश्य उद्धृत करें।

कई रचनाएँ एक साथ न भेजें। साथ ही रचना एक से दो फुल स्केप के आकार के पृष्ठों से अधिक न हो। यदि किसी कारणवश किसी रचना को पत्रिका में शामिल करना संभव न हुआ तो उसे लौटाया नहीं जाएगा।

रचनाएँ निम्न पते पर भी भेज सकते हैं-

संपादक
रेल रश्मि
केंद्रीय हिंदी अनुभाग
मुकाधि कार्यालय, पूर्वोत्तर रेलवे
गोरखपुर-273012
ईमेल: seniorol9@gmail.com



जानवर भी करते हैं सेवा और सहायता के कार्य

महेंद्र सिंह श्रेखावत 'उत्साही'

किसी की सहायता करना,

किसी के कार्य में हाथ बँटाना, किसी की सेवा करना अथवा मदद करना मनुष्य का प्रमुख कर्तव्य और धर्म माना जाता है। किंतु जब ऐसा ही कोई कार्य किसी जानवर के द्वारा किया जाए तो यह हमारे लिए कितनी प्रेरणास्पद, सोचनीय, विचारणीय, अनुकरणीय तथा हृदयग्राही बात होगी। ऐसे ही कुछ उदाहरण यहाँ पर प्रस्तुत किए जा रहे हैं-

जब बिल्ली ने बचाई एक बच्चे की जान

मास्को की एक सोसायटी में बहुधा एक बिल्ली आया करती थी। यहाँ के कुछ लोगों द्वारा इस बिल्ली को खाने-पीने की कुछ चीजें डाली जाती थीं। सर्दी की एक रात में यहाँ कोई अपने एक नवजात शिशु को लावारिष्ठ छोड़ गया। सर्दी से काँपता वह नवजात शिशु जोर-जोर से रोने लगा। जब बिल्ली ने उस नवजात शिशु को रोते हुए देखा तो वह उसके पास गई और उसे पूरी रात भर अपने गले से लगा कर रखा ताकि उसे सर्दी न लगे। इस तरह इस बिल्ली ने उस नवजात शिशु के प्राण बचा लिए। जब सुबह लोगों ने यह देखा तो सबके आश्चर्य की कोई सीमा ही न रही।

शेरनी ने बचाई एक हिरण के बच्चे की जान

हाल ही में एक ऐसा समाचार सामने आया है कि एक खेत में टहल रहे एक हिरण के बच्चे पर एक शेर ने जब हमला बोला तो एक शेरनी उसके बीच में आकर उस हिरण के बच्चे को बचा लिया और इसके उपरांत काफी देर तक उसका लाड़-दुलार भी किया।

बंदर यहाँ वेटर का कार्य करते हैं

जापान की राजधानी टोक्यो स्थित काबुकी रेस्टोरेंट में सन् 2008 से येटचेन तथा फुकुचेन नाम के दो बंदर ही वेटर का कार्य करते आ रहे हैं। ये दोनों बंदर ग्राहक को कुर्सी (चेयर) देते हैं, टॉवेल देते हैं, ग्राहक से आर्डर लेते हैं और आदेशों का अनुपालन करते हैं। ये दोनों बंदर इतनी आत्मीयता से ग्राहक की सेवा करते हैं कि प्रत्येक ग्राहक न केवल खुश होता है, बल्कि इनसे बहुत प्रभावित भी होता है।

मालिक का सच्चा सेवक कुत्ता-लेमन द जायंट नौजर

रूस के ओमस्क नामक कस्बे में अलेक्जेंडर

मार्टिसन नाम के एक किसान रहते हैं जो भूतपूर्व सैनिक हैं। इनके पास लेमन द जायंट नौजर नाम का एक कुत्ता है जो इनके खेती के कार्य में इनकी पूरी-पूरी मदद करता है। यह कुत्ता हैंडपंप से पानी निकालने, खेतों की जुताई करने, बुआई करने, फसलों में पानी देने जैसे कई प्रकार के छोटे-मोटे कार्य वह स्वयं करके अपने मालिक की पूरी-पूरी सहायता करता है।

जब एक घोड़े ने दी अपनी मालकिन को अंतिम बिदाई

ब्रिटेन के मैनचेस्टर शहर के पास बाइकरशॉ नाम का एक कस्बा है। यहाँ विगेन रॉयल नाम का एक अस्पताल है। इस अस्पताल में 77 वर्षीय श्रीला मार्श नाम की एक महिला भर्ती थी और अपनी अंतिम साँसें ले रही थी। जब इनसे इनकी अंतिम इच्छा पूछी गई तो श्रीला मार्श ने अपने प्रिय घोड़े ब्रानवेन से मिलने के लिए कहा। इनके प्रिय घोड़े ब्रानवेन को जब इनके पास लाया गया तो ब्रानवेन ने अपनी नम आँखों से इनके सिर को चूमने लगा। मानों वह अपनी मालकिन से कह रहा हो- गुड बाय! यह दृश्य देखकर पास खड़े सब लोगों की आँखें नम हो गई थी।

जब एक कुत्ते ने बचाई अपनी मालकिन की जान

पेरिस में रहने वाली एक 70 वर्षीय महिला अपनी बीमारी से तंग आकर एक दिन आत्महत्या करने की सोच बैठी। उसने अपना पिस्तौल उठाया और अपनी कनपटी पर रखकर फायर करने को तैयार हो गई लेकिन उसके फायर करने से पूर्व ही उसके पालतू कुत्ते ने झपट्टा मारकर अपने मालकिन के हाथों से पिस्तौल को गिरा दिया। इससे मालकिन के प्राण बच गए। यह देखकर मालकिन ने आत्महत्या का मानस ही बदल दिया और अपने कुत्ते को गले से लगा लिया।

इसप्रकार के अन्य कई उदाहरण जगह-जगह पर देखने को मिलते हैं जो यह सिद्ध करते हैं कि मानव ही नहीं बल्कि जानवर भी सेवा भावी होते हैं और वे दया, करुणा और मानवता के पुजारी भी हो सकते हैं। ●

उत्साही प्रकाशन

76-ए, कैलाश नगर, गली नं. 16

झोटावारा, जयपुर-302012 (राजस्थान)

संपर्क: 8058362384

◆ एकांकी ◆
बन गया काम
सूर्या सुधांशु श्रेखर

(रमा रूपहली-सजीली

साड़ी पहनकर सज-धजकर घर से निकलने ही वाली होती है कि उसकी सास पार्वती टोक बैठती है।)

पार्वती: अरी बहू, इतनी सज-धज के साथ सुबह-सवेरे किधर बिजली गिराने को निकल पड़ी है रानी जी की सवारी?

रमा: टोक दिया न! मनहूस जबान से टोकने का नतीजा तो सामने आकर ही रहेगा। अब जहाँ जाऊँगी, वहाँ या तो आदमी नहीं मिलेगा, या यदि मिल भी गया तो काम नहीं बनेगा।

पार्वती: अरे, पता तो चले कि कैसा काम? कौन-सा काम?

रमा: जैसे कि आपको तो कुछ पता ही नहीं! अरे, इतनी भीषण महँगाई है कि दाल और मुर्गी दोनों सौ रुपये प्रति किलोग्राम की दर से बिक रही हैं.... अब इस महँगाई के दौर में तो जो दाम किसी चीज का बढ़ा, वह घटकर नीचे तो उतरने से रहा। ऐसे में क्या एक आदमी की कमाई से घर का खर्च चलने वाला है? इसीलिए मैंने सोचा कि निकलूँ दो-एक जगह पता करूँ। कुछ काम-धंधा मिल जाए तो....

पार्वती: घर में तो तू कुछ करती नहीं। बर्तन-चौके दाई ही धो-माँज जाती है। खाना मैं पका देती हूँ। कपड़े धोने के लिए धोबन ही आती है। फिर तू भला कौन-से पत्थर कूटने के काम करेगी घर से बाहर निकल कर?

रमा: जब पढ़ी-लिखी नहीं हैं आप; तब भला क्या जानेंगी पढ़ी-लिखी महिला होने का लाभ? अरे, घर से जब निकलूँगी, तभी तो कोई मन-माफिक काम कहीं मिलेगा। बी.एड., बी.टी.सी. नहीं हूँ तो क्या, पाँचवीं-दसवीं तक के बच्चों को पढ़ाने की कूबत तो है ही मुझमें....

पार्वती: खूब समझती हूँ तेरी कूबत को। अरे, तेरी तो सारी की सारी कूबत लगती है साज-सिंगार और सजने-सँवरने में.... पति की सारी कमाई का एक बड़ा हिस्सा तो तेरे साज-सिंगार की भेंट ही चढ़ जाता है.... हर महीने का यही किस्सा है तेरे साथ....

रमा: सजती-सँवरती हूँ मैं, तो अपने पति की कमाई से। अगर गुलछर्रे उड़ाती हूँ तो अपने पति की कमाई की

बदौलत। किसी की छाती क्यों फटे?... क्यों जले किसी की आत्मा? आखिर अपने पति की कमाई मैं नहीं उड़ाऊँगी तो क्या मेरी सौतन आएगी उड़ाने और उनकी कमाई पर सजने-सँवरने (गुनगुना उठती है) सजना है मुझे सजना के लिए.... सजना है मुझे, सजना के लिए....

पार्वती: हुँह! बड़ी आयी सजना के लिए सजने वाली.... हम तो बस, आकाष्ठा से टपके थे.... मेरा बेटा बेचारा हाड़ तोड़कर मेहनत करे और घर फूँककर तमाशा देखे ये छम्मक-छल्लो....! धर्म भी नहीं आती....! और कोई होती तो....

रमा: क्या करती और कोई होती तो....? समझ ले कि वह कोई और भी मैं ही हूँ, तो....

पार्वती: देख, मुझसे बुरा कोई न होगा। लगा दूँगी आग तेरे इन लंबे-लंबे झोटों में....

रमा (तड़प कर): देखो बाई, सास के तौर पर अभी तक आपकी इज्जत करती चली आ रही हूँ। अपनी बेइज्जती कराने की दावत मत दो मुझे....

पार्वती: ओह, क्या कर लेगी तू? आने दे जराष्ठ्याम को। फिर वही बताएगा तुझे....

(एक घना कोहराम होते-होते बचा, किंतु जैसे यह थी तूफान आने से पहले की खामोशी। कुछ देर के बाद घर में आया पार्वती का बेटा और रमा का पतिष्ठ्याम। घर में आकर वह कपड़े बदलने के पूर्व हाथ-मुँह धोने लगा।)ष्ठ्याम: (हाथ-मुँह धोने का अभिनय करते हुए): अरे माँ, आज तो पैदल चलते-चलते मेरे पाँव ही दुखने लगे। बहुत ही जोर की भूख भी लगी है। क्या-क्या बनाया है आज खाने में?

पार्वती: बिटुवा, आज तो मैंने खाना अभी तक कुछ भी नहीं बनाया है। अपनी लाडो रानी से कहो कि आज वही बनाए तुम्हारे और अपने पसंद का खाना....।

ष्ठ्याम: तुम दोनों की आये दिन की किच-किच से तो मैं अब परेष्ठान हो गया हूँ.... अब इस समय इतनी तेज लगी है भूख कि या तो अपने किसी दोस्त के घर जाकर खाना खाऊँ या फिर ढाबे में; नहीं तो खुद ही खिचड़ी-चोखा बना खाकर तृप्त हो लूँ....।

रमा (बिसूरती हुई): सच मानो, मेरा कोई कुसूर नहीं है। मैं तो कपड़े बदलकर कहीं कोई काम-धाम खोजने के इरादे से बाहर निकल ही रही थी कि इन्होंने टोक-टाक कर अपने तीर चलाने शुरू कर दिए....

ष्ठायम (चिढ़कर): और तेरे बदन पर सत्तर घाव हो गए। अरे, काम-धाम कुछ करना तेरे वृष्ठा का है नहीं। रेलवे में चपरासी की नौकरी भी बिना वांट और योग्यता परखे नहीं मिलती। स्कूलों की नौकरी में भी अच्छे-भले एम. एस.सी., बी.एड., बी.टी.सी. तक को दस-बारह हजार रुपये के चेक पर दस्तखत कराके महज दो-ढाई हजार रुपये पकड़ा दिए जाते हैं.... खुली लूट की छूट है हर जगह। हर जगह पर चलती है सोर्स-सिफारिष्ठा, जान-पहचान। है कुछ इनमें से तेरे पास?... घर में बैठकर ढंग से रहा करो। तुम दोनों.... मेरी भी कमाई कुछ कम नहीं है.... घर में श्वांति तो बनाये रखो दोनों, ताकि मेरा दिमाग खराब होने से बचा रहे....

पार्वती: अच्छा, ले। यह पेठा खाकर पानी पी ले बेटा.... मैं अभी बना देती हूँ तेरे लिए खिचड़ी-चोखा....।

ष्ठायम: यह सब बनाकर तुम लोग खाओ-खिलाओ.... मैं जाकर पास के ढाबे से आता हूँ कुछ खा-पीकर।

पार्वती: पीने-पिलाने मत लगना ढाबे पर बेटे, तेरे कुछ साथी वहाँ दारु भी पीते-पिलाते हैं.... मुझे किसी ने बताया था....

ष्ठायम: वे मेरे साथी नहीं हैं माँ.... तू तो जानती है कि मैं किसी भी तरह के नष्टो-पानी से दूर रहता हूँ.... बड़ी ही तेज भूख लगी है.... वरना....(कहकर निकल जाता है समीपवर्ती ढाबे की ओर)

(अगला दृश्य: ढाबा)

मोहन: आओ ष्ठायम, आओ!.... बहुत दिनों के बाद दिखे हो तुम आज ढाबे में....

राधे: अरे यार, यह तेरा मुँह क्यों उतरा और सूजा हुआ है? क्या किसी ने कुछ कह दिया है या कि बीबी ने घर से निकाल बाहर कर दिया है।

मोहन: अरे यार, महज तीन-चार महीने ही तो हुए हैं तेरी श्वादी को। घर से निकलने-निकालने की नौबत भी आ गई। पटती नहीं क्या तेरी अपनी घरवाली से? अरे, कभी-कभी कुछ गिफ्ट भी ले जाया कर-तोहफा और नहीं कुछ, तो फूलों वाला एक गजरा ही ले लिया कर।

ष्ठायम: गजरा-वजरा नहीं यार, मैं तो परेष्ठान हूँ इस बात से कि मेरी बीबी और माँ में अक्सर झगड़े होते रहते हैं।

बेबात, बेसिर-पैर.... बस, यही समझ लो कि सिर फुटव्वल भर नहीं होती। बाकी सब कुछ हो जाता है। कभी वह भी हो जाएगा यानी कि सिर फुटव्वल।

मोहन: अरे यार ष्ठायम, अभी नया-नया मामला है तुम्हारा। सच जानो, कुछ दिनों के बाद सब ठीक हो जाएगा।

ष्ठायम: मैं तो सोच रहा हूँ कि घर जाना ही छोड़ दूँ और सन्यास ही ले लूँ। मेरा दुर्भाग्य है कि जिससे बचने का कोई रास्ता ही नजर नहीं आ रहा है....

राधे(वेटर से): अरे यार, एक जगह खाना और लगाना.... हमें अब यहाँ से चलकर रिहर्सल भी तो करनी है अपने नाटक की....

ष्ठायम: मैं भी चलूँ क्या तुम लोगों के साथ....?

मोहन: अरे नहीं यार, तू कहाँ भटकता फिरेगा हमारे साथ? यहाँ से खाना खाकर घर जा.... सब ठीक हो जाएगा तेरे यहाँ.... इधर भी साल-दो साल में प्रेक्षागृह बनकर तैयार हो जाएगा। श्वासन की मदद भी मिलने वाली है। कानूनी अड़चनें भी दूर हो गयी हैं....

राधे: हाँ यार, जब मोहन ने कह दिया कि सब ठीक हो जाएगा तो समझ ले कि अब बन जाएगी तेरी बात। हो जाएगा अब जल्दी ही तेरा काम।

(रात का दृश्य। सास-बहू और ष्ठायम सो रहे हैं। इसी बीच, पिछवाड़े के हिस्से में बने कुँए में जोरदार धमाके की एक आवाज गूँजती है।)

पार्वती: क्या हुआ? कैसी आवाज है यह?

रमा: अरे, वह उधर कुँए के जगत पर बैठे कौन हैं दो-दो जनें? आदमी हैं, चोर हैं कि भूत....?

पार्वती: अरे, भ....भ....भूत।

पहला भूत: अरे, अरे, डरो नहीं, हम भूत जरूर हैं लेकिन खराब वाले नहीं, भलमनसाहत वाले, अच्छे स्वभाव वाले भूत हैं।

दूसरा भूत: हाँ चाहो तो देख लो हमारे हाथ की पोतली। इसमें खूब ढेर सारे गहने और जेवर हैं.... हमको ये गहने इंद्रासन पांडेय ने दिया है.... श्वांति यह है कि पोतली के गहने सिर्फ ऐसी सास-बहू को ही दिए जा सकते हैं जो आपस में लड़ती नहीं हो....। वैसे तुम दोनों भी तो सास-बहू ही हो। हमें तो लगता है कि तुम दोनों के भीतर आपस में प्रेम व्यवहार भी खूब ज्यादा है।

रमा: लेकिन तुम लोग तो भूत हो।

पहला भूत: भूत भी तो दो तरह के होते हैं- खराब वाले तो लोगों को खूब परेष्ठान करते हैं लेकिन हम हैं अच्छे

वाले भूत। हम इंसानों का सदैव भला ही करते हैं। बस, तुम लोग यह समझ लो कि खुदाई खिदमतगार हैं हम। दूसरा भूत: डरो मत हमसे.... खार भी मत खाओ हमसेहमसे है यह जमाना.... जमाने से नहीं हैं हम.... हम तुम दोनों को पोटली तभी देंगे जब देख लेंगे कि तुम दोनों के बीच वाकई खूब गहरा प्यार है।

पार्वती: अरे, रमा मेरी बहू जरूर है किंतु इसको अपनी बेटी से भी बढ़कर मानती हूँ। क्यों बेटी रमा, है न?

रमा: और नहीं तो क्या माँ जी....! मैं भी तो आपको अपनी माँ के ही जैसी इज्जत और सम्मान देती हूँ। है कि नहीं? आप यदि धूप में भी खड़ी कर दें तो घंटों खड़ी रहूँ। भारी बरसात में घंटों भीगती रहने को कह दें तो घंटों-घंटों भीगती रहूँ....

पार्वती: लेकिन मैं कोई डॉक्टर बेरी की मरीज हूँ क्या जो तुझको ऐसे उल्टे-सीधे हुक्म सुनाती फिरूँ? हाँ, तो भूत भइया, तुम चाहो तो हफ्ते-महीने-दो महीने के बाद फिर आकर देख लेना.... हमारे बीच का प्यार आपस में इसी तरह से गहरा और गहरा ही मिलेगा।

दोनों भूत: अच्छा, ठीक है। अगले महीने की अमावस्या के रोज रात में दो बजे हम दोनों फिर आएँगे गहनोवाली पोटली लेकर। तब तक तुम दोनों इसी तरह आपस में खूब प्यार के साथ रहना....

रमा और पार्वती: ठीक है भूत महाराज। हम दोनों ही आप लोगों का इंतजार करेंगी। खूब बेसब्री के साथ....

(संगीत की कर्णप्रिय ध्वनि के साथ दृश्य परिवर्तन)

रमा: माँ जी, आज फिर अमावस्या है न? याद है न कि आज रात में दो बजे क्या होगा?

पार्वती: जाने दो बहू। अब भूत आये और आकर गहनो की पोटली दे तो वाह-वाह; न दे तो भी वाह-वाह.... क्योंकि अब इस एक महीने के भीतर हम दोनों के बीच बढ़ी प्यार की गंगा में तो जैसे मन का सारा पाप, सारी

कालिमा ही धुल गई है....

रमा: बशर्ते कि बहू, खुशहाली के साथ आती हो.... अपने मन का सोचा हो जाए तो अच्छा। न हो तो और भी अच्छा, क्योंकि वह होती है परमेश्वर की, मालिक की मर्जी.... अब पता नहीं कि दोनों भूत यहाँ आते भी हैं या नहीं....

रमा: चलिये, चलते हैं वहीं कुँए के पास....।

पार्वती: चलो, तुम कहती हो, तो बैठते हैं चलकर वहीं....

(दोनों जाकर कुँए के समीप बैठती हैं)

पार्वती(झपकी लेकर): अरे, मुझे तो नींद आ रही है।

रमा (जम्हाई के साथ): हाँ, मुझे भी।

(घड़ियाल से दो के घंटे बजते हैं। फिर तीन के और चार के घंटे बजते-बजते रमा और पार्वती अपनी-अपनी जगह पर लुढ़क जाती है। संगीत के साथ भोर की उजास फैलती है।)

पार्वती: अरे बेटी, भोर हो गई.... आँधियारा खत्म....

रमा: अरे सासू जी, दोनों भूत तो आये ही नहीं.... गहनो की पोटली भी हमें नहीं मिली....

पार्वती: चलो, भूतों के चलते हमारे बीच का प्यार तो पनप उठा.... उन दोनों को हम दोनों से ज्यादा काबिल मिल गए होंगे....

रमा: हाँ, चलिए। एक बहुत बड़ा काम हो गया। अब तो मैं भी कहीं नौकरी खोजने के लिए निकल सकती हूँ?

पार्वती: अरे, फिर वही तेरे ढाक के तीन पात?

(समवेत हँसी के साथ पटाक्षेप) ●

मकान नं. 328

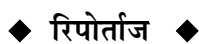
सूर्यविहार कालोनी

गोरखपुर-273015

संपर्क: 9451202409

पाँव रक्खें तो कहाँ रक्खें बताएँगे हुजूर
आपकी धरती तो इतनी दलदली पहले न थी।
अब तो यमुना के किनारे भी बहुत वीरान हैं
कष्ट तेरी बाँसुरी यूँ बेसुरी पहले न थी।
जिंदगी जब-जब भी आएगी मेरी दहलीज पर
मांगकर मुझसे वो थोड़ा हौसला ले जाएगी।

नूर मुहम्मद नूर



नेपाल में आये भीषण भूकंप से पीड़ितों के सहायतार्थ

पूर्वोत्तर रेलवे के अविस्मरणीय कदम

आलोक कुमार सिंह

शुनिवार 25 अप्रैल, 2015

को लोग अपनी-अपनी दिनचर्या में लगे हुए थे। कोई घर में था, कुछ लोग सड़कों पर अपने वाहनों से फरारि भर रहे थे, बच्चे स्कूलों में थे कि अचानक दिन में लगभग 11.41 बजे धरती में कंपन शुरू हुआ और लोग घबराहट में अपने-अपने घरों से बाहर निकले। बाहर का नजारा देखने लायक था। मकान, बिजली के खंभे, वाहन, पेड़-पौधे आदि हिल रहे थे। चारों ओर अफरा-तफरी का माहौल था। मोबाइल फोन काम करना बंद कर दिया। टीवी, रेडियो से खबरें आने लगीं कि पड़ोसी देश नेपाल में भीषण भूकंप आया है और जान-माल का भारी नुकसान हुआ है।

नेपाल में भीषण भूकंप से वहाँ की मानवता पूरी तरह से कराह उठी। हालाँकि इसका प्रभाव नेपाल से सटे उत्तर प्रदेश एवं बिहार के निकटवर्ती जिलों पर अधिक पड़ा। इस दौरान लोगों में इतना भय था कि कोई अपने घरों में रात में सोने को तैयार नहीं था। बढ़नी एवं नौतनवा के लोगों के अनुरोध पर स्टेशन के सर्कुलेटिंग एरिया में लाइट एवं पानी की व्यवस्था कर उन्हें रहने की सुविधा दो दिनों तक दी गयी। लोग इससे उबरने की कोशिश कर ही रहे थे कि अगले दिन यानी 26 अप्रैल, 2015 को देर सायं पूर्वोत्तर रेलवे मुख्यालय में सूचना प्राप्त हुई कि लगभग 250 व्यक्ति नेपाल से भूकंप की त्रासदी को झेलकर गोरखपुर जंक्शन रेलवे स्टेशन पहुँच रहे हैं। इस सूचना पर पूर्वोत्तर रेलवे के महाप्रबंधक श्री राजीव मिश्र ने तत्काल वरिष्ठ रेल अधिकारियों को उनकी हर संभव सहायता एवं उन्हें यात्रा सुविधा उपलब्ध कराने का निर्देश दिया।

पूर्वोत्तर रेलवे के वरिष्ठ अधिकारियों ने महाप्रबंधक के उक्त आदेश को तत्काल अमलीजामा पहनाते हुए गोरखपुर रेलवे स्टेशन पर 'भूकंप आपदा राहत सहायता केंद्र' खोला और वहाँ पर हेल्प लाइन नंबर 0551-2204893 (बी.एस.एन.एल.) तथा दूरभाष संख्या 65937 (रेलवे) स्थापित कराया। इसके साथ गोरखपुर रेलवे स्टेशन पर

चिकित्सा सहायता हेतु मेडिकल बूथ की स्थापना के साथ ही एंबुलेंस की सुविधा भी उपलब्ध कराई गई। गोरखपुर स्थित ललित नारायण मिश्र रेलवे चिकित्सालय के साथ अन्य रेलवे चिकित्सा केंद्रों को भी भूकंप प्रभावित व्यक्तियों को हरसंभव चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराने हेतु हाई एलर्ट रखा गया। इसी प्रकार नौतनवा एवं बढ़नी रेलवे स्टेशनों पर भी 24 घंटे कार्यरत भूकंप आपदा राहत सहायता केंद्र खोला गया। भूकंप पीड़ितों को उनके गंतव्य तक ट्रेन से भेजने का कार्य प्राथमिकता के आधार पर किया गया।

गोरखपुर रेलवे स्टेशन पर अपने गंतव्य को जाने हेतु पहुँचे भूकंप पीड़ित व्यक्तियों के चेहरे पर भय एवं निराशा के मिश्रित भाव स्पष्ट दिख रहे थे। उनमें से दिल्ली एवं जयपुर की ओर जाने वाले यात्रियों की सुविधा के लिए 19270 मोतिहारी-पोरबंदर एक्सप्रेस एवं 15279 सहरसा-दिल्ली पुरबिया एक्सप्रेस में सामान्य श्रेणी का कोच लगाकर उन्हें उनके गंतव्य तक भेजा गया और अगले दिन 27 अप्रैल, 2015 को प्रातः 15015 गोरखपुर-यष्टावंतपुर एक्सप्रेस में भूकंप पीड़ितों के लिए साधारण श्रेणी का एक अतिरिक्त कोच लगाकर भेजा गया। कोचों में बैठने के बाद इन भूकंप पीड़ितों के चेहरे पर संतोष के भाव देखे जा सकते थे। गुजरात के चालीस बच्चों का दल जो नेपाल के मेडिकल कालेज के छात्र थे, जब उन्हें पोरबंदर एक्सप्रेस में लगे अतिरिक्त कोच में बैठाया गया तो उनके चेहरों की खुशी देखने लायक थीं। उनके मुस्कराते चेहरों ने सभी उपस्थित रेलवे कर्मचारियों को इतना गौरवान्वित किया कि उसके बाद सहायता का यह सिलसिला अगले 9 दिनों तक चलता रहा। 29 अप्रैल, 2015 को 11056 गोरखपुर-लोकमान्य तिलक टर्मिनस, गोदान एक्सप्रेस में साधारण श्रेणी का 01 कोच, 15018 गोरखपुर-लोकमान्य तिलक टर्मिनस एक्सप्रेस में साधारण श्रेणी के 02 अतिरिक्त कोच लगाये गये। 26 अप्रैल से 05 मई, 2015 तक गोरखपुर स्टेशन पर नेपाल से भूकंप पीड़ितों के आने का क्रम बना रहा।

नेपाल से गोरखपुर आकर देश के विभिन्न भागों में जाने वाले भूकंप पीड़ितों की जानकारी हेतु वरिष्ठ रेल अधिकारी, गोरखपुर जिला प्रशासन के निरंतर संपर्क में बने रहे। जिला प्रशासन ने भूकंप पीड़ितों के सहायतार्थ दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विष्ठविद्यालय में एक राहत केंद्र की स्थापना की थी। यहाँ पर आने वाले भूकंप पीड़ितों की मदद के लिए रेलवे प्रशासन ने गाड़ियों की समय-सारणी एवं इलेक्ट्रानिक ट्रेन डिस्प्ले बोर्ड स्थापित कराया, जिसकी सर्वत्र प्रशंसा हुई।

पूर्वोत्तर रेलवे प्रशासन द्वारा गोरखपुर स्टेशन से 26 अप्रैल से 05 मई, 2015 तक कुल 3, 639 नेपाल से आये भूकंप पीड़ितों को देश के विभिन्न भागों में स्थित उनके गंतव्य विभिन्न ट्रेनों से निःशुल्क भेजा गया। इन यात्रियों को यू.टी.एस. से 3034 जीरो वैल्यू के टिकट जारी कर उपलब्ध कराए गए। भूकंप से प्रभावित कुल 56 जरूरतमंदों को चिकित्सा राहत केंद्र से चिकित्सा सुविधा प्रदान की गई। यह पहला अवसर था जब पूर्वोत्तर रेलवे द्वारा आपदा पीड़ितों के लिए जीरो वैल्यू

टिकट जारी किए गए। महाप्रबंधक महोदय की पहल पर किए गए इस कार्य की आम-जनमानस, मीडिया, स्वयंसेवी संगठनों एवं समाजसेवियों सभी द्वारा सराहना की गयी।

श्रीमती कुमकुम मिश्र की अध्यक्षता में पूर्वोत्तर रेलवे महिला कल्याण संगठन ने पहल करते हुए इस आपदा से प्रभावित लोगों के लिए जरूरत के सामानों से लदा एक ट्रक सहायता सामग्री भिजवायी। गोरखपुर स्टेशन पर आने वाले भूकंप पीड़ितों को उनके गंतव्य तक भेजने में पूर्वोत्तर रेलवे नागरिक सुरक्षा संगठन, पूर्वोत्तर रेलवे भारत स्काउट्स/गाइड्स, वाणिज्य विभाग, परिचालन विभाग, रेलवे सुरक्षा बल कर्मियों ने सराहनीय योगदान दिया।

इसप्रकार पूर्वोत्तर रेलवे ने आपदा पीड़ितों की सहायता में अपनी अग्रणी भूमिका का निर्वहन किया। ●

मुख्य जनसंपर्क अधिकारी
पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर
संपर्क: 9794840055

शब्द परिचय

दृष्टिकोण : वह विचार है जो किसी चीज को एक कोने से देखने पर बनता है।

परिप्रेक्ष्य : वह स्थिति है जिसमें कोई चीज समग्र रूप से देखी जाती है।

विवरण : किसी विषय के विविध पक्षों, अंगों और आधार तत्वों को प्रमुखता दी जाती है।

विवेचन : किसी विषय को समझाने, उसकी व्याख्या देने तथा गुण-दोषों पर प्रकाश डाला जाता है।

स्पष्टीकरण: किसी बात को स्पष्ट करना।

व्याख्या : किसी सूक्ष्म या गहरी बात को स्पष्ट किया जाता है।

स्पष्टीकरण कभी-कभी व्यक्तिपरक होता है, जबकि व्याख्या सदैव वस्तुपरक होती है।

चर्चा : किसी विषय पर होने वाली बातचीत है जिसमें उसके गुण-दोषों का उल्लेख हो सकता है।

परिचर्चा : अधिक व्यापक स्तर पर होने वाली चर्चा है, जो एक जगह से प्रारंभ होकर कई जगह पहुँच जाती है।

संशोधन : ऐसे किसी परिवर्तन को संशोधन कहा जाता है, जिससे मूल वस्तु की गुणवत्ता बढ़ जाए।

सुधार : सुधार में प्रायः बिगड़ी हुई स्थिति को ठीक करने का भाव व्यक्त होता है।

उदाहरण : किसी बात को समझाने या स्पष्ट करने के लिए अनुभव या कल्पना के आधार पर कोई तथ्य प्रस्तुत करना।

दृष्टान्त : किसी बात को प्रमाणित करने के लिए वैसी ही दूसरी बात की ओर संकेत करना, जो पहले मान्य और प्रमाणित हो।

सहायता : प्रायः एक पक्ष दूसरे पक्ष का कष्ट दूर करने, उसका काम बनाने में तत्पर रहता है।

सहयोग : अनेक पक्ष एक दूसरे के साथ मिल जुलकर काम करते हैं ताकि वे एक दूसरे का काम बनाने में सहायक सिद्ध हों।

आवश्यक : जिसके बगैर काम न चले।

अनिवार्य : जिससे बचना ही संभव न हो।

◆ व्यंग्य ◆
साँड़ बनिए मलाई खाइए
शिवेंद्र कुमार मिश्र

साँड़- साँड़ होता है। उसकी किसी अन्य पशु से तुलना नहीं की जा सकती। असीम ताकतवर और कहते हैं कि असीम काम शक्ति से संपन्न भी। वैसे शक्ति का पैमाना तो अष्टव है किंतु साँड़ की ताकत अष्टव से कमतर नहीं आँकी जा सकती। साँड़ को अगर ताकत के प्रतीक के रूप में नहीं रखा गया तो मात्र इसलिए कि साँड़ कोई अनुशासन नहीं मानता। किंतु जिसने ताकत को पहचान लिया और मान लिया तो बस उसकी किस्मत ही बदल गई।

अब देखिए न। देवाधिदेव, महादेव बम-बम भोले को। एक वही थे जो साँड़ की असीम ताकत और उसके गुणों को समझे। बस गए दौड़े-दौड़े और पकड़ लाए एक साँड़। करने लगे सवारी। अब यूँ समझो। उसी दिन से रेस-रेस पर जीतने लगे। पछाड़ दिया सबको। ब्रह्मा, विष्णु, इंद्र, अग्नि, वरुण। सब पीछे हट गए। शंकर थे या शिवशंकर कह लो। पर जैसे ही साँड़ का साथ मिला बन गए देवाधिदेव महादेव रूद्रावतार भगवान श्री शंकर। अरे, संस्कृत में ऐसे ही साँड़ को बलीबर्द थोड़े ही न कहते हैं। बलीबर्द अर्थात् (बली यासौ ईवर्दस्यच) साँड़-बैल।

अब कुछ दिमाग के कपाट खुले कि अब भी घामड़ के घामड़। हमारे शहर श्राहजहाँपुर के एक साहित्यकार थे महान कलमघिस्सू पर कोई लाभ नहीं। अचानक उन्हें साँड़ का साथ मिला हो गए वारे के न्यारे। उपन्यास में तो साँड़ केवल श्राहजहाँपुर के चौक में ही सब्जी और फलों के ठेलों पर मुँह मारता था। पर आजकल तो सुना है कि विष्टवविद्यालयों में दौड़ रहा है और लेखक के लिए तरह-तरह के फल और सब्जियाँ बटोर रहा है।

हिंदुओं में तो साँड़ सांस्कृतिक प्रतीक है। हमारे गाँवों में लोग अपने पूर्वजों की आत्मा को सुख और शान्ति पहुँचाने के लिए साँड़ छोड़ते हैं। इन साँड़ों के क्या ठाट हैं भाई। जिस खेत में देखी सुंदर हरियाली बस करने लगी जुगाली और बछिया हो या गाय। दौड़ा लिया। दबोच लिया। बूढ़ी हो या जवान.... हिंदू हो या मुसलमान। पकड़ लिया तो अपना काम छत्तीस करके ही माने। जो

खेत चरने पर इन्हें लठियाते हैं। वही गाय हरी करवाने को इन्हें मनाते हैं। इनके पीछे-पीछे अपनी गाय कुदाते हैं। ये भी अपने हल्के में कोई जाति-धर्म नहीं मानते। न खेत में मुँह मारने में न गायों को गाभिन करने में। निःस्वार्थ भाव से सेवा करने में विष्टवास करते हैं। आप इन्हें लठियाएँ भी तो भी प्रायः ये निकल लेने में ही भरोसा करते हैं। लेकिन अगर बिगड़ गए तो पीटने वाले को उसकी औकात दिखाने में भी पीछे नहीं हटते। इनकी इसी आदत के कायल होकर कई देश अपने यहाँ ऐसे खेलों का आयोजन करते हैं जहाँ मनुष्य साँड़ की गति और ताकत से मुकाबला करता है।

तो यूँ समझें कि त्रेता में विष्णु अवतार षोडशगुण संपन्न मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम को क्या मिला? कभी विष्टवामित्र जंगल ले गए तो कभी माँ-बाप ने वन भेज दिया स्वयं तो गए साथ ही बेचारी सीता और लक्ष्मण को भी लिवा गए। राज्य छिन गया। पत्नी छिन गई। वन-वन भटके। क्या बताएँ क्या-क्या न किया जैसे-तैसे रावण-रूवण को मार-मूर के अयोध्या आए। राजपाट संभाला तो गर्भवती सीता को वन भिजवा दिया। न राज्य का सुख, न पत्नी-बच्चों का सुख। मारे दुःख और श्रम के अंततः सरयू में डूबकर प्राण खोए। उधर अपने साँड़ महाराज और उनके कुनबे वाले। अरे! रावण और उसके वंशज। जब तक जिए मौजा ही मौजा। आकाश, पाताल, धरती, समुद्र सब जगह अपना ही राज्य। दनदनाते फिरे। कुबेर को धकिया दिया। देवों, कुबेरों, नागों को पीटा। जो सुंदर लगी उठा लाए। चाहे तो महल में रखा वरना अपना काम बनता भाड़ में जाए जनता क्या कहा। राम के हाथों सपरिवार कुल जाति सहित मारे गए। तो राम ही कौन सा बच गए महाराज। और राम न मारते तो अपने-आप मर जाते जो पैदा हुआ वह मरेगा तो है ही। इतना बड़ा राज्य। इतने शूर-वीर खानदानी। रावण के बाद आपस में भी लड़-झगड़ कर मर जाते जैसे द्वापर युग में श्रीकृष्ण महाराज का कुनबा लड़ मरा। फिर आज भी रामनवमी के पर्व पर कहीं किसी मंदिर में प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति, मुख्यमंत्री, उप राष्ट्रपति वगैरह-वगैरह को जुटते देखा। दशहरा पर रावण

पर जोर आजमाइष्ट करने सब चले आते हैं। वह बात अलग है कि इसी बहाने राम का भी तिलक-तुलक कर जाते हैं।

तो ऐसे साँड़ महाराजों से धरती अटी पड़ी है। ऐसे ही धरती के स्वर्ग कष्टमीर में इन साँड़ों ने धरती के स्वर्ग की ऐसी की तैसी कर दी। कष्टमीरी पंडितों को अपने सींगों से ठेल-ठेलकर ऐसा घाटी से भगाया कि आज वह राम-शिवदि देवताओं के भक्त मारे-मारे घूम रहे हैं। उधर सरकार रूपी उपासक इन साँड़ों को पुनर्वासित करने पर खून-पसीना एक किए हैं। और जो इन्हें अर्थात् साँड़ों को लठिआते-धकियाते छाहीद हो गए उनका क्या? अरे! सब उनका ही तो है। सरकार उन्हें ही तिलक-तुलक के इंतजाम में लगी है। मुख्य काम तो वही है। ये साँड़ों का पुनर्वास तो बस यँ ही। बस इससे निपटते ही उन तिलक-तुलक वाले छाहीदों की पहचान करना ही मुख्य काम है ताकि इन छाहीदों को पहचान कर सम्मानित किया जा सके। तो भइया। यह धरती इन साँड़ों से पीड़ित होकर शोभायमान है। इन्हें इस कलियुग में कोई आतंकवादी, नक्सली, अपराधी, हत्यारे या अपराधी कहा जाता है। शिव के साँड़ सतयुग में हिरण्यकशिपु राक्षसादि कहे गए तो त्रेता युग में रावण-कुंभकरण, मेघनाद नामादि से अवतरित भये। द्वापर में कौरव, जरासंध, शिशुपाल, कालयवन कहाये तो कलियुग में वही साँड़ नक्सली, आतंकी, अपराधी, ओसामा, आई.एस. आई.एस. आदि पञ्चक-पञ्चक नामों से पहचाने गए। कलियुग में तो रोज ये नाना रूप धारण कर मनमोहिनी मुद्रा से राजीव नयनों के समक्ष सोणी-सोणी गति से नर्तन

करते हैं और हठाते, मदनमोहन, राजीव नयन इन्हें स्मित हास्य से निहार कर भाव-विभोर होकर इनकी सोणी भाव-भंगिमा पर छाहीद हो जाने को मचल उठते हैं।

इस पुण्यभू भारत वसुधा के वासी असीम सौभाग्य छााली हैं कि उन पर कभी श्रीराम के राज्य की कष्टा रही तो कभी राधा-वल्लभ मदनमोहन उन पर बरसाने वाली कष्टा बरसाते रहे। कलियुग में उस असीम दयालु भक्त वत्सल ने इस पुण्यभू के प्राणियों पर ऐसी कष्टा की कि नेता-अफसर आदि नाना अवतारी रूप में प्रभु स्वयं अवतरित हुए। ये असीम वेदना, उठाकर जनसेवा में लगे रहे और फल-फूल, परसादी से ही जीवन यापन कर भक्तों के प्रेम से मुटाते रहे और साँड़ रूपी कारपोरेट, बिल्डर, गुंडा, मवाली, जनता रूपी चारागाह पर दनदनाते रहे। अक्सर नेता रूपी भगवान सभी को समान कष्टा बाँटते रहे। इस साँड़ कथा का यहीं पर अंत होता है। इस कथा को कलियुग में जो भक्त भक्तिभाव से भजते हैं वह इस धरा पर मक्खन-मलाई का रसास्वादन करते हैं। गोपियों की प्रेम रूपी रसगंगा में अवगाहन करते हैं और मष्ट्यु पष्ठचात् स्वयं देव उन्हें स्वर्ग लोक को विमान में बिठाकर ले जाते हैं। इस साँड़ कथा को मनोयोगपूर्वक गुणगान करिए और कलियुग में मक्खन-मलाई खाइए।

इति श्री साँड़ कथा समाप्तम्। ●

24, आशुतोष सिटी
पीलीभीत बाईपास रोड
बरेली-243001 (उ.प्र.)
संपर्क: 7351041061

छल्लेष अलंकार:

जहाँ काव्य में प्रयुक्त किसी एक शब्द के कई अर्थ निकले और चमत्कार पैदा करते हों वहाँ 'छल्लेष' अलंकार होता है। जैसे-

जो रहीम गति दीप की, कुल कपूत गति सोय। बारे उजियारो करे, बड़े अंधेरो होय॥

इस दोहे में 'बारे' और 'बड़े' ये दो-दो अर्थ वाले चमत्कारी शब्द का प्रयोग हुआ है, अतः यहाँ 'छल्लेष' अलंकार है।

कविवर रहीम जी कहते हैं कि जो हालत दीपक की होती है वही हालत एक कुलीन कपूत की होती है क्योंकि दीपक (बारे) जलाने पर प्रकाश करता है और बालक (बारे) बचपन में प्रकाश देता है, अच्छा लगता है। किंतु दीपक के (बड़े) बुझने पर अंधेरा हो जाता है ऐसे ही कपूत के बड़े होने पर खानदान में अंधेरा हो जाता है, बदनाम हो जाता है।

रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून। पानी गए न ऊबरे, मोती मानूस चून॥

यहाँ पानी का अर्थ है- आब, मान, जल।

◆ व्यंग्य ◆
उनका चाँद और मेरा चाँद
रण विजय सिंह

जिस दिन वाजपेयी जी अपने जीवन की हजारवीं पूर्णिमा का चाँद देख रहे थे, मेरे मित्र भानु जी, पाँच सौवें पूर्ण चंद्र का दर्शन चाह रहे थे। वाजपेयी जी सफल रहे, पर गोरखपुर के घने कोहरे ने भानु जी की आशा पर पानी फेर दिया। अब वे पाँच सौ एकवें पूर्ण चंद्र की प्रतीक्षा में हैं। पाँच सौ एक- अत्यंत शुभ संख्या है। अतः उनका यह पूर्ण चंद्र दर्शन अधिक शुभ होगा- ऐसा भानु जी का मानना है। वे कहते हैं कि यदि राष्ट्रपति जी से लगायत तमाम बड़ी हस्तियों का सहयोग न मिलता तो वाजपेयी जी हजारवें पूर्ण चंद्र के दर्शन नहीं कर पाते और उन्हीं की तरह अगले अर्थात् एक हजार एकवें पूर्ण चंद्र का इंतजार कर रहे होते।

भानु जी मुझसे पूर्ण चंद्र के दर्शन के लिए आग्रह करते हैं। जीवन के अब तक के पूर्ण चंद्रों का हिसाब रखने को भी कहते हैं। मेरे द्वारा व्यस्तता का बहाना बनाने पर सरल उपाय सुझाते हैं- भाभी जी, इष्ट-मित्र या वैयक्तिक सहायक से आप यह हिसाब रखवा सकते हैं।

पूर्ण चंद्र की गणना का उनका आग्रह काफी प्रबल है। मैं, भानु जी को निराशा नहीं करना चाहता। इसलिए शांत रहता हूँ। उन्हें कौन बताए कि मेरा चंद्र दर्शन प्रयास नहीं, संयोग से होता है। मैंने जीवन में पूर्णिमा से अधिक चतुर्थी का चंद्रमा देखा है। चतुर्थी के चंद्रमा के दर्शन से लोग बचते हैं। मैं भी बचना चाहता हूँ। गोस्वामी जी ने सलाह दी है- 'तजहु चौथ के चंद्र की नाई' -पर पता नहीं मेरे और चतुर्थी के चंद्रमा के बीच क्या संबंध है कि यदि वह निकलता है तो मुझे उसके दर्शन अवश्य हो जाते हैं। मेरा और चतुर्थी के चंद्रमा का वही संबंध है जो परीक्षक का उत्तर-पुस्तिका में गलती से।

चतुर्थी का चंद्रमा देखने के कई फायदे हैं। इससे आपको तमाम ऐसे कार्यों का श्रेय मिल जाता है जिन्हें कि आप जानते ही नहीं। इसका दर्शन श्रीकृष्ण ने किया था। सत्राजित की मष्ट्यु के बारे में उन्हें पता ही नहीं था,

फिर भी उन पर उनकी हत्या का आरोप लगा। सामान्य भाषा में इस प्रकार के श्रेय को कलंक कहते हैं। वैसे मैं इसे श्रेय कहता हूँ पर लोगों के लिए लिख रहा हूँ इसलिए अब कलंक ही लिखूँगा।

बात श्रीकृष्ण की चल रही थी। सत्राजित की हत्या के कलंक के निवारण के क्रम में ही श्रीकृष्ण को सत्यभामा और जामवंती नामक दो-दो पटरानियाँ भी मिल गई थीं। कलंक निवारण तो हुआ ही।

चतुर्थी के चंद्र दर्शन से मुझ पर भी कलंक लगते हैं। श्रीकृष्ण को एक बार लगा। मुझ पर बार-बार लगते हैं। उन्होंने एक बार देखा था। मैं दिखने की स्थिति होने पर हर माह देखता हूँ। उन्हें दोष निवारण का प्रयास करना पड़ा। मुझे इसकी आवश्यकता ही नहीं पड़ती। चतुर्थी के नये चंद्र दर्शन के बाद नये कलंक के साथ, लोग पुराने को भूल जाते हैं।

मेरे चंद्र दर्शन का इतिहास काफी पुराना है। शुरु में तो कलंक-निवारण का प्रयास नहीं किया। संभवतः श्रीकृष्ण के परिणाम से डरता था। उन्हें आठ पटरानियों से परेशानी नहीं थी पर मैं, एक से ही परेशान हूँ। दोष-निवारण के परिणाम के साथ दो के और आ जाने से स्थिति पूरी तरह बेकाबू हो जाएगी। अच्छा है कि हर महीने कैलेंडर के पन्ने की तरह मुझ पर लगा कलंक भी बदल जाता है। न बदलने की स्थिति में कुछ न कुछ करना ही पड़ता। परिणाम कुछ भी होता। दो नयी पटरानियों के मिलने के खतरे के बावजूद कलंक के निवारण हेतु प्रयास अवश्य करता।

हमेश्वा कोई न कोई कलंक लगे रहने से व्यक्ति सुखियों में बना रहता है। जब तक मेरा पुराना कलंक उबाऊ बनता है नया सामने आ जाता है। इनमें चतुर्थी के चंद्र दर्शन के कारण मेरे ऊपर लगे इराक पर अमेरिकी हमला, सोवियत संघ का विघटन, सुनामी, जम्मू-कश्मीर का भूकंप, चैपल-गांगुली विवाद आदि को प्रेरित करने जैसे कलंक प्रमुख हैं।

यह अतिशयोक्ति नहीं है। जिन कार्यों का मुझे

श्रेय दिया जाता है उनसे मेरा कुछ ऐसा ही संबंध होता है। मेरे मित्र लोग इस सबका श्रेय चतुर्थी-चंद्र-दर्शन को देते हैं। फल और बारंबारता को देखते हुए अब मैं इसका हिसाब रखना चाहता हूँ। इस कार्य में पत्नी, इष्ट-मित्र अथवा वैयक्तिक सहायक को लगाया जाना ठीक नहीं है। व्यक्ति को स्वावलंबी होना चाहिए। अतः मैं खुद हिसाब रखूँगा। इसके कुछ अन्य फायदे भी हैं- गिनती में इच्छित परिवर्तन किया जा सकता है। निन्यानबे पर सौ और नौ सौ नब्बे पर हजार तो उन्नीस सौ की संख्या होने पर दो हजार की गिनती पूरी होनी बतायी जा सकती है। दूसरे के हाथ में हिसाब होने से हेर-फेर सार्वजनिक हो सकती है। ब्लैकमेलिंग का खतरा भी हो सकता है। स्वयं हिसाब रखने से इस सबसे मुक्ति रहेगी।

अविजित जी का कहना है कि पूर्णिमा से अच्छा चतुर्थी का चंद्रमा है। इस हेतु उनके अकाट्य तर्क भी हैं- पूर्णमासी के चंद्रमा के कारण पृथ्वी के विक्षोभ का बढ़ना- एक वैज्ञानिक तथ्य है। समुद्री ज्वार की तीव्रता में वृद्धि- आँखन देखी है। चतुर्थी का चंद्रमा इसप्रकार के किसी विक्षोभ का कारण नहीं बनता है। हाँ, इसके दर्शन से अनोखी एवं अनहोनी घटनाओं के क्रियान्वयन के श्रेय का फल अवश्य मिलता है। पूर्ण चंद्र इतने लोग देखते हैं कि इसका फल छोटे-छोटे टुकड़ों में बँट जाता है। चतुर्थी के चंद्रमा के दर्शनार्थी सीमित हैं। लोग इसका निषेध चाहते हैं। इसलिए भरपूर फल प्राप्त होता है। श्रीकृष्ण जैसा तो नहीं, पर मेरे जैसा फल यदि प्राप्त करने की इच्छा हो तो इसके दर्शन अवश्य करें।

चतुर्थी के चंद्र दर्शन के लिए आपको प्रेरित करने के पीछे और भी अनेक कारण हैं। पूर्णिमा, महीने में एक किंतु चतुर्थी, दो बार आती है। यद्यपि विद्वानों का मानना है कि केवल शुक्ल पक्ष का चंद्रमा ही फलदायी होता है। पर चतुर्थी तो चतुर्थी है। गिनती में भी यह दूनी होती है। पूर्णमासी पक्ष के लोग जब पाँच सौ या हजार की संख्या पर होंगे चतुर्थी वाले हजार, दो हजार की संख्या पर पहुँचे रहेंगे। इधर वे ग्यारह सौवाँ चंद्रमा देखेंगे उधर मैं बाइस सौवाँ देखूँगा। वर्तमान औसत आयु को देखते हुए हर भारतीय डेढ़ हजारवाँ चौथ का चंद्रमा देख सकेगा। वैसे प्रथम पूज्य गणेश का जन्म दिन भी चतुर्थी को है। करवा-चौथ भी इसी दिन होती है। मैं इसी दिन

चंद्र-दर्शन करता हूँ। अतः आप भी चतुर्थी को चंद्र दर्शन अवश्य करें।

भारतीयों का दुर्भाग्य है कि काम वे करते हैं पर श्रेय कोई दूसरा ले जाता है। उड़ने वाले जहाज का फार्मुला वेदों में है। परमाणु-बम, महाभारत का ब्रह्मास्त्र है। दूरदर्शन के प्रथम जनक संजय थे। आकाशवाणी तो जन-जन में प्रचलित भारतीय विधा थी। प्राचीन ग्रंथों के अनुसार तब वह विश्वसनीय भी होती थी। सब कुछ हमने किया पर इन सारे कामों का श्रेय विदेशियों को मिला। अगर हमलोग चौथ का चंद्रमा देखना शुरू कर देते तो रोग मुक्ति वाली औषधियों का न सही परमाणु बमों, कलाष्ठिनकोवों आदि संहारकों के निर्माण-आविष्कार का श्रेय हमें अवश्य मिल गया होता।

इसमें मेरा भी फायदा है। यदि सभी लोग चतुर्थी का चंद्रमा देखेंगे तो मेरे ऊपर लगने वाले कलंकों में कमी आ जाएगी। आरोप सभी लोगों पर समान रूप से बँट जाएँगे। कोई सुनामी के लिए जिम्मेदार ठहराया जाएगा, तो कोई भूकंप के लिए। एक भीषण गर्मी के लिए, तो दूसरा भीषण सर्दी, तीसरा सूखा, चौथा बाढ़ और पाँचवें को ग्रीन हाउस इफेक्ट के लिए दोषी ठहराया जा सकेगा।

वैसे भी मेरा चतुर्थी का चंद्रमा, पूर्णिमा के चंद्रमा से अच्छा है। इसमें ग्रहण नहीं लगता है। पूर्णिमा के चंद्रमा को ग्रहण झेलना पड़ता है। धुंध के कारण मैं पिछले चतुर्थी का चाँद नहीं देख पाया इसलिए जीवन कुछ नीरस-सा चल रहा है। मुझे किसी बड़े काम का श्रेय नहीं मिल रहा है। प्रयास करके अगले चतुर्थी के चंद्रमा का दर्शन अवश्य करूँगा। हाँ, इस अवसर पर कोई समारोह या भोज नहीं होगा।

उनका केवल हजारवाँ चर्चित हुआ मेरा हर चाँद चर्चित होता है। वे प्रधानमंत्री थे। उनके साथ मीडिया है इसलिए उसकी चर्चा पूरे देश में होती है। मेरे चाँद की भी चर्चा मेरे सामर्थ्य के अनुरूप पूरे मुहल्ले में बनी रहती है। इसलिए उनका चाँद चाहे जिस तिथि वाला रहे मेरा तो चौथ वाला ही रहेगा। ●

भूतपूर्व मुख्य परिचालन प्रबंधक
पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर
संपर्क: 7839057367

◆ कविता ◆ आग से बचाव

ई. गोविंद प्रसाद शुक्ल 'धुनी'

आग है ऊर्जा, हमें यह ज्ञान है,
आग की ऊर्जा, हमें अनुमान है।
आग ने बदली हमारी सभ्यता,
आग है तो हममें, सबमें जान है॥

अग्नि की पूजा हजारों वर्ष से,
यज्ञ में भी अग्नि का स्थान है।
वेद की कहती ऋचाएँ हैं हमें,
अग्नि से ही देव-भोजन करे प्रस्थान है॥

अग्नि कण-कण में समाहित,
अग्नि ईश्वर साक्ष्य है।
वेद की आधार ब्राह्मण की कथा
ब्रह्मांड के विज्ञान का यह भाष्य है॥

अग्नि से रचना समूचे ऋषि का,
अग्नि ही आधार है ज्युँ वृष्टि का।
अग्नि अक्षर है, गहन तल ज्ञान का,
व्याकरण है अग्नि इस समष्टि का॥

अग्नि की पाके कष्टा जीवन सँवरता,
अग्नि शत्रु को देखकर ज्वाला उगलता।
धरा के भी गर्भ को है फाड़ कर-
ज्वालामुखी का रूप धर लावा है फलता॥
अग्नि है विद्युत, चपला, गगन में
अग्नि अस्त्रों में समाहित मिसाइल बन।
शत्रु के छक्के छुड़ाने है खड़ा-
अग्नि की छाया में उद्यत शक्ति तन॥

आइए! अब अग्नि के हम क्रोध बरजें,
अग्नि का प्रतिशोध युक्ति से भी सिरजें।
अग्नि से मांगे क्षमा हम श्रांति का
अग्नि के तांडव से बचने का अभी संकल्प धर लें॥
अग्नि से हम दूर रखें वस्तुओं को,
जो ज्वलन में योग का संयोग बनतीं।
पेट्रोलियम गैसों व तेलों के समीप,
कभी रखें ना कोई हो वस्तु जलती॥

यदि धूम्रपान करते दिखे कभी कोई
छोड़कर संकोच टोकें उसी क्षण।
कभी ना फेकें जली माचिस की तीली,
बीड़ी या सिगरेट टुकड़ा का लें प्रण॥
यदि कटिंग गैसों से या इलेक्ट्रोड से,
कर रहे हों पानी की बाल्टी लें।
बालू भरी हो बाल्टी भी साथ में,
कटिंग टुकड़ों को बुझाएँ बाल्टी में॥

सुलगता टुकड़ा या कोई वस्तु हो,
कभी छोड़ें ना, बिना पहले बुझाए।
खूब जाँचें, परखें, बुझाएँ अग्नि को
ध्यान खुद रखें और दूजे को सुझाएँ॥
बचाएँ, फैले न कोई तेल रिसता,
आग लगने का बनेगा साक्षी वह।
बिजली का स्विचबोर्ड ना हो असुरक्षित,
शार्ट-सर्किट से उगलता अग्नि दह॥

जेठ की तपती दुपहरी में है तप कर,
दग्धता कचरों की भी जाती है बढ़ती।
यदि मिले संबल हवा के झोंक का,
आग की लपटें हैं तब पुरजोर चलतीं॥
भयंकर उत्पात अग्नि का जंगलों में,
बिना सोचें फेकें बीड़ी के जलते अंश से
हम सभी हैं झेलते हैं आपदा बड़ी,
कुछ विपैले जंतुओं के दंष्ट्र से॥

आग अक्सर जब बदलते आपदा में,
फिर भी ना हम सीखते हैं अनुभवों से।
करते हैं हम पहल चर्चा के जभी,
आग से बचने के उनके उद्यमों से॥
फिर भी आदत छोड़ते हैं ना कोई
हानि होती रेल की राजस्व की।
चलो! बचने का है करते कुछ उपाय,
अग्नि से ना हानि हो सर्वस्व की॥

अग्निशामक यंत्र पानी के तालाब,
चुष्ट हो हरदम समय की है ये मांग।
दमकलों, पंपिंग सेटों व पाइपों से,
द्रुत गति से बढ़ चलें सोते से जाग॥
प्रशिक्षित हों, आपदा के प्रबंधनों में,
आगे बढ़कर बैठाएँ हम निबटने में।
'धुनी' अपने रक्त स्वेद को एक कर
अग्नि से बचने, बचाने को लगा है सुलटने में॥
आपका सहयोग है यह आपका ही काम है,
भारतीय रेल का आज यह पैगाम है।
सुरक्षित, संरक्षित हो यात्रा आम जन की
भारी यह दायित्व मेरे नाम है॥

सहा. मंडल यांत्रिक इंजी./पावर
पूर्वोत्तर रेलवे, छपरा जं.,
छपरा-841301
संपर्क: 9771443276

◆ कविताएँ ◆
अनिल कुमार दत्ता

परस्पर

समय के साथ
चलती है मेरी कविता
भागता-दौड़ता हूँ मैं भी
साथ-साथ
गिरते मूल्य की तरह
गिरते-मिटते जाते हैं
कविता से दूर
बहुमूल्य चिह्न भी
एक-एक कर मेरी जेब से,
अल्प विराम,
अर्द्ध विराम,
पूर्ण विराम
रह-रह चेताती है कविता
छल सकते हैं शब्द
खल सकते हैं अर्थ
पल सकते हैं भ्रम
कथ्य का विस्तार
भावों की भरमार
चाहो जो पढ़ना
बूझना, समझना
दौड़ना होगा तुम्हें भी
साथ-साथ कविता के
तय करने होंगे तुम्हें स्वयं ही
शब्दों के बीच
समस्त जरूरी चिह्न
खर्चने होंगे तुम्हें ही
संकट के इस दौर में
तुम्हारी जेब में अभी भी
कुछ चिह्न यदि छेष हैं
पूरी होगी अंततः
भाव-यात्रा

पूरी तरह पढ़ चुकी होगी
तब तक
मेरी कविता
तुम्हें भी....

अच्छा होना बहुत बुरा है
किंकर्तव्यविमूढ़-सा अनुभव
अपना-सा मुँह लिए खड़ा है
अच्छा होना बहुत बुरा है....

बगिया में चहुँओर सदा जो
विकसित करता रहा सुगंध
निष्ठा दिन ही निष्पक्ष निरंतर
बिना स्वार्थ और बिनु अनुबंध
काँटे अपनी जगह सुरक्षित
पुष्प किंतु असमय मरा है....

अच्छा होना बहुत बुरा है....

संत सरीखे कूप, सरोवर
पर हित जीवन जीते जाना
करते रहना सुधा समर्पित
गरल विसर्जित पीते जाना
कब सड़ती सागर की लहरें
जल तालाबों का ही सड़ा है....
अच्छा होना बहुत बुरा है....

अंततः

झूठ का विज्ञापन क्यों कर?
सत्य का सत्यापन क्यों कर?
अभी तो व्रत का अनुष्ठान था,
अभी-अभी उद्यापन क्यों कर?

कार्यालय अधीक्षक
विधि कार्यालय/कार्मिक
पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर
संपर्क: 9005092337

जिस हिंदी भाषा के खेत में भावों की ऐसी सुनहली फसल लहलहा रही है, वह भाषा भले ही कुछ दिन यों ही उपेक्षित पड़ी रहे, पर उसकी स्वाभाविक उर्वरता अक्षुण्ण रहेगी। वहाँ फिर हरीतिमा के सुदिन आएँगे और पौष मास में फिर नवान्न उत्सव आयोजित होगा।

विष्णुकवि रवींद्रनाथ ठाकुर

◆ कविताएँ ◆
यश्रवीर सिंह

भाव के तो लिए व्याकरण ही नहीं

देख कर के मुझे दूर से ही कहीं,
हिरनियों सा तुम्हें भागना आ गया।

जाँचना हर सतर प्यार अखबार का,
रात भर के लिए जागना आ गया।

चाँद उतरे यहाँ जो धरा पर कहीं,
ओट की है उसे अब जरूरत नहीं।

खिलखिला कर हँसे दूध सी जो कहीं,
चाँदनी को वसन की जरूरत नहीं।

धर्म को तो रहा उम्र भर सोचना,
रूप के तो लिए आवरण ही नहीं।

फूल की पाँखुरी से चुरा कर हवा,
ले गई गंध को चाह की राह में।

लो उधर बस गया खुशबुओं का नगर,
यह इधर बेखबर चाह की बाँह में।

पास में जो रहा, मन उसी का रहा,
दूर के देवता, कब भले से लगे।

जो समय-सिंधु की धार में बह गये,
डूबते से रसम कब गले से लगे।

रीतियों के लिए तो चलन चाहिए,
प्यार के तो लिए आचरण ही नहीं।

फरफरा पंख ज्यों खग उड़े व्योम में,
इस तरह से अधर कुछ खुले रह गये।

दूर जितना रहा हो सुहाना सफर,
शब्द के घोंसले तो यहीं रह गये।

इस तरह स्नेह से भर गया आज मन,
जाल सा विष्व भी न पराया रहा।

बंधनों में रहा मुक्त का द्वार भी,
दूर तन का किसी का न साया रहा।

हास के तो लिए कुछ रूदन चाहिए,
भाव के तो लिए व्याकरण ही नहीं।

आईना है कहीं दिल चिटक जायेगा

जुल्फ की सेज पर न बिछाया करो,
फूल की पाँखुरी गंध तन के लिए।

न नयन नीर भर-भर लुटाया करो,
मेघ के जब कलछा आचमन के लिए।

जब न माने नहीं मन लगन क्या करे,
रुष्ट हों देवता तो भजन क्या करे।

आमने-सामने तुम न आया करो,
आदमी है कहीं पग फिसल जायेगा।
आईना है कहीं....

रात को चाँदनी जब नहाने चली,
झील, निर्झर, सरोवर, जलधि, ताल में।

इस तरह गिर गई कि तड़पने लगी,
आ फँसीं ज्यों मछलियाँ कहीं जाल में।

सिंधु में रूप-यौवन समाये नहीं,
तुम रहो तो कोई पास आये नहीं।

प्यार की आग में न जलाया करो,
आदमी मोम का है पिघल जायेगा।
आईना है कहीं दिल चिटक जायेगा।

रूठो ना....

चट्टानी खामोशी तेरी टूटे ना टूटे,
एक हँसी का फव्वारा कि फूटे ना फूटे,
नील गगन सा फैले मेरी बाँहों में खो जा।
रूठो ना बातों में पाहन विंध्याचल हो जा।

.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....

संपर्क-09455239774

◆ कविताएँ ◆
सुजष्टा कुमार शर्मा

सोचने बैठूँ

सोचने बैठूँ!
वाकई कितना फिजूल है
और अलावा इसके
अर्थवत्ता कहीं है भी नहीं।

ये सोचना
सही अर्थ में एक काम है
दरअसल सोचना आसान नहीं।

सोच से
व्यर्थता के खर-पात हटाना
गंभीर, कठिन, बहुआयामी है
निष्कर्ष के फसल उपजाना
इतना भी सरल नहीं।

सोच
हमें कहीं नहीं ले जाती,
सोचने वाला
अपने मेंड़ के पास
कदम भर भी नहीं पहुँचता।

सोच की शुद्धता
वो चिह्न छोड़ती है
जिससे बुद्धि की उर्वरता बढ़े
मेधा नव सञ्चन गढ़े।

सोचने की व्यर्थता
सुधार रहा,
सोचता हूँ अब भी
हाँ, प्रक्रिया व्यवस्थित है
पुरानी व्यर्थता
सार्थकता हेतु खाद बनी,

एक लंबे वक्त बाद
ये खेत भी
मकान हो खंडहर हो जाएगा
पुराने सभी वैचारिक इमारतों-सा,

जो हावी रहे, युग की जमीन पर
ये भी भावी है
ष्ठाष्टवत नहीं।

समय के सापेक्ष है
सब-कुछ
सोच, समझ, सत्य।

कुछ तलाशते भीतर आ देखा

कुछ तलाशते भीतर आ देखा,
खनकते शब्दों के चील्हर
मुड़े पुराने संवादों के नोट संग
मन के गुल्लक में मिले।

संयुक्त गंध स्मृतियों की परिचित
कई हाथों से गुजरा स्पर्श-चित्त
स्वादहीन ये सिक्के, नोट
खोटे, फटे, अनचले।

कुछ, जब भी विनिमय हो जाता
स्मृतिनगर में यही काम आता
स्वर्ण सिक्कों सा ताम्र-पत्रों सा
संभाल-संभाल रखा संवाद, शब्द मढ़े।

नहीं मालूम गुल्लक के बाद
इनका करते हैं क्या?
विनियमित होता है कोई
महत्वपूर्ण, आवश्यक, निर्विकल्प।

सब खनखनाहट, गंध वगैरह
संभवतः नये रूप लें, नव अर्थ लें
किसी खास मकसद को पूर्णता दे चले
कुछ की तलाश को और भीतरता भरे।

अनुवादक, प्रधान कार्यालय
राजभाषा विभाग, दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे
बिलासपुर-492001 (छत्तीसगढ़)
संपर्क: 07869511716

◆ कविताएँ ◆

बाबूलाल शर्मा 'प्रेम' की कविताएँ

राष्ट्र यज्ञ हो रहा आज बेला आई बलिदान की

राष्ट्र-यज्ञ हो रहा आज, बेला आई बलिदान की,
जाग उठी लेकर अंगड़ाई धरती हिंदुस्तान की।
रण भेरी बज उठी, चल पड़ी बहादुरों की टोलियाँ,
गूँज उठी हैं दिशा-दिशा में जय भारत की बोलियाँ,
उमड़ चला पौरुष का पारावार न कोई रोकना,
बढ़ने वाले का उत्साह बढ़ाना है, मत टोकना।
चमक उठी कण-कण चिनारी आज आत्म-सम्मान की,
जाग उठी लेकर अंगड़ाई धरती हिंदुस्तान की।
गंगा-यमुना की माटी को, माटी कभी न मानना,
ब्रह्मपुत्र की घाटी को तुम, घाटी कभी न जानना,
अमर छाहीदों के माथे का चंदन इसकी धूल है,
मातृभूमि पर न्योछावर होते सब इसके फूल हैं।
तष्ठा-तष्ठा से आवाज यहाँ आती है अब अभियान की,
जाग उठी लेकर अंगड़ाई, धरती हिंदुस्तान की।
उठो हिमालय विंध्याचल की गूँज रही ललकार है,
भारत माता के गौरव से परिचित सब संसार है,
आज छात्र के लिए काल है बच्चा-बच्चा देश का,
उत्तर देना है दुष्टमन के अहंकार, आवेश का।
स्वतंत्रता की बलिवेदी पर, बाजी जीवन-प्राण की,
जाग उठी लेकर अंगड़ाई, धरती हिंदुस्तान की।

भारत माता

वन-उपवन अनुराग मंजरित
मधुमय छटा ललाम है।
छास्य-छयामला भारत जननी
तुझको कोटि प्रणाम है।

तेरा कण-कण पुण्य तीर्थ है
मधुर सुधा सम नीर है।
स्वर्ग सुखों को देने वाली
त्रिविध सुगंध-समीर है।

वसुंधरा धरती भू मधुरा
तेरे अनगिन नाम हैं।
छास्य-छयामला भारत जननी
तुझको कोटि प्रणाम है।

आलोकित है दसों दिशाएँ
तेरे सुयष्टा प्रकाशा से।
जग-उपवन की डाल-डाल
सुरभित तेरे मधुमास से।

नव प्रेरक आलोक पुंज-सी

तेरी छवि निष्काम है।

छास्य-छयामला भारत जननी

तुझको कोटि प्रणाम है।

वेद मंत्र-सी पावन तेरे

गीतों की है हर कड़ी।

लता-द्रुमों की छाँह सलोनी

चमक रही मोती जड़ी।

कोटि-कोटि जन-मन की ममता

चिर सुखदा अभिराम है।

छास्य-छयामला भारत जननी

तुझको कोटि प्रणाम है।

ग्राम आते-आते

सेमल पलाशा के फूलों से रंग गए विजन
कलियों के मुख पर यौवन की अरुणाई है,
महके सुगंध से धरा-गगन गलियाँ आँगन
मंजरियों से मह-मह महकी अमराई है।
आँखों की नींद उड़ाए कोयल की बानी
छल-छल कर छलके मौसम के मधुमय प्याले
श्रम की मुस्कानों से सजते खलिहान-खेत
फिर आए दिन आशाओं के उत्सव वाले
तन-मन में नई उमंगों की बाँसुरी बजी
गूँजती हवा में सपनों की छाहनाई है।
चाँदनी चैत की खोल रही सुधि की परतें
गीतों के स्वर बाँसों के झुरमुट में खोये,
अंबर से चुपके उतर घाट पर नदिया के
पूनम का चंदा रगड़-रगड़ कर मुँह धोये।
कोई संदेश कह के कानों में पुरवैया
जगमग हो उठीं घाटियाँ ताल-तराई है।
जैसे तुमने छोड़ा बीणा का तार मुखर
संध्या-वेला अर्चना आरती के नाते
झिलमिल कर के जल गये दीये विष्टवासों के
बज उठे ब्याह के ढोल ग्राम आते-आते।
दुधिया चाँदनी में फिर कलियाँ बेले की,
खिलते-खिलते ही लगे आज शरमाई है।
सेमल पलाशा के फूलों से रंग गये विजन
कलियों के मुख पर यौवन की अरुणाई है।

इंद्रपुरी, आलमबाग, मानस नगर

लखनऊ-226023

◆ कविताएँ ◆
छात्र किरण आर्य

ओ पिता

ओ पिता! तुम गीत हो घर के।
अनगिनत काम दफ्तर के।
छाँव में हम रह चुके यूँ ही।
धूप में तुम रोज जलते हो।
तुम हमें विश्वास देने को।
दूर कितनी दूर चलते हो।
ओ पिता! तुम दीप हो घर के।
और सूरज चाँद अंबर के।

बेटियाँ

आँसू की एक बूँद सी होती है बेटियाँ
स्पर्श खुरदुरा हो तो रोती हैं बेटियाँ,
रोष्ठान करेगा बेटा तो, बस एक ही कुल को
दो-दो कुलों की लाज ढोती हैं बेटियाँ।

जब चाँद रघुनंदन से रूठ गया

जब चाँद का धीरज छूट गया
वह रघुनंदन से रूठ गया।
बोला रात को आलोकित हम ही ने करा है,
स्वयं शिव ने हमें अपने सिर पे धरा है।
तुमने भी तो उपयोग किया हमारा है,
हमारी ही चाँदनी में सिया को निहारा है।
सीता के रूप को हम ही ने सँवारा है
चाँद के तुल्य उनका मुखड़ा निखारा है।
जिस वक्त याद में सीता की,
तुम चुपके-चुपके रोते थे,
उस वक्त तुम्हारे संग में बस,
हम ही जागते होते थे।
संजीवनी लाऊँगा
लखन को बचाऊँगा,
हनुमान ने तुम्हें कर दिया था आश्वस्त
मगर अपनी चाँदनी बिखरा कर
मार्ग मैंने ही किया था प्रशस्त
तुमने हनुमान को गले से लगाया
मगर हमारा कहीं नाम भी न आया।
रावण की मष्टि से मैं भी प्रसन्न था।

तुम्हारी विजय से प्रफुल्लित मन था।
मैंने भी आकाश से था पृथ्वी पर झाँका।
गगन के सितारों को करीने से टाँका।
सभी ने तुम्हारा विजयोत्सव मनाया।
सारे नगर को दुल्हन सा सजाया।
इस अवसर पर तुमने सभी को बुलाया।
बताओ मुझे फिर क्यों तुमने भुलाया।
क्यों तुमने अपना विजयोत्सव
अमावस्या की रात को मनाया?
अगर तुम अपना उत्सव किसी और दिन मानते
आधे-अधूरे ही सही हम भी शामिल हो जाते।
मुझे सताते हैं चिढ़ाते हैं लोग
आज भी दिवाली अमावस में ही मनाते हैं लोग।
तो राम ने कहा क्यों व्यर्थ मैं घबराता है?
जो कुछ खोता है वही तो पाता है।
जा तुझे अब लोग न सताएँगे
आज से सब तेरा मान ही बढ़ाएँगे
जो मुझे राम कहते थे वही
आज से 'रामचंद्र' कहकर बुलाएँगे।

बीबी हो तो ऐसी

बीमार अभियंता से उसकी बीबी बोली-
इस बार किसी जानवर के डाक्टर को दिखाओ।
तभी आप ठीक होंगे।
अभियंता: वो क्यों?
बीबी: रोज सुबह मुर्गे की तरह जल्दी उठ जाते हो,
घोड़े की तरह भाग कर आफिस चले जाते हो,
गधे की तरह दिन भर काम करते हो,
लोमड़ी की तरह इधर-उधर से खबरें बटोरते हो,
बंदर की तरह अधिकारी के इशारे पर नाचते हो,
घर आकर परिवार पर कुत्ते की तरह चिल्लाते हो,
और फिर भैंस की तरह खाकर सो जाते हो,
इंसानों का डाक्टर तुम्हें क्या खाक ठीक कर पाएगा?
तुम्हारा इलाज अब जानवरों का डाक्टर ही कर पाएगा।

वरिष्ठ अनुवादक
मंडल रेल प्रबंधक/राजभाषा
पूर्वोत्तर रेलवे, लखनऊ
संपर्क: 9794842009

◆ गज़लें ◆
ए.के.श्रीवास्तव

एक

रोया किये हम जिनके लिए
रात रात भरा।
कहने को कुछ न कह सके
मिली उनसे जब नजरा।
ये भूल थी, खता थी
अल्ला मेरे बता
क्या उनके मेरे प्यार में
बाकी कोई कसर।
इस गर्दिशो जूनू में
सूझे न कोई राह।
कर ली हैं आँखें बंद
बतला मुझे डगर।
बिजली सी कौंध उठी
फूटी सोच के हँसी।
मिल जाये कयामत में
खिले प्यार का कँवल।
हर फूल में समा जा,
कण-कण में जा बिखर जा।
वो देखें या न देखें
किया उनके ही नजरा।

दो

खतों के ढेर में खत तेरा ही न था।
खत डाले कई मैंने, तेरे याद के लिए
चुभती हुई शरारत, लबों पे ही तो था।
दौड़ मैंने जो लगाई, नजदीक आने को,
छुपे तुम गली में बगल में ही तो था।
पाने को खत के मोती,
मैंने जो डुबकी जो लगाया।
रूखे, सूखे, सादे, शब्द गैरों का था।

तीन

तेरी बेरुखी को, भुलाने के गम में
लिख-लिख के खत को जला डाला हमने।
सुना मन का आवेग, होता है भारी
परत-दर-परत में दबा डाला हमने।
बातें तो दिल की होती है, सनकी
खुद ही सुनी और भुला डाला हमने।
नहीं चैन दिन में, न रातों में नींद
उठा, रोया, सोया, बिता डाला हमने।
बचा जान अल्ला, औ अहले खुदा
रातों को जग के दुआ मांगा हमने।

सी.से.इंजी./समाडि/मुख्यालय

पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर

संपर्क: 9794846435

बहुत बड़ा है यह सागर का सूना
बहुत बड़ा यह ऊपर छाया औंधा खोखल
असमंजस के एक और दिन पर, ओ सूरज
क्यों, क्यों, क्यों यह तुम उग आए?

अज्ञेय/ सागर पर भोर

शोहरत की बुलंदी भी पलभर का तमाशा है
जिस डाल पे बैठे हो वो टूट भी सकती है
लोग टूट जाते हैं एक घर बनाने में
तुम तरस नहीं खाते बस्तियाँ जलाने में
दुष्टमनी जमकर करो लेकिन ये गुंजाइश रहे
जब कभी हम दोस्त हो जाए तो शर्मिंदा न हों।

बघ्नीर बद्र

◆ कविताएँ ◆
चंदेष्टवर प्रसाद शर्मा

कब आवोगे

दसो दिष्टा से पूछ रहा है कुछ तो बतलाओगे।
देख रहा है राह अहर्निष्टा बेटा कब आवोगे॥
बुढ़िया थकी-थकी रहती है खाँस-खाँस कर जीती,
चलने भर को खा लेती है जीने भर को पीती;
दीवाली के दीए रोए होली के रंग फीके,
कैसे-कैसे कटते हैं क्या हाल बतावे जी के;
चिट्ठी में लिख रहा तात कब बहू साथ लावोगे। 1

साहूकारों के कर्जे अब कैसे भला चुकायें,
हुआ बेचारा मारा-मारा कहाँ भला अब जाए;
चकाचौंध में भूला बेटा भूल गया माँ-बाप,
वह गुलछर्रे उड़ा रहा है ये सहते संताप;
धन-दौलत तो बहुत मगर माँ-बाप कहाँ पावोगे। 2
हाल-चाल की पाती भी नहीं भेज रहे हो अब तो,
बीवी की चंगुल से भला उबर पावोगे तब तो;
बंधक सारे खेत पड़े मजदूरी हुई सहारा,
जो मर्यादा में रहता वह बाप हुआ बेचारा;
कट कर रहने वाले एक दिन सबसे कट जावोगे। 3
ठाँव-ठाँव घर-घर जन-जन में यही तो चर्चे होते,
हुआ कमाऊ बेटा फिर माँ-बाप भला क्यों रोते;
लाड़-प्यार जो दिया आज 'परवाना' है मजबूर,
सब सपने नयनों के सम्मुख हो गए चकनाचूर;
आने पर यदि न पावो तो शायद पछताओगे। 4

अनुपात

मौसम ने भी पाला बदला कहीं कोई अनुपात नहीं।
अब मेरे आँगन में होती पहले सी बरसात नहीं॥
कोयल भी छाखों में दुबकी चुपके-चुपके रहती है,
छोड़ दिया गौरैये ने घर धूप सर्द वह सहती है;
भाग रहे पंछी यह कहते वैसे अब हालात नहीं।
अब मेरे आँगन में होती पहले सी बरसात नहीं॥ 1
सूरज लिए ताप का परचम हमें जलाने आता है,
चंदा का मनमानापन है उसे बहाने आता है;
पहले जैसी नभ में दिखती तारों की बारात नहीं।
अब मेरे आँगन में होती पहले सी बरसात नहीं॥ 2
पवनदेव ने शीतलता का मानो है नीलाम किया,
गंगा का जल दूषित होकर छवि अपनी बदनाम किया;
कल का पैदा हुआ है कहता शिष्ट हूँ मैं नवजात नहीं,
अब मेरे आँगन में होती पहले सी बरसात नहीं॥ 3
झुकने के डर से रसाल वर्षों से भला कहाँ फलता,
'परवाना' की हुई विदाई दीपक भला कहाँ जलता;
परिवर्तन भी हुआ कलंकित इसीलिए वो बात नहीं,
अब मेरे आँगन में होती पहले सी बरसात नहीं॥ 4

विज्ञान अध्यापक

श्री दुर्गा जी मा. वि. महुआडीह, लौंगरापुर
पोस्ट-नैकाछपरा

जिला- कुशीनगर 274406 (उ.प्र.)

संपर्क: 9451686518

एक ही तो असीम उल्लास,
विष्टव में पाता विविधाभास
तरल जलनिधि में हरित विलास
श्रान्त अंबर में नील-विकास।

कविवर सुमित्रानंदन पंत

श्रुरु हुआ, खत्म हुआ कई बार
निराकार सूने का घेरा, किंतु अखंड स्थित रहा
वह मेरा श्रुयाम श्रून्य
अनिमेष निहारता रहा सत्यों को एकटक।

गजानन माधव मुक्तिबोध

◆ कविताएँ ◆

दीनानाथ तिवारी

साहित्यिक बिंबों में पावस

एक

आषाढस्य प्रथम दिवसे
काली भूरी
पतंग उड़ाती हवा
'ब्यूटी पार्लर' में सँवर कर
निकली किसी आधुनिका सी
सँवरी प्रकृति
नीले जल में
इंद्रधनुष उरेहतीं
फिरोजी घाटियाँ
'क्षुधा पिपासा' निवारण हेतु
तपस्या रत बगुले
लरज गरज बैँड बजाते
काले बादल
सोंधी बास
बदलियाँ और
गीलापन
आज किसी दुष्यंत सा
मखमली पोष्ठाक पहने
पावस
किसी शकुंतला को
फुसलाने
उतर पड़ा है।

दो

लो
आ ही गई
किन्नर देष्टा की
नगर बधू सी इठलाती
छोख घटाओं के जाम
छलकाती
काली घटा
आँगन झरने लगा
बूँदों के घुँघरुओं की
आवाज

और
निखरने लगी
संगीत की
संगमरमरी
छटा।

तीन

धरती शंभार रही है
अपनी देह
इंद्रधनुषी रंगों के
ताजमहल
हरे रंग का साफा बाँधे सीवान
हरियाली से लिख रहा है
सुंदर जनवादी
गज़ल

चार

खुश मिज़ाजी पावस
लुटा रहा है
हर दिन
हरे सपने और
हरियाली का मुक्तदान
लगता है
कोई प्रेमचंद लिखेगा
फिर से
नया गोदान।

गीत (युग बोध)

सुबह-सुबह
छेड़ता है मलयानिल आवारा
काँटों सा चुभता स्पर्श
गुमसुम अकेली
कुछ सोचती ज्यों
सूने से खेतों में किरन परी
अधमरी रूग्ना सी
साँय-साँय करती है

फसलों की किन्नरी
छोक तप्त बिधवा से
हतप्रभ हैं
जंगल और वियावान
टीले पठार
खेतों में अन्न नहीं
अजगर से लेटे हैं
सुरसा से मुँह बाये
लंबी दरार।

भूख के थपेड़ों से
त्रस्त पड़े
'होरी और धनिया' हैं
रीत गए अधरों से हर्ष
सुबह सुबह....

चिड़ियों के
सरगम में बोलती है
पेटों में छिपी हुई भूख
फूलों में
गंध नहीं तिरती है
कलियों की हँसी
चली सूख
गो दोहन स्वर नहीं
सुनता आज घर घर में
बछड़ों संग खेलते
नहीं अब गोपाल
टुकुर-टुकुर, ताकते
पगुराते 'हीरा मोती'
सुस्त पड़ी गौयें
बेहाल

पर विहीन पंछी सा
मूर्छित है जनमानस
अंधकारमय लगते
मास
दिवस
वर्ष।

1/8 लेबर कालोनी
मोहदीपुर, गोरखपुर

◆ गतिविधियाँ ◆

मुख्यालय

मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री ओ. पी. अग्रवाल की अध्यक्षता में 10.07.15 को मुख्यालय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित की गई जिसमें रेलवे के विभिन्न विभागों, मंडलेतर इकाइयों, प्रशिक्षण केंद्रों एवं कारखानों में हिंदी कार्यों के प्रयोग-प्रसार की समीक्षा की गई। इस अवसर पर वर्ष 2014 का अंतर्विभागीय राजभाषा चल ट्राफी भंडार विभाग तथा निर्माण संगठन को प्रदान किया गया।

मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री ओ.पी.अग्रवाल की अध्यक्षता में 09.06.15 को मुख्यालय में क्षेत्रीय स्तर की विभिन्न प्रतियोगिताओं के 18 प्रतिभागियों को नकद पुरस्कार प्रदान किया। इस अवसर पर राजभाषा संपर्क अधिकारियों, विभागों/इकाइयों में कार्यरत हिंदी लिपिकों एवं राजभाषा के विभिन्न कार्यक्रमों से जुड़े 120 अधिकारियों/कर्मचारियों को भी पुरस्कृत किया गया। साथ ही इज्जतनगर मंडल को राजभाषा ट्राफी प्रदान की गई।

जून/15 में मुख्यालय के वाणिज्य, परिचालन, संरक्षा, यांत्रिक व सिगनल विभाग की समीक्षा बैठकें तथा निर्माण संगठन में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित की गई।

मुख्य सिगनल एवं दूरसंचार इंजीनियर श्री एच. के. अग्रवाल की अध्यक्षता में 19.06.15 को मुख्यालय के सिगनल विभाग में संत कबीरदास की जयंती, वेबसाइट के अनुरक्षण पर तकनीकी संगोष्ठी, समीक्षा बैठक एवं विशेष हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया।

संरक्षा विभाग द्वारा 16.05.15 को 'ट्रेनों में आग से रोकथाम' विषय पर संरक्षा संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें विभिन्न विभागों के विशेषज्ञों ने व्याख्यान दिया। इस अवसर पर मुख्यालय के प्रथम पंक्ति के अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

23.06.15 को मुख्यालय के इंजीनियरी विभाग में हिंदी कार्यशाला एवं पुरस्कार वितरण समारोह तथा यूनिकोड के बारे में जानकारी दी गई।

मई/2015 में पर्यवेक्षक प्रशिक्षण केंद्र/गोरखपुर में ब्रेक बाइंडिंग के कारण एवं निवारण, सेफ्टी डिवाइस इन लोकोमोटिव, एसपीएडी लोको स्टार्ट करना, ईपीडी(इंजन प्रोटेक्शन ड्राइव) रिसेट करना, पेनाल्टी रिकवर करना, सीबीसी कपलिंग, बाईपास करना, बीपीसी की वैधता विषयों पर तकनीकी संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

श्री वी. डुंगडुंग, वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी द्वारा 15.04.15 को मुविई कार्यालय, 22.05.15 को मुख्य संरक्षा अधिकारी कार्यालय एवं 29.05.15 को मुख्य चिकित्सा निदेशक कार्यालय का संयुक्त निरीक्षण किया गया।

श्री ध्रुव कुमार श्रीवास्तव, राजभाषा अधिकारी द्वारा 20.05.15 को प्रमुख मुख्य इंजीनियर एवं मुख्य यांत्रिक इंजीनियर कार्यालय का संयुक्त निरीक्षण किया गया।

इज्जतनगर

12.05.15 को श्री चंद्रमोहन जिंदल, मंडल रेल प्रबंधक की अध्यक्षता में मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन किया गया जिसमें मंडल की विभिन्न शाखाओं में राजभाषा हिंदी के प्रयोग-प्रसार की समीक्षा की गई। इस अवसर पर 'आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी' पर विशेष विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें बरेली कालेज, बरेली के हिंदी विभागाध्यक्ष डा. श्याम पाल मौर्य ने द्विवेदी जी के व्यक्तित्व एवं कक्षित्व पर विस्तृत प्रकाश डाला।

यांत्रिक कारखाना, इज्जतनगर में 10.04.15 को साहित्यकार महापंडित राहुल सांकृत्यायन की जयंती मनाई गई। इस अवसर पर बरेली कालेज, बरेली के हिंदी विभाग के प्रोफेसर डा. राहुल अवस्थी ने राहुल सांकृत्यायन के व्यक्तित्व व कक्षित्व पर प्रकाश डाला। साथ ही 24.04.15 को कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें बरेली जनपद के सुप्रसिद्ध कवियों ने काव्य पाठ किया।

मई/15 में लालकुआ स्टेशन पर हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया जिसमें कर्मचारियों को राजभाषा अधिनियम की धारा 3 (3) की विस्तृत जानकारी दी गई। इसके अतिरिक्त डीजल लॉबी, कासगंज एवं बरेली सिटी में एसपीएडी तथा फायर फाइटिंग पर कर्मचारियों को प्रशिक्षित किया गया। इसके अतिरिक्त 02.06.15 को डीजल छेड, इज्जतनगर, 11.06.15 को काठगोदाम, 15.06.15 को पीलीभीत तथा 19.06.15 को लखीमपुर स्टेशनों पर हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया।

14.05.15 को लालकुआ, 19.05.15 को इज्जतनगर, 02.06.15 को डीजल छेड/इज्जतनगर, 11.06.15 को काठगोदाम, 15.06.15 को पीलीभीत व बदायूँ स्टेशनों की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का आयोजन किया गया।

मंडल रेल प्रबंधक श्री चंद्र मोहन जिंदल ने 04.04.15 को काशीपुर, 07.04.15 को हाथरस सिटी व मथुरा छावनी, 08.04.15 को मथुरा छावनी-कासगंज खंड, 17.04.15 को पीलीभीत-पूरनपुर खंड, 02.05.15 को रानीखेत, कौसानी के इंडियन पोस्ट, 2/3/4.05.15 को काठगोदाम स्टेशन, हाली डे होम नैनीताल एवं रानीखेत, 19.05.15 को लालकुआ व 29.05.15 को कासगंज स्टेशनों का निरीक्षण किया। उन्होंने सभी निरीक्षण के लिए निर्धारित चेक लिस्ट पर राजभाषा के प्रयोग-प्रसार की भी जाँच की।

अपर मंडल रेल प्रबंधक एवं अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री संजीव नंदन ने 01.04.15 को काठगोदाम, 25.04.15 को लालकुआ, 01.05.15 को भोजीपुरा-देवरनिया के मध्य, 07.05.15 को लालकुआ व काठगोदाम के रनिंग रूम, 08.05.15 को टनकपुर स्टेशन, 20.05.15 को

इज्जतनगर-लालकुआ खंड, 21.05.15 को इज्जतनगर-भोजीपुरा खंड व 26.05.15 को सीबीगंज में डेमू श्रेड के शिलान्यास साइट का निरीक्षण किया। उक्त निरीक्षणों के दौरान निर्धारित चेक लिस्ट पर हिंदी प्रयोग की जाँच की एवं उक्त निरीक्षणों में हिंदी पैरा को भी सम्मिलित किया।

राजभाषा अधिकारी श्री राजेंद्र कुमार द्वारा 14.05.15 को लालकुआ स्थित विभिन्न कार्यालयों का गहन निरीक्षण किया गया।

लखनऊ

22.05.15 को लखनऊ मंडल में श्री अनूप कुमार मंडल रेल प्रबंधक की अध्यक्षता में मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन किया गया जिसमें मंडल की विभिन्न शाखाओं में राजभाषा हिंदी के प्रयोग-प्रसार की समीक्षा की गई।

23.04.15 को लखनऊ मंडल द्वारा मनोरंजन संस्थान, गोंडा में जी.पी.श्रीवास्तव उर्फ गंगा बाबू की जयंती का आयोजन किया गया। इस अवसर पर एल.बी.एस. महाविद्यालय, गोंडा के पूर्व हिंदी विभागाध्यक्ष डा. सूर्यपाल सिंह ने जी.पी.श्रीवास्तव उर्फ गंगा बाबू के व्यक्तित्व व कर्तित्व पर विस्तार से प्रकाश डाला। साथ ही हास्य एवं व्यंग्य कवि सम्मेलन का भी आयोजन किया गया।

15.05.15 को लखनऊ मंडल के कानपुर अनवरगंज स्टेशन पर आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की जयंती का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में सरस्वती ज्ञान मंदिर इंटर कालेज, कानपुर अनवरगंज के प्रधानाचार्य प्रो. रमाकांत शुक्ल ने द्विवेदी जी के व्यक्तित्व व कर्तित्व पर विस्तार से प्रकाश डाला। इसी अवसर पर 'मधुमेह-कारण एवं बचाव' विषय पर एक तकनीकी संगोष्ठी का भी आयोजन किया गया जिसमें डा. रमेश चंद्र, वरि. मंडल चिकित्सा अधिकारी, कानपुर अनवरगंज ने मधुमेह रोग के बारे में विस्तार से लोगों को जानकारी दी।

मई/15 माह में कानपुर अनवरगंज स्टेशन पर कर्मचारियों के लाभार्थ हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग बढ़ाने के लिए प्रेरित किया गया।

18.06.15 को मैलानी स्टेशन पर तकनीकी संगोष्ठी व कार्यशाला का आयोजन किया जिसमें श्री बी. एन. पांडेय, सहायक मंडल इंजीनियर/मैलानी ने 'रेलपथ अनुरक्षण' विषय पर व्याख्यान दिया।

अप्रैल/15 में डीजल श्रेड, गोंडा एवं बहराइच स्टेशन पर हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें राजभाषा नीति एवं पुरस्कार योजनाओं के विषय में जानकारी दी गई।

अपर मंडल रेल प्रबंधक एवं उपमुराधि श्री एस.के.सपरा ने 06.05.15 को सीतापुर स्थित हिंदी ग्रंथालय, 11.05.15 को यांत्रिक समाधि कार्यालय एवं 27.05.15 को यांत्रिक/ओ. एंड एफ. कार्यालय का संयुक्त निरीक्षण किया।

राजभाषा अधिकारी श्री शैलेष्ठा कुमार मिश्र द्वारा 10.04.15 को बादशाहनगर हिंदी ग्रंथालय, 17.04.15 को सीतापुर स्थित स्टेथी कार्यालय, 18.04.15 को सहा. मंडल इंजी/पश्चिम व सीसेई/रेलपथ/गो.प., 24.04.15 को बहराइच स्टेशन स्थित सहा. मंडल इंजी. कार्यालय, 23.04.15 को डीजल श्रेड, गोंडा, 24.04.15 को गोंडा हिंदी ग्रंथालय, 26.04.14 को कानपुर अनवरगंज स्टेशन स्थित कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग-प्रसार संबंधी कार्यों का गहन निरीक्षण किया गया।

'लखनऊ दर्पण' त्रैमासिक बुलेटिन के अंक-16 (जनवरी-मार्च/15) का प्रकाशन किया गया।

वाराणसी

मंडल रेल प्रबंधक श्री एस. के. कृष्णप की अध्यक्षता में 24.06.15 को मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न विभागों तथा प्रशिक्षण केंद्र में हिंदी कार्यों के प्रयोग-प्रसार की प्रगति की समीक्षा की गई।

मंडल रेल प्रबंधक श्री श्री एस. के. कृष्णप की अध्यक्षता में 20.05.15 को मंडल कार्यालय में 'सिगनल प्रणाली एवं रेल परिचालन' विषय पर तकनीकी संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर वर्ष 2014-15 में हिंदी में सर्वाधिक कार्य करने वाले 55 कर्मचारियों को पुरस्कार भी दिया गया।

10.04.15 को वाराणसी सिटी, 17.04.15 को मऊ जं.स्टेशन, 27.04.15 को मंडुवाडीह स्टेशन एवं 22.04.15 तथा 29.05.15 को मंडल प्रशिक्षण केंद्र, मंडुवाडीह में 'राजभाषा नीति एवं पुरस्कार योजनाओं' विषय पर हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। इसके अतिरिक्त 08.06.15 को गोरखपुर पूर्व, 18.06.15 को मंडल प्रशिक्षण केंद्र, मंडुवाडीह, 20.06.15 को देवरिया सदर, 26.06.15 को कप्तानगंज तथा 29.06.15 को सीवान जं. स्टेशन पर हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया।

10.04.15 को वाराणसी सिटी, 17.04.15 को मऊ जं. 23.04.15 को गाजीपुर, 27.04.15 को मंडुवाडीह, 28.04.15 को आजमगढ़, 05.05.15 को बलिया, 15.05.15 को भटनी, 27.05.15 को छपरा, 29.05.15 को थावे जं. एवं 29.05.15 को इलाहाबाद सिटी स्टेशनों की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का आयोजन किया गया।

श्री संतोष शुक्ल, अपर मंडल रेल प्रबंधक एवं अपर मुराधि द्वारा 10.04.15 को मंडल चिकित्सालय एवं 24.05.15 को वाराणसी स्थित कैंसर रिसर्च इंस्टीट्यूट में राजभाषा हिंदी के प्रयोग-प्रसार संबंधी कार्यों का संयुक्त निरीक्षण किया गया।

राजभाषा अधिकारी श्री संजय सिंह द्वारा 12.04.15 को इंदारा जं. एवं 28.05.15 को सलेमपुर जं. स्टेशन कार्यालय में राजभाषा हिंदी के प्रयोग-प्रसार संबंधी कार्यों का निरीक्षण किया गया।



Awards 2015

(A Shailaja Nair Foundation Initiative)

Certificate of Merit

awarded to

RAIL RASHMI

of

NORTH EASTERN RAILWAY

Powered by:



Initiative of:



Pratap Nair

Dr. Chandraprakash Dwivedi
Head of Jury

Pratap Nair - Chairman
Shailaja Nair Foundation

रेल कार्यालयों में राजभाषा निरीक्षण के लिए चेक लिस्ट
CHECK LIST FOR RAJBHASHA INSPECTION IN RAILWAY OFFICES

1. निरीक्षण करने वाले अधिकारी का नाम / Name of the Inspecting Officer :
2. पदनाम / Designation :
3. निरीक्षण की तारीख / Date of Inspection :
4. निरीक्षित कार्यालय का नाम और पता / Inspected Office :
5. द्विभाषी नाम/पदनाम बैज / Name/Designation Badges : हाँ / नहीं.
6. द्विभाषी नक्शे /आरेख आदि / Bilingual Maps/ Drawings etc- :
7. रजिस्टर/डायरियों में हिंदी में प्रविष्टियाँ / Entries in : हाँ / नहीं.
Hindi in Registers / Diaries :
8. नाम बोर्ड / सूचना बोर्ड द्विभाषी / त्रिभाषी / Whether हाँ / नहीं.
name boards / information boards are bilingual / trilingual-
9. सविदा और करार हिंदी-अंग्रेजी में जारी करना / Issuing Contracts :
and Agreements both in Hindi&English-
10. क/ख क्षेत्रों के साथ हिंदी में पत्राचार / Correspondence in Hindi : हाँ / नहीं.
with A/ B regions-
11. द्विभाषी रबड़ की मोहरें / सीलें / Bilingual Rubber stamps / seals- हाँ / नहीं.
12. कार्यालय आदेश /परिपत्र / आरक्षण चार्ट द्विभाषी रूप में / Office : हाँ / नहीं.
Orders / Circulars / Reservation Charts issued in bilingual form-
13. द्विभाषी कंप्यूटर की व्यवस्था / Provision of bilingual computers- हाँ /नहीं.
14. हिंदी पुस्तकालय में वाचनालय की अलग से व्यवस्था / Provision of हाँ /नहीं.
separate Reading Room facility in Hindi libraries-
15. विभागीय बैठकों की कार्यसूची/कार्यवृत्ति द्विभाषी रूप में / Agenda/ : हाँ / नहीं.
Minutes of Departmental meetings in bilingual form-
16. विवरण/ Statements : हाँ / नहीं.
17. रेलवे बुकिंग की मनी रसीद / Money receipts of Railway Booking:
18. अन्य कोई मद / Any other item- :

(निरीक्षण करने वाले अधिकारी के हस्ताक्षर)
Signature of the Inspecting Officer

पूर्वोत्तर रेलवे पर राजभाषा संबंधी गतिविधियों का दिन-प्रतिदिन का अपडेट
सोशल मीडिया फेसबुक <http://www.facebook.com/rajbhasha.ner>
पर आप देख सकते हैं।



12.05.15 को इन्टरनेट मंडल राजभाषा कार्यन्वयन समिति की बैठक को संबोधित करते श्री चंद्र मोहन जितल, मीर साह में श्री संजीव नंदन, अमरेंद्र व अरुण मुराधि एवं श्री राजेंद्र कुमार, राधि



22.05.15 को इन्टरनेट मंडल 'राजभाषा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता' में प्रथम स्थान प्राप्त टीम को पुरस्कार प्रदान करते हुए श्री संजीव नंदन, अमरेंद्र एवं अरुण मुराधि



22.05.15 को लखनऊ मंडल राजभाषा कार्यन्वयन समिति की बैठक को संबोधित करते श्री अनूप कुमार, मीर साह में डा. राजीव कपूर, मुख्य शिक्षिका अधी, वादनाहनगर एवं श्री शैलेन कुमार मिश्र, राधि



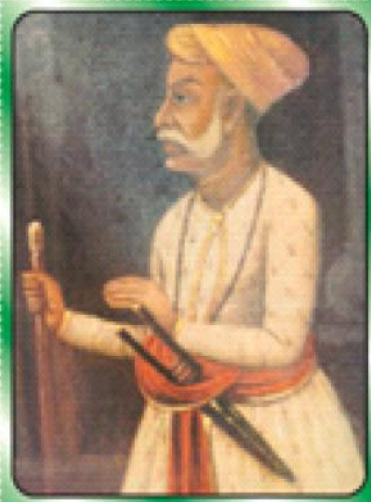
16.06.15 को लखनऊ नगर राजभाषा कार्यन्वयन समिति कार्यलय-3 की बैठक में भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के निदेशक श्री ओ. के. मिश्रा से शीलप ग्रहण करते श्री एस. के. सपरा, अमरेंद्र व अरुण मुराधि साथ में श्री शैलेन कुमार मिश्र, राधि



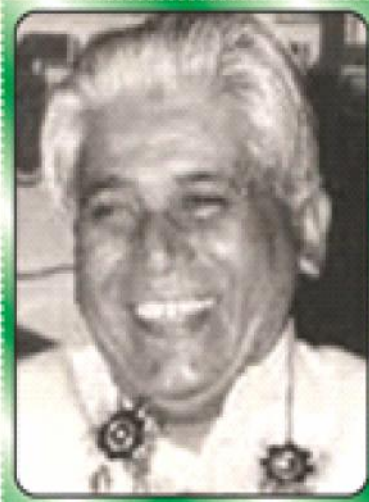
24.06.15 को बाराणसी मंडल राजभाषा कार्यन्वयन समिति की बैठक को संबोधित करते श्री एस. के. कश्यप, मीर साह में श्री संतोष शुक्ल, अमरेंद्र व अरुण मुराधि एवं श्री संजय कुमार सिंह, राधि



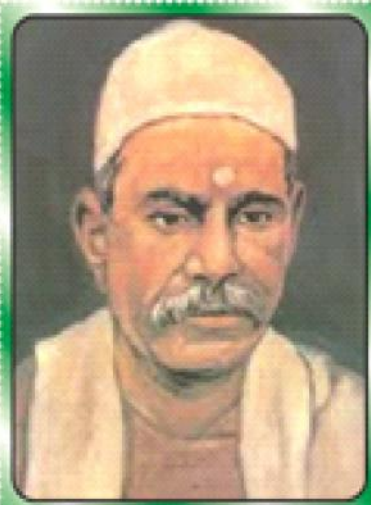
20.05.15 को वीरगढ़ मंडल विपिन एवं दूरसंचार इंजीनियर श्री मल्लवेंद्र सिंह की पुस्तक का विमोचन करते मंडल रेल प्रबंधक श्री एस. के. कश्यप व अन्य अधिकारियों



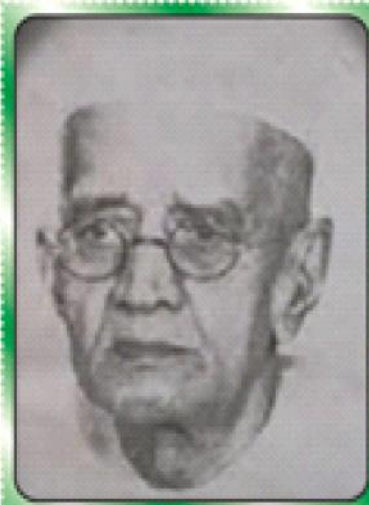
केशव दास
1885 ई.-1917 ई.
औरंगा (म.प्र.)



शिवमंगल सिंह सुमन
05.08.1915-27.11.2002
उन्नाव (उ.प्र.)



कालकृष्ण भट्ट
03.06.1844-20.07.1914
प्रयाग (इलाहाबाद) (उ.प्र.)



बाबूराव विष्णु फराहकर
06.11.1883-12.01.1955
कराची (बाराकली) (उ.प्र.)

श्री ओ. पी. अग्रवाल, मुख्य राजभाषा अधिकारी, पूर्वोत्तर रेलवे द्वारा प्रकाशित एवं
श्री नानी चुंदूरी, वरि. प्रबंधक, मुद्रण एवं लेखन सामग्री, पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर द्वारा मुद्रित